सीआरपीएफ समाचार

वर्ष 66 अंक 6 जुलाई–अगस्त, 2020

राजभाषा विशेषांक

दिनांक 12 जुलाई 2020 को केरिपुबल अकादमी, गुरूग्राम में आयोजित महा वृक्षारोपण अभियान के अवसर पर पधारे माननीय गृह मंत्री जी को तुलसी का पौधा भेंट करते हुए बल के महानिदेशक

दिनांक 27 जुलाई 2020 को बल के 82वें स्थापना दिवस के अवसर पर मुख्य अतिथि माननीय गृह राज्य मंत्री श्री नित्यानन्द राय जी को स्मृति चिन्ह भेंट करते बल के महानिदेशक

मुख्य संरक्षक:
डॉ. ए.पी. माहेश्वरी, भा.पु.से. महानिदेशक
संपादकीय सलाहकार मण्डल

अध्यक्ष:
श्री अंशुमान यादव, भा.पु.से.
महानिरीक्षक (आसूचना)

सदस्य: श्री एम. धिनाकरण, उप महानिरीक्षक
श्री सुधांशु सिंह, उप महानिरीक्षक
श्री राजकुमार, कमाण्डेन्ट
श्री समीर कुमार श्रीवास्तव, कमाण्डेन्ट
श्री पाल सिंह शिवाल, द्वि.क.अ.

मुख्य संपादक :
श्री प्रिंस भारद्वाज, सहा. कमा.
(जन संपर्क अधिकारी)

संपादक :
अरविन्द कुमार सिंह (निरीक्षक/हिन्दी अनुवादक)

संपादकीय सहायता :
जितेन्द्र कुमार (उ.नि./आशुलिपिक)
राजेश कुमार (स.उ.नि./मं.)

चित्र:
जन संपर्क फोटो सेल, महानिदेशालय
और सी.आर.पी.एफ. बटालियनें

संपादकीय कार्यालय:
महानिदेशालय, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल,
ब्लाक–1, केन्द्रीय कार्यालय परिसर,
लोधी रोड, नई दिल्ली–110003
दूरभाष: 24360649

महानिदेशक सी.आर.पी.एफ. की ओर से
मुद्रित और प्रकाशित:
अंकोर पब्लिशर्स प्रा.लि., बी–66, सेक्टर 6, नोएडा
दूरभाष: 9910161199, 9871456571

आवरण चित्र: महा वृक्षारोपण अभियान के अवसर पर गृह मंत्री श्री अमित शाह द्वारा केरिपुबल, गुरूग्राम स्थित 'शौर्य वन' में पौधारोपण हेतु बल के महानिदेशक व अधिकारीगण।

इस अंक में

पृष्ठ संख्या

1. महानिदेशक का राजभाषा संदेश 2
2. केन्द्रीय सशस्त्र पुलिस बलों द्वारा महा वृक्षारोपण अभियान 3
3. के.रि.पु. बल ने मनाया 82वाँ स्थापना दिवस 9
4. दिव्यांग शूरवीरों की देखभाल 14
5. केरिपुबल ने अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान (एम्स) दिल्ली के अंगदान अभियान में हाथ बढ़ाया 15
6. केरिपुबल 55 वीरता पदकों से सम्मानित 16
7. केरिपुबल ने शूरवीरों की वीरता एवं उनके बलिदान को याद किया 23
8. केरिपुबल ने मनाया राष्ट्रीय खेल दिवस 25
9. गंगबल यात्रा 27
10. वृक्षारोपण अभियान-2020 29
11. भाषा पर अधिकार के लिए शब्दों के मूल को समझना जरूरी है 34
12. देश की एकता और अखण्डता में केरिपुबल का योगदान एवं चुनौतियां 37
13. हिंदी भाषा की वर्तमान स्थिति 41
14. केरिपुबल में राजभाषा संवर्ग का उद्भव एवं विकास 42
15. अमर शहीद अरविन्द तिवारी 'शौर्य चक्र' के पिता द्वारा अधीनस्थ अधिकारी मेस का शुभारम्भ 43
16. एक बार फिर चर्चा में 'गमछा' 44
17. हमारी 'हिन्दी' 45
18. सी.आर.पी.एफ. 45
19. बाल वृक्ष 46
20. मातृ भाषा 47
21. जिन्दगी की सच्चाई 48
22. मेरा देश प्रेम 48
23. पापा पापा छोड़ दो पीना शराब 49
24. महानिदेशालय के कार्यक्रम 50
25. विविध कार्यक्रम 52
26. उपलब्धियाँ 54
27. शहीदों को नमन/प्रतिनियुक्ति/सेवानिवृत्ति 59
28. स्थानांतरण 60
29. महानिदेशक की डिस्क एवं प्रशंसा पत्र 61

सी.आर.पी.एफ. समाचार एक द्विमासिक पत्रिका है। इसमें प्रकाशित किये जाने वाले विचार लेखकों के व्यक्तिगत विचार हैं। विभाग की नीति से इसका कोई सम्बन्ध नहीं है।
-मुख्य संपादक

महानिदेशक का राजभाषा संदेश

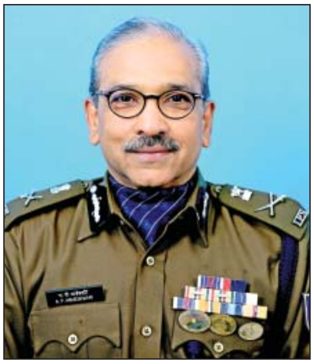

हिंदी दिवस के अवसर पर आप सभी को मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ ।

हम जानते हैं कि 14 सितम्बर 1949 को संविधान सभा द्वारा हिंदी को भारत की राजभाषा के रूप में अंगीकार किया गया था। इसका आधार यह था कि हिंदी ही भारत की बहुसंख्यक जनता की संपर्क भाषा थी। हिंदी के महत्व को बढ़ावा देने और इसके प्रचार-प्रसार के लिए राष्ट्रभाषा प्रचार समिति के अनुरोध पर 1953 से प्रतिवर्ष 14 सितंबर को हिंदी दिवस के रूप में मनाया जाता है।

संविधान के अनुच्छेद 343 में यह प्रावधान किया गया कि देवनागरी लिपि में लिखी हिंदी भारत संघ की राजभाषा होगी। संविधान के अनुच्छेद 351 के अनुसार केंद्र सरकार का यह दायित्व है कि वह हिंदी का व्यापक प्रचार- प्रसार करे जिससे हिंदी देश की सामासिक संस्कृति की अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम बन सके।

विश्व में तेजी से बदलते आर्थिक, सामाजिक व सांस्कृतिक परिवेश में आज हिंदी की स्थिति काफी बेहतर है। आज संयुक्त राष्ट्र जैसी संस्थाओं में भी हिंदी की गूँज सुनाई देने लगी है। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में विश्व के अनेक देशों में विश्वविद्यालय स्तर पर हिंदी पढ़ाई जाने लगी है और यह विश्व पटल पर वैश्विक भाषा के रूप में तेजी से उभर रही है। भारत एक सौ बाईस भाषाओं और सोलह सौ बोलियों वाला एक विशालतम देश है। संविधान की आठवीं अनुसूची में संस्कृत के अतिरिक्त 21 भारतीय भाषाएं शामिल हैं और उन भाषाओं को अनुसूचित भाषाओं का दर्जा प्राप्त है। हिंदी इन सभी भाषाओं में प्रमुख भाषा है। भारत में हिंदी ही वह भाषा है जो कश्मीर से कन्याकुमारी तक और राजस्थान से लेकर अरूणाचल प्रदेश तक समान रूप से बोली व समझी जाती है। हिंदी अब बोलचाल और साहित्य की भाषा तक ही सीमित नहीं है, बल्कि जनसंचार के विविध माध्यमों में इसका प्रयोग बहुतायत से बढ़ गया है। सूचना प्रौद्योगिकी के इस युग में विश्व की अन्य भाषाओं के साथ हिंदी कंधे से कंधा मिला कर चल रही है। आज कामकाज के बुनियादी कम्प्यूटरीकरण और प्रोग्रामिंग से लेकर इंटरनेट की प्राय: सभी गतिविधियों तक हिंदी की पैठ बन चुकी है। सूचना एवं संचार माध्यमों में हिंदी का प्रयोग बहुत ही सहजता एवं प्रचुरता से होने लगा है। हिंदी का समस्त साहित्य अब न केवल कम्प्यूटरों बल्कि स्मार्ट फोन पर भी सुलभ है। इसके अलावा इलेक्ट्रॉनिक, प्रिंट और सोशल मीडिया माध्यमों ने हिंदी के प्रचार-प्रसार को नई गति दी है। सही मायनों में अब माहौल ऐसा है कि यदि हम सब के पास दृढ़ इच्छा शक्ति हो तो हिंदी के विकास को रोकने वाला कोई कारण दिखाई नहीं देता। वस्तुत: हिंदी रेडियो, टेलीविजन, समाचार पत्रों, पत्रिकाओं, विज्ञापनों, चल-चित्रों जैसे विभिन्न संपर्क माध्यमों से प्रतिष्ठा अर्जित करके बहुत लोकप्रिय भाषा बन गई है।

हिंदी को भारतीय चिंतन और संस्कृति का वाहक भी माना गया है। यह हमारे पारंपरिक ज्ञान, प्राचीन सभ्यता और आधुनिक प्रगति के बीच एक कड़ी भी है। राजभाषा एक ऐसी संपत्ति है जिससे देश एक सूत्र में बँधा रहता है और एकता के बगैर देश का संपूर्ण विकास संभव नहीं । यथार्थ रुप से हिंदी का महत्व जनभाषा, संपर्क भाषा और राजभाषा के रूप में निरंतर बढ़ रहा है।

सरकार ने हिंदी के संरक्षण और संवर्धन के लिए अपने स्तर पर पहल की है और इसके उत्तरोत्तर विकास हेतु काफी प्रयास किये जा रहे हैं। इसलिए हमारा भी यह दायित्व है कि हम सब इसका सम्मान करें और गर्व के साथ सरकारी कामकाज में अधिकाधिक हिंदी का प्रयोग करें। कार्यालयों में सरल और सुबोध हिंदी शब्दों का प्रयोग करें। बल में हिंदी का प्रयोग कार्यालय प्रमुख स्तर से शुरू किया जाए ताकि उनके अधीन कार्यरत कार्मिक स्वत: ही हिंदी में कार्य करने को प्रेरित हो सकें क्योंकि राजभाषा नीति प्रेरणा, प्रोत्साहन और सद्भावना पर आधारित है।

इस बल में देश के हर प्रांत से जवान आते हैं जिनकी एक-दूसरे से संवाद की भाषा मुख्यत: हिंदी होती है। हमारे बल का प्रत्येक सदस्य हिंदी बोल एवं समझ लेता है। इसलिए हम सभी का यह दायित्व है कि हम कार्यालयी कामकाज हिंदी में ही करें ताकि जवान इसे पढ़कर अच्छी तरह समझ सकें।

हिंदी दिवस के अवसर पर मैं बल के सभी अधिकारियों और जवानों से यही अपेक्षा रखता हूँ कि वे अपने व्यक्तिगत जीवन में चाहे किसी भी भाषा को अपनाएं, लेकिन सरकारी कामकाज केवल हिंदी में ही करें। आइए, हम सभी मिलकर सरकार की राजभाषा नीति की अपेक्षाओं को पूरा करने के लिए सतत प्रयास करें और हिंदी के प्रचार-प्रसार में अपना महत्वपूर्ण योगदान दें ताकि आने वाले समय में राजभाषा हिंदी विश्व स्तर पर और अधिक सम्मान व गौरव पा सके।

शुभकामनाओं सहित ।

आनंद प्रकाश माहेश्वरी

(डॉ. ए. पी. माहेश्वरी) भा.पु.से. महानिदेशक

केन्द्रीय सशस्त्र पुलिस बलों द्वारा महा वृक्षारोपण अभियान

(केरिपुबल ने लगाए 25 लाख पौधे)

केन्द्रीय गृह मंत्री श्री अमित शाह ने दिनांक 12/07/20 को सीआरपीएफ, ग्रुप केन्द्र, गुरूग्राम के परिसर से केन्द्रीय सशस्त्र पुलिस बलों द्वारा बड़े पैमाने पर 'अखिल भारतीय वृक्षारोपण अभियान' की शुरुआत की। एक 'पीपल' का पौधा लगाते हुए मंत्री जी ने देश भर में 1.37 करोड़ पौधे लगाने के विशाल कार्य को पूरा करने के लिए सीआरपीएफ के 3.25 लाख कर्मियों सहित लाखों सीएपीएफ कर्मियों को प्रेरित किया। बाद में, उन्होंने सीएपीएफ के महानिदेशकों, अधिकारियों और जवानों को संबोधित किया।

इससे पहले मुख्य अतिथि और अन्य लोगों का स्वागत करते हुए बल के महानिदेशक डॉ. ए.पी. माहेश्वरी ने कहा कि माननीय गृह मंत्री द्वारा लगाए गए पौधे को केन्द्रीय सशस्त्र पुलिस बल द्वारा जीवनपर्यन्त धरोहर के रूप में महत्व दिया जाएगा। उन्होंने मुख्य अतिथि का ध्यान इस तथ्य की ओर आकर्षित किया कि जब मंत्री जी पौधारोपण कर रहे थे तब सीआरपीएफ ने एक ही दिन में पूरे देश में प्रभावकारी तरीके से 10 लाख पौधे लगाने में एक उपलब्धि हासिल की है। उन्होंने इस तथ्य पर प्रकाश डाला कि केन्द्रीय सशस्त्र पुलिस बलों ने देशवासियों की सुरक्षा एवं संरक्षा की देखभाल के साथ-साथ प्रकृति योद्धाओं और कोविड योद्धाओं के रूप में उनके विश्वास को हासिल किया है। डॉ. माहेश्वरी ने कहा कि जब हम एक पेड़ लगाते हैं तो हम धरती माता को एक साथ रखने के लिए शक्तिशाली हथियार बनाते हैं। हम मानवीय संवेदनाओं के बहुतायत आधार का निर्माण करते हैं। हम शक्तिशाली ध्रुवों का निर्माण करते हैं। 'हमारा तिरंगा और हम' मातृभूमि के लिए असीम सम्मान का निर्माण करते हैं। इस अवसर पर श्री ए.के. भल्ला, गृह सचिव, श्री एस एस देशवाल, महानिदेशक, बीएसएफ और आईटीबीपी, श्री राजेश रंजन, महानिदेशक, सीआईएसएफ, श्री जे.के. चक्रवर्ती, एसडीजी, एसएसबी और श्री ए.के. सिंह,

महानिदेशक, एनएसजी सहित कई गणमान्य अधिकारी उपस्थित थे।

केन्द्रीय गृह मंत्रालय ने चरणबद्ध तरीके से सीएपीएफ को 1 करोड़ 37 लाख पौधे लगाने का लक्ष्य दिया है। जून 2020 के अंत में सीएपीएफ केवल केरिपुबल के साथ मिलकर 20 लाख से अधिक पौधे लगाने में सक्षम रहा है जिसमें 10 लाख 21 हजार 622 पौधे लगाए गए हैं, जबकि सीआरपीएफ ने जुलाई 2020 के अंत तक कुल 25 लाख पौधे लगा दिए। केरिपुबल भी लगभग 1 करोड़ 37 लाख पौधे लगाने के विशाल कार्य को पूरा करने के लिए इसे अभियान के रुप में ले रहा है और सक्रिय भूमिका निभा रहा है।

केरिपुबल- 3.25 लाख कर्मियों वाला देश का सबसे बड़ा अर्द्धसैनिक बल इस महान सामाजिक कार्यक्रम में शामिल हुआ है और बल के जवानों के परिवार के सदस्यों को इस अभियान में शामिल करने से सक्रिय प्रतिभागियों की संख्या लगभग 12 लाख तक पहुंच गई है।

डॉ. माहेश्वरी ने कहा कि केरिपुबल राष्ट्र की आंतरिक सुरक्षा योद्धा की विशेष भूमिका में होने के साथ साथ अपनी सामाजिक जवाबदेही को और बेहतर बनाने के लिए प्रकृति योद्धा और कोविड योद्धा के रूप में सक्रिय भूमिका निभायी है। गृह मंत्रालय ने सीएपीएफ को वर्ष 2020 को 'मानवीय संवेदना' के वर्ष के रूप में मनाने की इच्छा जतायी है। इस विशाल वृक्षारोपण अभियान को अति महत्वपूर्ण विषय मानकर इसका संचालन किया जा रहा है।

माननीय गृह मंत्री जी का संबोधन

आज के छोटे परंतु बहुत महत्वपूर्ण कार्यक्रम के अंतर्गत उपस्थित भारत सरकार के गृह सचिव श्रीमान् भल्ला जी, सीआरपीएफ के डीजी श्रीमान् माहेश्वरी जी, यहां पर उपस्थित करीब-करीब सातों सुरक्षाबलों के डायरेक्टर जनरल, गृह विभाग के अधिकारी गण और आज इस कार्यक्रम के साथ-साथ पूरे देश भर में फैले हुए हमेशा देश की सुरक्षा के लिए समर्पित अपनी जान का भी बलिदान देने के लिए तत्पर ऐसे मेरे सभी सुरक्षाबलों के वीर योद्धाओं। आज यहां पर एक छोटे से कार्यक्रम से सुरक्षाबलों के वृक्षारोपण अभियान जो कि

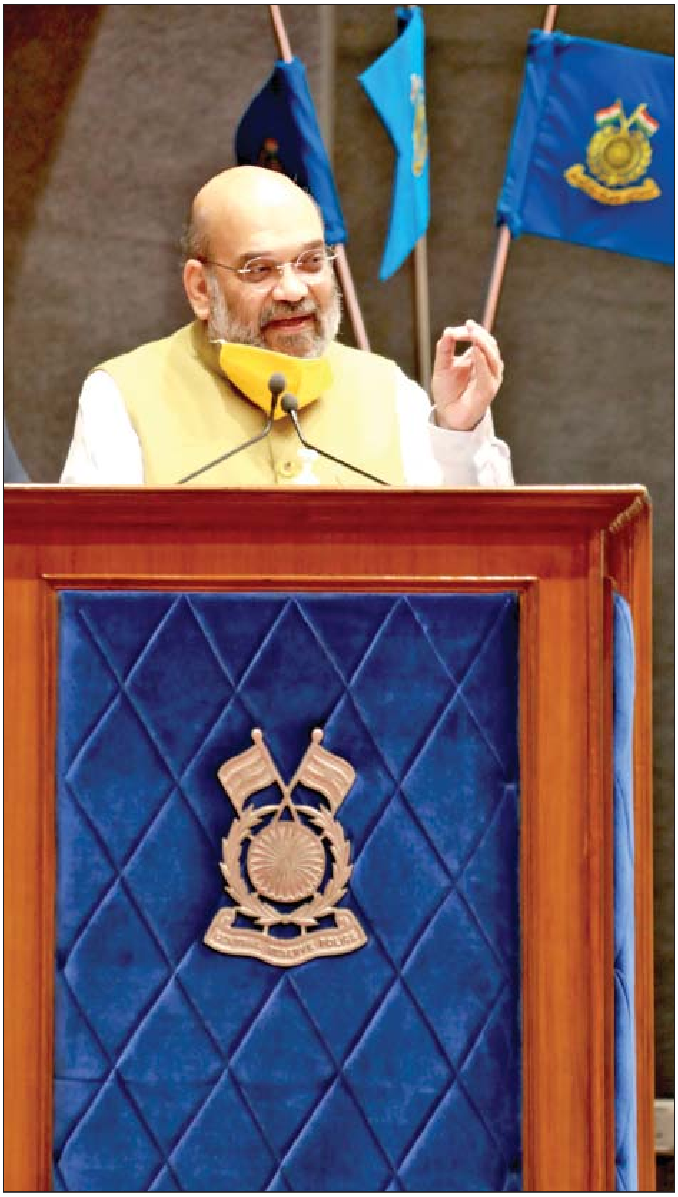

शुरू हो चुका है इसको गति देने का यह कार्यक्रम है। फरवरी माह में मैंने बात रखी कि सभी सुरक्षाबलों से लक्ष्यांक मंगाया जाए कि कितने कितने वृक्ष वो लगा सकते हैं, इसको संभाल सकते हैं और पौधों को वृक्ष में परिवर्तित कर सकते हैं तो बहुत कम लक्ष्यांक आया था। मगर मुझे मेरे सुरक्षा बलों के सभी जवानों की क्षमता पर पूरा भरोसा है। इसलिए हमने कई बार रिव्यू मीटिंग की और तय किया है कि अब आप 1 करोड़ 25 लाख से ज्यादा वृक्ष का लक्ष्यांक लेकर ही आएंगे तभी यह मीटिंग समाप्त होगी। मुझे आज आनंद है कि स्थान चिन्हित कर, वृक्षों की किस्म को तय कर और कौन सी वाहिनी कितने वृक्ष लगाएगी इसकी संख्या के साथ 1 करोड़ 37 लाख वृक्ष आज हमारे जवान लगाने का अभियान चला रहे हैं। मैं सभी जवानों को और उनके मुखियाओं को हृदय से साधुवाद और बधाई देना चाहता हूँ कि एक नई मिसाल और एक नया कीर्तिमान स्थापित करने की दिशा में हम आगे बढ़ें। ये कार्यक्रम जिस समय हो रहा है वो समय ना केवल भारत अपितु पूरी दुनिया के लिए शायद कभी ना आया हो, इतना बड़ा संकट और इतनी बड़ी महामारी के खिलाफ युद्ध का समय है। मानव जाति के इतिहास में बहुत पुराना कोई डॉक्यूमेंटेशन उपलब्ध नहीं है परंतु जो दो सौ से ढ़ाई सौ साल का डॉक्यूमेंटेशन है, इसमें फैलने की क्षमता शायद किसी महामारी में इतनी ज्यादा नहीं रही जितनी इस कोरोना महामारी की रही है। इसके खिलाफ जंग मानव जीवन के अस्तित्व के लिए जंग है और पूरी दुनिया इस जंग को लड़ रही है। भारत भी देश के लोकप्रिय प्रधानमंत्री श्री मोदी जी के नेतृत्व में इस जंग को बहुत अच्छे तरीके से लड़ रहा है। हमारे देश के अंदर जिस प्रकार की स्वास्थ्य सेवाओं का इंफ्रास्ट्रक्चर है, जिस प्रकार की सबसे घनी आबादी वाले देशों में से एक हम हैं और जिस प्रकार से मास एजुकेशन सिस्टम भी नीचे तक अन्य देशों की तुलना में हमारी ठीक-ठाक नहीं मानी जाती थी एक जमाने में सबको लगता था कि कोरोना के खिलाफ लड़ाई भारत जैसा देश कैसे लडेगा। 130 करोड़ की आबादी फेडरल स्ट्रक्चर कोई एक चेन ऑफ कमांड की व्यवस्था के अभाव मे लड़ाई कैसे लड़ेंगे सबके मन में आशंकाएं थी कि जंग में कहीं बहुत बड़ा नुकसान तो नहीं होगा। मगर आज पूरी दुनिया देख रही है कि कोरोना के खिलाफ समग्र विश्व में सफल से सफल जंग अगर कहीं लड़ी गई है तो अपने भारत के अंदर प्रधानमंत्री जी के नेतृत्व में लड़ी गई है। दुनिया भर में जंग सिर्फ सरकारें लड़ी और हमारे यहाँ ये जंग सरकार के साथ-साथ

130 करोड़ की आबादी,सभी राज्य सरकारें और एक-एक व्यक्ति ने लड़ा है। एक जन, एक मन, एक राष्ट्र की सूत्र को चरितार्थ करते हुए इस जंग में आज हम अच्छे मुकाम पर खड़े हैं, डट कर लड़ रहे हैं, कहीं भी डर का माहौल नहीं है। इसके खिलाफ लड़ने का जज्बा है, इसको पराजित करने का एक उत्साह है, और मैं आज देश के गृहमंत्री के नाते बड़े गर्व के साथ कहना चाहता हूँ कि भारत यह जो जंग लड़ रहा है इसमें हमारे सभी सुरक्षा बलों का भी बहुत बड़ा योगदान है, इसको कोई नकार नहीं सकता। चाहे एयरपोर्ट हो, चाहे रेलवे स्टेशन हो, चाहे भीड़-भाड़ वाले इलाकों के अंदर हमारी सहायता मांगी गई हो, राज्य सरकार द्वारा, चाहे लॉकडाउन का पूरा पालन कराने के लिए स्थानीय पुलिस ने हमें बुलाया हो, कहीं पर भी किसी भी आयु का किसी भी वर्ग का किसी भी सुरक्षा बल का हमारा जवान पीछे नहीं हटा। और आज मैं उन सभी कोरोना वारियर्स को इस मंच से सलाम करना चाहता हूँ, उनकी हौसला अफजाई भी करना चाहता हूँ कि आपने एक नया उदाहरण देश और दुनिया के सामने रखा है कि आप सिर्फ सुरक्षा की चिंता नहीं करते, आतंकवाद के खिलाफ सिर्फ लड़ना नहीं जानते, आप लोगों से कंधे से कंधा मिलाकर कोरोना के खिलाफ भी लड़ाई इतनी ही मुस्तैदी के साथ लड़ रहें हैं। हमारे कई जवानों ने अपनी जान गवाई है। 31 से ज्यादा जवान कोरोना के कारण अकाल ही चले गए। हम सबके बीच में से सीआरपीएफ के भी 10 जवानों ने इसमें अपनी जान का बलिदान दिया। मैंने लगभग लगभग सभी के परिवार जनों से बात की है। मैं आज फिर से इस सार्वजनिक मंच से कहना चाहता हूँ कि आपका यह बलिदान कभी भी व्यर्थ नहीं जाएगा। मानवता का इतिहास कोरोना के खिलाफ जंग का इतिहास जब लिखा जाएगा तो भारत के सुरक्षा बलों के बलिदान को स्वर्णाक्षर से अंकित करना पड़ेगा। सीआरपीएफ और हमारे बाकी सारे संगठनों के शौर्य के बारे में पूरा देश जानता है, पूरी दुनिया जानती है और इसी को एकनॉलेज करने के लिए देश के प्रधानमंत्री जी ने एक बहुत बड़ा स्मारक दिल्ली की हृदय स्थली के अंदर बनाया है। आसमान को छूने वाला है वो स्मारक, भारत के वो 35000 जवान चाहे वह पुलिस बल के हों, चाहे सुरक्षा बलों के हों, सरहद पर शहीद हुए हों, या देश की आंतरिक सुरक्षा को बनाए रखने के लिए शहीद हुए हों, उनके लिए बनाए गए स्मारक हमेशा जनता को उनके बलिदान की याद दिलाता है और उसको लोगों के बीच में पहुंचाने के लिए भी गृह विभाग ने विशेष योजना बनाई है। आज वृक्षारोपण के मौके पर हम सब यहां उपस्थित हैं। हमारे पुरखों ने, ऋषि-मुनियों ने कहा था कि प्रकृति का दोहन करना चाहिए, प्रकृति का शोषण नहीं करना चाहिए। जिस प्रकार से बछड़ा गाय के पास जाकर अपना दूध लेता है, जिस प्रकार से गोपालक दूध निकालता है तो गाय की कभी हानि नहीं होती, इसी प्रकार से प्रकृति हमारी मां है, उसका हम शोषण नहीं कर सकते दोहन कर सकते हैं। प्रकृति हमेशा हमें आशीर्वाद देती है परंतु यह संतुलन को वेद काल में जो हमारे ऋषि-मुनियों ने बनाया था। भौतिकवादी विचार की आंधी ने इस संतुलन को तोड़ा और आज जलवायु परिवर्तन बढ़ते तापमान ग्लोबल वार्मिंग के खतरे हमारे सामने खड़े हुए है। बहुत सारे वैज्ञानिक यह चिंता कर रहे है की ओजोन के सतह के अंदर जो छिद्र पड़े हैं वो छिद्र अगर बड़े हो जाते हैं तो पृथ्वी का अस्तित्व कैसे बचेगा क्योंकि ओजोन की सतह ही है जो सूर्य नारायण से हमें मिलती ऊर्जा को सहन करने के लायक बनाता है। अगर पृथ्वी और सूर्य नारायण के बीच में से ओजोन का स्तर निकल जाता है तो पृथ्वी पर इतनी गर्मी हो जाएगी कि हम इसको सहन नहीं कर सकते। मानव जीवन ही असंभव हो जाएगा और वो ओजोन की सतह के अंदर छिद्र पड़ने का मुख्य कारण है ऑक्सीजन की कमी, कार्बन डाई ऑक्साइड और कार्बन मोनो ऑक्साइड की बढ़ती हुई मात्रा। कौन इसको रोक सकता है, कोई मानव नहीं रोक सकता केवल और केवल इस संकट से हमें वृक्ष ही बचा सकते हैं इसीलिए हमारे पुरखों ने वेदों में, उपनिषदों में, गीता में, महाभारत में, रामायण में, पुराणों में, वृक्षों के महत्व को समझाया है। शाही जी बैठे हैं एक बहुत सुंदर श्लोक मत्स्य पुराण का वो लेकर प्रेजेंटेशन में आए थे। मैं इसका हिंदी अर्थ आपके सामने रखता हूं। एक जलकुंड 10 कुँए के समान है, एक तालाब 10 जलकुंड के बराबर है और एक अच्छा पुत्र 10 तालाब के बराबर है परंतु एक वृक्ष 10 पुत्रों से भी ज्यादा महत्व रखता है और 10 पुत्रों से भी ज्यादा पृथ्वी की सेवा करता है। और इस बार हमने आयोजन पूर्वक इस कार्यक्रम को हाथ में लिया है। वृक्षों को सिर्फ लगाना नहीं, मेरी सभी जवानों से, सभी बलों से अपील है कि वो अपने से बड़े ना हो जाए तब तक उसका ध्यान रखना है, बाद में वो हमारा ध्यान रखेंगे। एक बार वृक्ष को बड़ा कर दीजिए तब तक आप उसका ध्यान रखें, वो पीढ़ियों तक हमारा ध्यान रखेंगे। इस बार हमने जो पौधों का चयन किया है उसे बहुत सोच समझ कर किया जिसकी आयु 100 साल से अधिक है ऐसे पौधों को चयनित किया है, चाहे जामुन हो, चाहे नीम हो, चाहे पीपल हो, बड़े मैदानों में वटवृक्ष हो, बरगद का पेड़ हो इस प्रकार के 100 साल से ज्यादा जीने वाले वृक्षों को हमने एक अनुपात के अंदर लिया है, बीच में छोटे-छोटे वृक्ष होंगे और ये वृक्ष जब घटादार होंगे छोटे वृक्ष निकलते जाएंगे। आज यहां पर जो 'शौर्य वन' बनाया गया है इसमें भी लंबी आयु वाले वृक्ष और पापुलर का एक सम्मिश्रण कर बनाया गया है। लंबी आयु वाले वृक्ष जब बड़े हो जाएंगे तब तक पापुलर निकल जाएगा क्योंकि उनकी आयु इतनी

ये वृक्ष ही है जो हमें प्राणवायु देते हैं, प्राणवायु के बगैर शरीर की कल्पना भी नहीं की जा सकती। इसके लिए इसको प्राणवायु कहते हैं जो प्राण का संरक्षण करते हैं और ये प्राणवायु तभी बैलेंस हो सकती है जब वृक्षों की संख्या को हम बढ़ाएं। एक पीपल का वृक्ष शत्-प्रतिशत ऑक्सीजन देता है। नीम का वृक्ष 50 प्रतिशत देता है, बरगद 80 प्रतिशत देता है, जामुन 60 प्रतिशत देता है। ऐसे वृक्ष जिनकी आयु ज्यादा है वह आक्सीजन भी ज्यादा देते हैं, इसलिए प्रकृति में जीने वाले वृक्ष और हर काल में रहने वाले वृक्षों का हमने चयन किया है और वृक्षों के वन आज आप लगा रहे हो, आने वाले कई वर्षों तक भारत की और संपूर्ण मानव जाति और हमारे पर्यावरण की चिंता करेगा। हमारी और ओजोन के स्तर को बढ़ाने के लिए बनाए रखने के लिए नीचे ही कार्बन डाई ऑक्साइड को न्यूट्रलाइज करता रहेगा। मित्रों, आज एक बहुत बड़ा काम सुरक्षाबलों के द्वारा किया गया है। देश के प्रधानमंत्री जी ने भी पहले जब वह गुजरात के मुख्यमंत्री थे तब और बाद में जब प्रधानमंत्री बने तब पर्यावरण को, पर्यावरण के संवर्द्धन को और पर्यावरण के संवर्जन को तीनों को बहुत महत्व दिया है। गुजरात एकमात्र ऐसा राज्य था जहां सबसे पहले जलवायु परिवर्तन की चिंता करने के लिए डिपार्टमेंट की रचना की गई, ग्लोबल वार्मिंग की चिंता करने के लिए डिपार्टमेंट की रचना की गई। 8 करोड़ माताओं को गैस के सिलेंडर देते हैं। सबको लगता है कि पॉपुलिस्ट प्रोग्राम है, कुछ लोगों को लगता है कि माताओं की आंखों को धुंए से बचाने के लिए, फेफड़ो को धुंए से बचाने के लिए भी प्रोग्राम है। मुझे उस में दिखाई पड़ता है देश के वातावरण को शुद्ध रखने का भी यह प्रोग्राम है। 8 करोड़ घरों में धुंआ उठना बंद हो जाए तो कार्बन डाईऑक्साइड का उत्सर्जन कितना बंद हो जाएगा। जब हम देखते हैं कि देश के प्रधानमंत्री स्वच्छ ईंधन की बात करते हैं, पेट्रोल की जगह इथेनॉल के इस्तेमाल को बढ़ावा देना चाहते हैं और आज 2014 से 2020 के बीच में इथेनॉल का उत्पादन कंजम्पशन पेट्रोल की जगह लेने का लगभग 20 गुना बढ़ा है और 10 गुना बढ़ाने का लक्ष्य रखा है। आज भारत पूरे विश्व के अंदर सौर ऊर्जा का केंद्र बना है। यही गुरुग्राम पूरे देश के सौर ऊर्जा का केंद्र बना है। कुछ दिन के अंदर हम इस स्थिति में पहुंच जाएंगे कि सबसे ज्यादा देश की ऊर्जा की खपत और सबसे ज्यादा देश में ऊर्जा का उत्पादन हम सौर ऊर्जा के माध्यम से करेंगे। जब प्रधानमंत्री जी पेरिस गए वहां उन्होंने क्लाइमेट जस्टिस की बात की। विकास की दौड़ में अंधाधुंध प्रकृति का दोहन करने वाले देशों को चेताया कि जब प्लेनेट ही नहीं रहेगा क्या करोगे। मुझे कहते हुए आनंद है कि पूरी दुनिया ने पेरिस समझौते

नहीं है। मगर उसकी घटाई इतनी हो जाएगी कि पूरा शौर्य वन आच्छादित हो जाएगा। और मैं सभी सुरक्षा बलों के जवानों को एक और भी बात कहना चाहता हूँ कि हम सब का काम ऐसा है कि कहीं न कहीं हमारे मानव स्वभाव को वो हर्ट करता है आप हमेशा सुरक्षा की चिंता करते है। हमेशा दुश्मनों से आने वाले हमलों से सतर्क रहते हों और हमला आता है तो इसको बहादुरीपूर्वक देश के लिए अपने प्राणों की भी बाजी लगाकर सुरक्षित करके उसको मार गिराते हो। ये जो काम है, देश की सुरक्षा के लिए तो बहुत जरूरी है मगर साथ में वृक्ष बोने की आदत है, वृक्ष को जिंदा रखने की आदत है आपके अंदर इसको इक्वालाइज करने के लिए आपके अंदर मानवता को भी जिंदा रखने के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। सभी सुरक्षा बलों के जवानों से मेरी एक अपील है कि एक-एक वृक्ष को आप गोद ले लीजिए और एक-एक गांव के एक-एक सेवा कार्य को आप गोद ले लीजिए वह आपके जीवन को पल्लवित कर देगा, सुगंधित कर देगा और इसीलिए हमारे पुरखों ने वृक्षों के महत्व को समझाया है। ये वृक्ष ही है जिसके नीचे हमारी संस्कृति के बड़े वेद, उपनिषद लिखे गए, विज्ञान की शोध हुई, यज्ञीणों का आविष्कार हुआ, गणित निकला,

में मोदी फार्मूला को स्वीकारा है। यह हमारे देश के लिए बहुत बड़े गर्व का विषय और अंतर्राष्ट्रीय सौर संगठन भी आज भारत में स्थापित हुआ है। ये वृक्षारोपण का जो कार्यक्रम है वह एक करोड़ 37 लाख पौधे लगाने का उसको वृक्ष में परिवर्तित करना है। यह बहुत लंबा कार्यक्रम है, वृक्ष लगाकर, पौधा लगाकर हमारे काम को हम समाप्त न समझें। गृह विभाग का एक कल्चर होना चाहिए जिस काम को हम शुरू करते हैं उसको अंत तक ले जाकर सफलता प्राप्त कर के ही गृह विभाग दम लेता है। ये सारे एक करोड़ 37 लाख पौधे अपनी ऊंचाई से ऊंचे हो जाए तब तक हमारा यह कार्यक्रम समाप्त नहीं होने वाला है। मित्रों, ढ़ेर सारे कार्यक्रम देश के अंदर चालू हुए हैं। नमामि गंगे का कार्यक्रम हो, सौर ऊर्जा का कार्यक्रम हो, स्वच्छ ईंधन का कार्यक्रम हो, घरों में गैस देने का कार्यक्रम हो जो पर्यावरण की सुरक्षा के लिए बनाए गए हैं। सभी कार्यक्रम पर्यावरण में प्रदूषण को कम करने वाले नहीं है हमारा प्रदूषण का कंट्रीब्यूशन कम करने वाले फैले हुए प्रदूषण को कोई कार्यक्रम कम नहीं कर सकता। सोलर ऊर्जा फैले हुए प्रदूषण को कम नहीं कर सकता। गैस का सिलेंडर फैले हुए प्रदूषण को कम नहीं कर सकता। इथेनॉल भी प्रदूषण बढ़ने से रोक सकता है, बढ़े हुए प्रदूषण को कम नहीं कर सकता। अकेला वृक्ष ऐसा है जो बढ़े हुए प्रदूषण को रोक सकता है, कम कर सकता है और पृथ्वी को बचा सकता है। अत: हम सब को इस कार्यक्रम में अपना-अपना योगदान देना चाहिए और वृक्ष को अपना बच्चा मानकर उतनी ही ममता से जितना अपने बेटे और बेटी पर ममता होती है अपने बोए हुए पौधे पर इतनी ममता हमारे मन में ईश्वर उत्पन्न करें और उसको अपनी ऊंचाई से बड़ा कर दें। मैं आप सब से अपील करना चाहता हूँ, फिर से एक बार सरहद की सुरक्षा करने सरहद की सुरक्षा करते-करते आंतरिक सलामती की चिंता करते करते शहीद हुए सभी जवानों को नमन कर श्रद्धांजलि देता हूँ और कोरोना वारियर्स जो हमारे सुरक्षा बलों के हैं और भी कोरोना के साथ लड़ते हुए जिन लोगों ने अपनी जान गवाई है उन सभी को श्रद्धांजलि देकर मेरी बात को समाप्त करता हूँ। वंदे मातरम।

के.रि.पु. बल ने मनाया 82वाँ स्थापना दिवस

(उप राष्ट्रपति ने सीआरपीएफ की राष्ट्रीय सुरक्षा के प्रति प्रतिबद्धता को रेखांकित किया)

सीआरपीएफ ने हमारे देश को सुरक्षित रखने में सबसे आगे मोर्चा संभाला है-प्रधानमंत्री।

सीआरपीएफ- राष्ट्र के शांति प्रहरी ने दिनांक 27.7.20 को अपना 82वां स्थापना दिवस मनाया। इस ऐतिहासिक अवसर पर बड़ी संख्या में लोगों और नेताओं ने समान रूप से प्रतिक्रिया दी। बल के कर्मियों एवं उनके परिवार के सदस्यों को ट्विटर हैंडल के माध्यम से बधाई देते हुए भारत के उप राष्ट्रपति श्री एम. वेंकैया नायडू ने कहा कि सीआरपीएफ कर्तव्य और राष्ट्रीय सुरक्षा के प्रति समर्पण और प्रतिबद्धता का पर्याय है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने ट्वीट किया कि सीआरपीएफ हमारे राष्ट्र को सुरक्षित रखने में सबसे आगे है। इस बल के साहस और व्यवसायिकता की व्यापक रूप से प्रशंसा की जाती है। आने वाले वर्षो में सीआरपीएफ और भी अधिक उंचाईयों को प्राप्त करेगा। सीआरपीएफ वीरता, साहस और बलिदान का पर्याय है। केन्द्रीय गृह मंत्री श्री अमित शाह ने ट्वीट कर लिखा कि सीआरपीएफ ने हमेशा देश को गौरवान्वित किया है। कोविड 19 के दौरान समाज की सेवा के लिए सीआरपीएफ का समर्पण अद्वितीय है।

सोशल मीडिया के माध्यम से मंत्रियों और राजनैतिक नेताओं सहित सभी क्षेत्रों के लोगों की शुभकामनाओं के बीच सीआरपीएफ ने अपने 82वें स्थापना दिवस के अवसर पर महामारी प्रोटोकॉल का पालन करते हुए अपने मुख्यालय परिसर में तदनुरूप समारोह मनाया।

केन्द्रीय गृह राज्य मंत्री श्री नित्यानंद राय ने मुख्य अतिथि के रूप में समारोह की अध्यक्षता की तथा साथ में केन्द्रीय गृह सचिव श्री अजय भल्ला ने विशिष्ट अतिथि के रूप में शिरकत दी। मुख्य अतिथि के आगमन पर उन्हें सम्मान गार्ड की सलामी दी गई तथा उसके उपरांत डॉ. ए.पी. माहेश्वरी, महानिदेशक और बल के अन्य वरिष्ठ अधिकारियों द्वारा उनकी अगवानी की गई जहां उन्होंने सरदार पोस्ट की पवित्र मिट्टी से युक्त कलश पर श्रद्धासुमन अर्पित किए।

तद्‌परांत उन्होंने बल के अधिकारियों और जवानों को संबोधित किया। उनके संदेश को बल के 3.25 लाख कर्मियो, उनके परिवार के सदस्यों तथा आम लोगों तक इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के माध्यम से लाईव दिखाने के साथ-साथ ऑनलाईन प्लेटफार्म जैसे यूट्यूब और फेसबुक के माध्यम से प्रसारित किया गया।

इस अवसर पर मुख्य अतिथि ने बल के द्वारा अपने कर्मियों के लिए विकसित ''संभव'' नामक एक ऐप का उद्‌घाटन किया। यह ऐप बल के कर्मियों को उनकी सेवा से संबंधित विभिन्न प्रकार की मामलों की जानकारी के लिए एक प्लेटफार्म प्रदान करेगा। डिजिटल विंडो, बल के कर्मियों के लिए उनके व्यवसायिक, प्रशासनिक, कल्याण और अन्य सेवा संबंधी जानकारी का एक व्यापक दृष्टिकोण प्रदान करेगा।

मुख्य अतिथि का स्वागत करते हुए डॉ. माहेश्वरी, महानिदेशक ने कहा कि सीआरपीएफ एक समर्पित और बहुआयामी बल है जिसमें एक बड़ी लोकप्रिय अपील है। राष्ट्र के प्रति समर्पण भाव एंव कठिन परिश्रम से बल ने लोगों का विश्वास हासिल किया है। सीआरपीएफ की विभिन्न विशिष्टताओं पर प्रकाश डालते हुए महानिदेशक ने कहा कि सीआरपीएफ एकमात्र बल है जो सामुदायिक सहयोग पर ध्यान देने के साथ समान रूप से हमारे देश के संघीय ढांचे में फिट बैठता है और व्यापक रूप से स्वीकार किया जाता है। उन्होने कहा कि बल मानवीय संवेदनाओं के साथ अपने सभी प्रयासों को परखने में सक्षम है। अपने आदर्श वाक्य 'सेवा और निष्ठा' के लिए बल की प्रतिबद्धता को दोहराते हुए डॉ. माहेश्वरी ने मातृभूमि की रक्षा में बल के 2200 से अधिक शूरवीरों द्वारा किए गए निस्वार्थ बलिदान की याद दिलाई।

27 जुलाई 1939 को 'क्राउन रिप्रेजेंटेटिव पुलिस के रूप में स्थापित इस बल का 1949 में केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के रूप में फिर से नामकरण किया गया। पिछले 82 वर्षो में जैसे जैसे राष्ट्र समृद्ध होता गया, सीआरपीएफ का भी विस्तार 246 बटालियनों के साथ देश के सबसे बड़े अर्द्धसैनिक बल के रूप में हुआ। यह बल वीरता के 1980 पदकों से सुसज्जित है जो केन्द्रीय सशस्त्र पुलिस बलों में सबसे अधिक है। इस बल ने जंगल छापामार युद्ध, दंगा नियंत्रण, भीड़ नियंत्रण, आईईडी निपटान में विशेषता हासिल की है और आंतरिक सुरक्षा बनाये रखने में देश का सबसे अग्रणी बल है। यह बल चुनाव, प्राकृतिक आपदा, सालाना श्री अमरनाथजी यात्रा आदि के अलावा लोक स्वास्थ्य संकट जैसे कोविड-19 महामारी के दौरान

गृह राज्य मंत्री का संबोधन

सीआरपीएफ के 82वें स्थापना दिवस के इस कार्यक्रम में उपस्थित भारत के गृह सचिव श्रीमान् भल्ला साहब, सीआरपीएफ के डीजी श्रीमान् माहेश्वरी जी, मंच पर उपस्थित सीआरपीएफ के सभी वरिष्ठ अधिकारी गण, कार्यक्रम में उपस्थित सभी वरिष्ठ अधिकारी गण, जवान मित्रों, भाइयों-बहनों। आज स्थापना दिवस है और इस स्थापना दिवस के सुअवसर पर जब इस कार्यक्रम में जावेद अख्तर जी, के एस भंडारी जी, संजय अरोड़ा जी, एम एस भाटिया जी की उपस्थिति भी हम सभी के साथ हैं। सबसे पहले तो कोरोना के इस संघर्ष काल में सीआरपीएफ के इस स्थापना दिवस को हम सब मना रहे हैं। कोरोना के इस संघर्ष काल में सीआरपीएफ का जो योगदान है नित्य देखने को मिलता है और जिस बहादुरी के साथ अपने कर्तव्य का निर्वहन सीआरपीएफ के अधिकारी समेत जवान कर रहे हैं जिसकी जितनी भी तारीफ की जाए वह कम ही होगी। आप हर प्रकार की ड्यूटी चाहे वह संक्रमित व्यक्तियों को उपचार के लिए लाना हो चाहे उस इलाके को नियंत्रित करना हो, चाहे कोरोना योद्धा के रूप में जो भी सेवा दे रहे है डॉक्टर हो, नर्स हो या अन्य हो उनकी भी सुरक्षा की जिम्मेवारी का निर्वहन करते हैं। थोड़ा भी संकोच नहीं करते वैसे भी निर्भीकता आपकी पहचान है। सेवा और निष्ठा हमारा संकल्प है और भारत के यशस्वी प्रधानमंत्री आदरणीय नरेंद्र मोदी जी का विश्वास है सीआरपीएफ और भारत के माननीय गृह मंत्री आदरणीय अमित शाह जी का भरोसा है सीआरपीएफ। हम जानते हैं जो आप का इतिहास रहा है जो आपने अपनी सेवा से अपने शौर्य से अपनी निष्ठा से अपने बलिदान से जो आपने इतिहास लिखे हैं उस इतिहास के आधार पर माननीय प्रधानमंत्री जी और माननीय गृह मंत्री जी का विश्वास और भरोसा होना स्वभाविक है। आज स्थापना दिवस के अवसर पर माननीय प्रधानमंत्री जी की प्रेरणा से हम गृह मंत्री जी के सभी प्रयासों को, उनकी सारी इच्छा और अरमानों को हम शत प्रतिशत कामयाबी देंगे आज हम सब लोग इसका संकल्प लेते हैं। स्थापना दिवस है आजादी के पहले ही सीआरपीएफ के रूप में स्थापना हो गई थी। लेकिन आजादी के बाद देश को एक करने की जरूरत थी भारतीय संघ को एक रूप देने का, जब भारत के प्रथम गृह मंत्री सरदार वल्लभ भाई पटेल ने संकल्प लिया था। विभिन्न बाधाओं को पार करते हुए जब उन्होंने भारतीय संघ को एक किया था। छोटी-छोटी रियासतों को मिलाकर जब एक भारत विराट स्वरूप दिया था। अगर भारत के इस विराट स्वरूप की गाथा लिखी जाएगी कहानी और इतिहास लिखा जाएगा तो सीआरपीएफ का भी इतिहास उसमें बड़ी मजबूती से लिखा जाएगा। और आज गर्व के साथ सीआरपीएफ कह सकती है कि भारतीय संघ को बनाने में सरदार वल्लभ भाई पटेल के उन मजबूत इरादों के साथ अपने शौर्य को लेकर हिंदुस्तान के तिरंगे को मजबूती देने में जो काम सीआरपीएफ के जवानों ने, अधिकारियों ने किया है और उसमे जो उन्होंने बलिदान दिया है उस बलिदान को भारत कभी भूलेगा नहीं। स्थापना के विषय

में काफी चर्चा हो गई है 27 जुलाई को ध्वज प्रदान किया गया था सरदार वल्लभ भाई पटेल ने भारतीय संघ को एक रुप दिया एक अखंड भारत का स्वरूप बनाया तो उसके बाद सीआरपीएफ के कार्यो को देख कर सरदार वल्लभभाई पटेल ने राष्ट्रीय ध्वज सीआरपीएफ को प्रदान किया। 27 जुलाई का वह दिन था इस महत्वपूर्ण दिवस को जिस दिन सीआरपीएफ को ध्वज प्रदान किया था, आपने प्रथम गृह मंत्री जी से, इस ऐतिहासिक दिन को हम सभी निश्चित रूप से स्थापना दिवस के रूप में मनाते है। चर्चा आई है कि एक बटालियन से शुरू होकर 246 बटालियन और सिर्फ बटालियन नहीं सेवा और निष्ठा का प्रतीक 246 बटालियन जिसमें 06 बटालियन सिर्फ अपनी बहनों की भी हैं और निश्चित रूप से भारत के उच्च विचार को कि हम नारी के सहभाग बिना हम किसी भी बदलाव को या किसी भी इतिहास को मजबूती नहीं दे सकते हैं। सीआरपीएफ ने भारत के इस स्वभाव को इस विचार को अपनाते हुए बहनों की जो बटालियन बनाई और बहनों के वीर कर्तव्य को उनकी वीरता की झांकी को देखने का अवसर कई बार मुझको भी प्राप्त हुआ है। निश्चित रूप से उन महिला बहनों की 06 बटालियनों को बनाकर सीआरपीएफ ने एक बड़ी प्रगति की है। 21 अक्टूबर की चर्चा हो रही थी 1959 को जब हॉट स्प्रिंग लद्दाख में चीनियों ने आक्रमण कर दिया। क्या संयोग है जब भी आक्रमण चीन करता है तो उसकी तादाद बड़ी होती है और हमारी तादाद छोटी होती है लेकिन अंजाम हमेशा चीन को भुगतना पड़ा है और सीआरपीएफ के हाथों 21 अक्टूबर 1959 को भी सीआरपीएफ के 10 जवानों ने अपनी शहादत तो दे दी लेकिन भारी नुकसान उठाना पड़ा था चीनियों को जिसका गौरवमयी इतिहास आपसे जुड़ा है। 09 अप्रैल 1965 को सीआरपीएफ ने एक और अपनी वीरता का परिचय देते हुए सरदार पटेल पोस्ट पर जब पाकिस्तानी सैनिकों ने आक्रमण किया था तीन हजार से ज्यादा की संख्या में रहते हुए भी पाकिस्तानी सैनिकों का सीआरपीएफ की छोटी-सी टुकड़ी ने जो जवाब दिया आज भी उस जवाब को जब पाकिस्तान याद करता होगा तो कांप उठता होगा। सीआरपीएफ की उस वीरता ने पाकिस्तान को ऐसा सबक सिखाया था। देश की आंतरिक सुरक्षा की जिम्मेवारी मुख्य रूप से हमारे ऊपर है और किसी भी देश के लिए उसकी आंतरिक सुरक्षा सबसे महत्वपूर्ण विषय होता है। देश में शांति नहीं तो विकास नहीं देश में शांति नहीं तो एकता नहीं और देश में जब शांति नहीं तो कोई सुख चैन नहीं। एकता से आप देख सकते हैं चाहे देश के विकास के लिए जिस चीज की जरूरत हो शांति के लिए जिस चीज की जरूरत हो सीआरपीएफ हर क्षेत्र में अपना काम करती है, कर्तव्यों का निर्वहन करती है, विषम परिस्थितियों में भी चाहे वो त्रिपुरा का उग्रवाद हो, चाहे पंजाब में अलगाववादियों पर कार्रवाई आपको करनी पड़ी हो, चाहे इस देश के आंतरिक व्यवस्था को टुकड़े-टुकड़े करने के लिए तहस नहस की मनोकामना लेकर माओवादी हमारे भोले भाई बहनों को फुसलाकर, बहलाकर कुछ भ्रान्तियाँ फैलाकर, खासकर जब अलगाववादी हिंसा पर उतारू होता है तो आप उन्हें सबक भी सिखाते हैं और उसकी सेवा भी करते हैं। उदाहरण ले लीजिए ऐसे माओवादियों के बच्चों को शिक्षा देना, उन प्रभावित गांवों में अपने सेवा कार्यों के माध्यम से उनके बीच अच्छा वातावरण बनाना और जरूरत पड़े तो हर प्रकार का मुंहतोड़ जवाब देने का काम सीआरपीएफ करती है और आज हम कह सकते हैं जो माननीय गृह मंत्री जी का संकल्प है कि हम इस देश से आतंकवाद को समाप्त किए बिना चैन से नहीं रहेंगे, इस देश से माओवादियों को समाप्त किए बिना हम चैन से नहीं रहेंगे और हमारे जो माननीय प्रधानमंत्री जी की जो यह इच्छा है उनका जो संकल्प है, उस संकल्प को हम बहुत दूर तक हम आगे बढ़ाकर ले गए। भारत की मिट्टी से आतंकवादी भी समाप्त हो रहे हैं और माओवादी और नक्सलवादी भी समाप्त हो रहे हैं। हिन्दुस्तान के आतंकवादियों को समाप्त करने के इतिहास में नया अध्याय जो जुड़ा है 6 महीनों के इस कालखण्ड में 150 से ज्यादा आतंकवादी मारे गये हैं। यहाँ भल्ला साहब बैठे हैं, कश्मीर की धरती पर 6 महीने 4 महीनों में 6 से बड़े आतंकवादी संगठन चाहे वो लश्कर-ए-तैयबा चाहे हिजबुल मुजाहिद्दीन हो या अन्य कोई संगठन हो उसके सारे कमांडर मारे गए हैं अब कोई पनपने की भी कोशिश करता है या तो वो अपने विचार में बदलाव लाता है या फिर इस धरती से उसका नामोनिशान मिट जाता है ऐसा करतब सीआरपीएफ के जवानों ने देश की सेना और जम्मू कश्मीर की पुलिस के साथ मिलकर आप इतना बड़ा काम और इतने बड़े काम को अंजाम देने का प्रयास भी कर रहे हैं और काफी सफलता हासिल कर रहें है। पुलवामा में सीआरपीएफ के जवानों की कानवाई पर अटैक हो गया धोखे से हो गया द्वेष था उठाकर देखिए कितना भरोसा है देशवासियों को आपका जब बलिदान होता है तो देशवासी एकजुट होकर आपके बलिदान को सलाम करने के लिए खड़ा होता है। पुलवामा की घटना के बाद पूरे देश की जो आवाज थी और इस देश के प्रधानमंत्री के उद्बोधन के संयोग से एक मंच पर मैं सुन रहा था। इस घटना के बाद जब उन्होंने कहा की जवानों के लहू को हम बेकार नही जाने देंगे उस दिन दुनिया को ये संकेत मिल गया था कि प्रधानमंत्री जी की यह इच्छा है कि हमारे देश की सेना पाकिस्तान में घुस कर आतंकवादियों को समाप्त करने की पहल करेगा। घुसकर आतंकवादियों को मारा भी, पाकिस्तान देखता रह गया, हिन्दुस्तान को जो करना था वो कर दिखाया। सीआरपीएफ का लंबा चौड़ा इतिहास है हम बहुत उस पर कुछ नहीं कहना चाहेंगे लेकिन समाजिक कार्यो में, एक और प्रधानमंत्री जी की इच्छा के अनुसार और हमारे गृहमंत्री जी जो टास्क दिए है सीआरपीएफ को वृक्षारोपण का उसमें भी आपको बहुत सफलता मिली। रिपोर्ट देख रहे थे कि किस प्रकार से आप वृक्षारोपण को सफल बनाने के लिए कितने कदम उठा रहे हैं, इस प्रकार का प्रयास कर रहें है और सौभाग्य है सीआरपीएफ का कि जब इस वृक्षारोपण का

शुभारंभ आप कर रहे थे तो माननीय गृहमंत्री आदरणीय अमित शाह जी के कर कमलों द्वारा वृक्षारोपण सीआरपीएफ के कैंप में जाकर किया गया। यह भी एक बड़ा इतिहास है छोटा मोटा नही है वृक्षारोपण एक यज्ञ है। इसका कितना आगे आने वाले दिनों में प्रभाव पड़ने वाला है जिसको दुनिया महसूस भी कर रही है लेकिन सीआरपीएफ इसके लिए त्याग कर रही है इसके लिए आपका बहुत-बहुत आभार, बहुत-बहुत धन्यवाद। सिविक एक्शन के कार्यक्रमों में भी आप लगातार आगे रहते हो सीआरपीएफ के सभी अधिकारी गण,नौजवान मित्रों, सरकार की इच्छा है प्रयास है और प्रयास ही नहीं है उसमें बहुत सारे काम किए गए है। प्रधानमंत्री जी की जो इच्छा है की हमारे सीआरपीएफ के जवान साजो-सामान से सुसज्जित रहें अभी आप देख रहे थे क्यों इस भूगर्भ में लगाए गए विस्फोट के कारण सीआरपीएफ के जवानों को शहादत देनी पड़ी। नए-नए उपकरणों से, नए-नए शस्त्रों से, नए-नए वाहनों से लगातार भारत की एकता और अखण्डता के लिए प्रधानमंत्री जी के विचारों से हम लगातार प्रेरित होकर आगे बढ़ रहे हैं। आपको सुसज्जित करने की जो केंद्र सरकार की योजना है, प्रधानमंत्री जी की इच्छा है उस ओर जो माननीय गृहमंत्री जी ने प्रयास किया है कम समय में बहुत बड़े-बड़े प्रयास हुए हैं। प्रयास की इतनी बड़ी कड़ी खड़ी की गई है यहां गृह सचिव जी बैठे हैं वो तो आपको सशक्त बना ही रहे हैं। लेकिन आपके परिवार की चिंता भी हमारे माननीय गृहमंत्री जी हमेशा करते रहते हैं। कई ऐसे निर्णय लिए गए जो आपके परिवार के लिए बहुत ही महत्वपूर्ण है आपके लिए बहुत महत्वपूर्ण है हमारे गृहमंत्री जी हमेशा कहते है कि हमारा सी.ए.पी.एफ एक परिवार की तरह है उनके परिवारों की चिंता हमारी चिंता है यथा संभव जितना हो सकता है हम उनके परिवार की चिंता को दूर करने का पूरा प्रयास करेंगे और कई निर्णय लिए गए है उस निर्णय की चर्चा कई बार हुई है। निश्चित रूप से माननीय गृहमंत्री जी की चिंता आपकी चिंता से जुड़ी हुई है और हमेशा वह आपको कुछ देना ही चाहते है। जितना भरोसा आप पर करते हैं उतना ही आपको परिवार की तरह मानते भी हैं। इस देश की आशा और अपेक्षा के अनुरूप सीआरपीएफ अपनी सेवा और निष्ठा के संकल्प के साथ हमेशा निरंतर आगे बढ़ते हुए देश की आंतरिक सुरक्षा को प्रधानमंत्री जी एवं गृहमंत्री जी की इच्छा के अनुरूप करते रहेंगे हम अपने गौरवमयी इतिहास को नित नई कहानियों से नए-नए पन्नों को लिखते रहेंगे। आपके गौरवमयी इतिहास को सलाम सीआरपीएफ के जितने जवानों ने शहादत दी है, दो हजार से ज्यादा जवानों ने जो देश के लिए शहादत दी है जो वीरता का करतब दिखाया है उन सभी को सलाम। सबको हृदय से श्रद्धांजलि। माननीय गृहमंत्री जी का भी संदेश आप सभी को प्राप्त हुआ है। आप सभी नित नई सफलताओं को प्राप्त करें इसी शुभकामनाओं के साथ बहुत-बहुत धन्यवाद।

जय हिन्द। जय भारत।

दिव्यांग शूरवीरों की देखभाल

केरिपुबल– देश के सभी संवेदनशील क्षेत्रों जम्मू व कश्मीर, एलडब्लुई एरिया, पूर्वोत्तर राज्यों में आंतरिक सुरक्षा सक्रिय भूमिका निभा रहा है। हालांकि सुरक्षा के लिए सजगता और सावधानी बरतने के बावजूद देश की सेवा में केरिपुबल के शूरवीर ऑपरेशन के दौरान अपना बलिदान देते है या शारीरिक रूप से चोटिल हो जाते है। उनमें से कुछ शूरवीर अपने शरीर के महत्वपूर्ण अंग गवां देते हैं और शेष जीवन भर के लिए शारीरिक रूप से अक्षम हो जाते है। केरिपुबल के इन दिव्यांग शूरवीरों के समर्थन में डॉ. ए.पी. माहेश्वरी, महानिदेशक के कुशल नेतृत्व में पूरा बल मजबूती के साथ खड़ा है। यह बल इन दिव्यांग शूरवीरों के मन, शारीरिक और सामाजिक, आर्थिक एवं हर प्रकार की सहायता प्रदान करने के लिए तत्पर है। इसके अन्त में दिनांक 14 अगस्त 2020 को बेविनार के माध्यम से डॉ. ए.पी. माहेश्वरी द्वारा केरिपुबल के दिव्यांग शूरवीरों को निपुण और पुनर्निपुण बनाने के बारे में विस्तृत ढांचा और दिशा–निर्देश से सबंधित एसओपी जारी किया। कार्यक्रम में उपस्थित दिव्यांग शूरवीरों को सम्बोधित करते हुए महानिदेशक ने कहा कि बल की कार्य–प्रकृति इस प्रकार की है कि इसके जवानों को हमेशा चोटिल होने का खतरा बना रहता है। ऐसे में हमारा व्यवसायिक एवं नैतिक कर्तव्य है कि हम उनके साथ खड़ा रहे तथा उन्हें निपुण बनाने के लिए सार्थक प्रयास करे ताकि वे गरिमा, स्वाभिमान एवं विश्वास के साथ जीवन जी सके।

सर्वप्रथम, केरिपुबल ने आदित्य मेहता फांउडेशन के साथ करार के ज्ञापन पर हस्ताक्षर किया। उक्त फांउडेशन विकलांगों को सहायता पहुंचाने एवं मजबूत बनाने में सक्रिय भूमिका निभाती है। यह संस्था पैरा खेल के दिव्यांगों को आत्म सम्मान से जीने के लिए सहयोग करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। केरिपुबल के इस करार से ग्रुप केन्द्र, रंगारेड्डी और हैदराबाद में दिव्यांग जनों की उनकी योग्यता के अनुसार कौशल हासिल करने एंव पूर्व की भांति जीवन जीने में मदद पहुंचेगा। इस कौशल और पुनर्कौशल विकास के लिए 2 माह का कंप्यूटर प्रशिक्षण भी दिया जाएगा ताकि शारीरिक रूप से अशक्त योद्धा प्रशासनिक कार्यो में साईबर योद्धा के रूप में कार्य कर सके। यह बल दिव्यांगों को कृत्रिम अंग लगवाने का पूरा खर्चे का वहन करती है। उन्हें कृत्रिम अंग लगवाने उनकी गतिशीलता सुनिश्चित हो सकेगी।

केरिपुबल– मानवता के साथ हमेशा शूरवीरों को अपेक्षित चिकित्सा, सर्जरी, मनोवैज्ञानिक तथा आर्थिक सहारा देती है ताकि वे पूर्ण जीवन जी सके और राष्ट्र निर्माण में अपना योगदान दे सके।

केरिपुबल ने अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान (एम्स) दिल्ली के अंगदान अभियान में हाथ बढ़ाया

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल अपने राष्ट्र और राष्ट्र के नागरिकों की सेवा के लिए प्रतिबद्ध है। बल का 'सेवा और भक्ति' का आदर्श वाक्य न केवल बल की व्यवसायिक संस्कृति में सम्मिलित है बल्कि बल के कर्मियों के नैतिक ताने बाने में अन्तर्निहित है। बल के जवानों ने सभी संभव तरीकों से मानवता की सेवा के लिए बार-बार आगे आकर उदाहरण पेश किये हैं। सीआरपीएफ के आंतरिक सुरक्षा के शूरवीरों ने अपने कर्तव्यों से आगे बढ़कर अपने साथी नागरिकों की आवश्यकता पड़ने पर हर संभव मदद के लिए कदम बढ़ाये है। उन्हें चिकित्सा सहायता प्रदान की है, बड़े पैमाने पर रक्तदान कर मदद पंहुचायी है। कोविड-19 महामारी के खिलाफ लड़ाई में भी बल के शूरवीर महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। जरूरतमंद देशवासियों की सहायता के लिए अपने कर्तव्यों से आगे बढ़कर लोक केन्द्रित दृष्टिकोण अपनाने के कारण बल की चारों तरफ सराहना की जा रही है।

मृत्यु के बाद भी राष्ट्र की सेवा करने की भावना को आगे बढ़ाने के लिए एम्स, दिल्ली और ओआरबीओ के सहयोग से बल ने स्वेच्छा से अंगदान करने हेतु बल के जवानों को प्रेरित करने के लिए एक अभियान चलाया। 27 नवम्बर को राष्ट्रीय अंगदान दिवस तक बल से अधिकतम भागीदारी प्राप्त करने के उद्देश्य से डॉ. ए.पी.माहेश्वरी, महानिदेशक, सीआरपीएफ द्वारा स्वतंत्रता दिवस की पूर्व संध्या पर एक वेबिनार के माध्यम से अभियान शुरू किया गया जिसमें एम्स के निदेशक श्री रणदीप गुलेरिया, ओआरबीओ की प्रमुख डॉ. (प्रो.) आरती विज, और देश भर के बल के जवान और उनके परिवार के सदस्यों की गरिमामयी उपस्थिति में सम्पन्न हुई।

डॉ. ए.पी. माहेश्वरी, महानिदेशक, केरिपुबल, ने अपने अंग दान प्रपत्र को ऑनलाईन जमा करके इस नेक अभियान की शुरुआत की और टिप्पणी की कि केरिपुबल कर्मियों का पुनीत कार्यो में आगे आने का इतिहास रहा है जो बहुत ही गर्व का विषय है। डॉ. (प्रो) रणदीप गुलेरिया, निदेशक, एम्स ने अपने संबोधन में कई लोगों के लिए जीवन की गुणवत्ता में सुधार के लिए अंग दान की क्षमता को रेखांकित किया और अंगदान में सबसे आगे आने के लिए सीआरपीएफ की सराहना की। उन्होंने इस बल द्वारा व्यापक रूप से अभियान चलाने के लिए सीआरपीएफ को धन्यवाद दिया। ओआरबीओ की प्रमुख डॉ. (प्रो.) आरती ने अंगदान के बारें में शैक्षिक प्रस्तुति दी।

इस अभियान से लोगों में अंगदान करने के प्रति जागरूकता पैदा होगी और अंगदान के भय को दूर कर अंगदान करने के प्रयासों को बढ़ाने की स्वीकार्यता मिलेगी। एम्स के डॉक्टर केरिपुबल के डॉक्टरों के साथ मिलकर वेबिनार, सेमिनार, कार्यशाला एवं जागरूकता विडियो चलाएगें जिससे केरिपुबल के जवानों के द्वारा पुनीत और मानवीय कार्यो में भागीदारी को प्रोत्साहित किया जा सके। यह एक ऑनलाईन अभ्यास होगा जिसके द्वारा आँख, त्वचा, फेफड़े, हृदय, यकृत, अग्न्याशय, किडनी, हार्ट वॉल्व, आंत और रक्त वाहिकाएं दान करने की प्रतिज्ञा लेंगे।

केरिपुबल 55 वीरता पदकों से सम्मानित

अभी तक बहादुरी के लिए 2036 पदक

केरिपुबल- देश का सबसे बड़ा केन्द्रीय सशस्त्र पुलिस बल है जिसे स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर वीरता के लिए 55 पुलिस पदकों से अलंकृत किया गया। इसी के साथ ही अब तक शूरवीरों द्वारा अर्जित किए गए वीरता पदकों की कुल संख्या 2036 पहुंच गई है -जो देश के सभी केन्द्रीय सशस्त्र पुलिस बलों में सर्वाधिक है।

जैसा कि सरकार ने आज 74वें स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर घोषणा की है, बल के चार बहादुरों को उनके साहस, समर्पण और मातृभूमि की रक्षा के लिए वीरता के प्रतिष्ठित पुलिस पदक (मरणोपरांत) से सम्मानित किया गया है।

इन वीरता पदकों में से प्रत्येक के पीछे की कहानी उनके साहस, कर्तव्य के प्रति समर्पण, मातृभूमि के लिए मर मिटने का जज्बा और इसके अलावा कर्तव्यनिष्ठा के लिए दृढ़ संकल्प ही है जो आतंरिक सुरक्षा योद्धाओं की पहचान है।

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के एक साहसी अधिकारी श्री नरेश कुमार ने चार वर्षो के छोटे से अंतराल में वीरता के लिए अपना 7वां पुलिस पदक प्राप्त कर एक इतिहास रचा है। तेज सामरिक तीक्ष्णता और अदम्य साहस के साथ श्री नरेश कुमार ने श्रीनगर घाटी में सीआरपीएफ (QAT) का नेतृत्व किया। कई वीरता पदक के साथ आतंकवादियो के विरुद्ध अभियान में निरंतर सफलता का एक शानदार इतिहास है। यह इनकी वीरता को सुशोभित करता है। इस वर्ष घाटी की (QAT) टीम को 15 से अधिक वीरता पदक से सुशोभित किया गया है। इसके अलावा, श्रीनगर के के.रि.पु.बल. के पुलिस महानिरीक्षक श्री रविदीप सिंह शाही तथा तत्कालीन (QAT) कमाण्डर एल. इमोम्चा सिंह और उनके टीम के साथी सिपाही देवसंत कुमार को 3 अक्टूबर 2017 को श्रीनगर में ऑपरेशन के दौरान उग्रवादियों से डटकर मुकाबला करने के लिए वीरता के पुलिस पदक से सम्मानित किया गया है। इस अभियान में सुरक्षा बलों ने 2 आतंकवादियों को मार गिराया था। श्री एल. इबोम्चा सिंह के लिए यह उनका तीसरा वीरता पदक है और दूसरा वीरता के लिए पुलिस पदक है जबकि सिपाही देवसंत कुमार ने दूसरी बार वीरता के लिए पुलिस पदक प्राप्त किया है। धैर्य और साहस की एक और कहानी 208 कोबरा बटालियन से सबंधित है जहां वीर योद्धाओं की टीम ने 03/04 मार्च 2016 को सुकमा, छत्तीसगढ़ के जंगल में माओवादियों के भारी हमले के बाद बहादुरी पूर्वक जवाबी कार्रवाई की और माओवादियों को पीछे धकेल कर उनके नापाक मंसूबे को विफल कर दिया। लंबे समय तक चली इस मुठभेड़ में 09 माओवादी मारे गए जबकि 05 घायल हो गए। 208 कोबरा के तीन बहादुरों ने राष्ट्र की सेवा के लिए सर्वोच्च बलिदान दिया। ऑपरेशन के दौरान अपनी जान ज़ोखिम में डालकर माओवादियों से डटकर मुकाबला किया। उनके अदम्य साहस और वीरता के लिए 208 कोबरा को वीरता के लिए 8 पुलिस पदक से सम्मानित किया गया जिनमें से तीन को मरणोपरांत सम्मानित किया गया।

बल को मिले 55 वीरता पदकों में से 41 जम्मू व कश्मीर में ऑपरेशन के लिए दी गई है जबकि 14 छत्तीसगढ़ में माओवादियों के खिलाफ ऑपरेशन से सबंधित है। इसके अलावा सम्मान प्राप्त करने वालों में 7 ऐसे शूरवीर शामिल हैं जो एक या एक से अधिक वीरता पदक से पहले ही अलंकृत हो चुके हैं।

इसके अलावा, केरिपुबल को विशिष्ट सेवा के लिए राष्ट्रपति के पुलिस पदक = 4 और सराहनीय सेवा के लिए 59 पुलिस पदक से अलंकृत किया गया है जो केरिपुबल के साहस और प्रतिबद्धता को दोहराता है- एवं राष्ट्र के शांति प्रहरी के रूप में प्रशंसित करता है।

वीरता के लिए पुलिस पदक

शहीद सिपाही
प्रांजल पचानी

शहीद सिपाही
लाजु एन.एस.

शहीद सिपाही
फते सिंह कुदोपा

शहीद सिपाही
लक्ष्मण पूर्ति

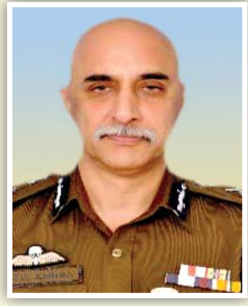
श्री अतुल करवल
भा.पु.से., एडीजी

श्री रविदीप सिंह साही
महानिरीक्षक

श्री सुमन कांत तिग्गा
उप महानिरीक्षक

संजीव कुमार सिंह
द्वितीय कमान अधिकारी

देवेन्द्र मोहन शर्मा
उप कमाण्डेन्ट

शशि कान्त राय
उप कमाण्डेन्ट

अम्बुज कुमार श्रीवास्तव
सहा. कमाण्डेन्ट

अमित कुमार कौशिक
सहा. कमाण्डेन्ट

योगेन्द्र सैन
सहा. कमाण्डेन्ट

अनुरुद्ध प्रताप
सहा. कमाण्डेन्ट

राजेन्द्र सिंह
सहा. कमाण्डेन्ट

राम किशन
सहा. कमाण्डेन्ट

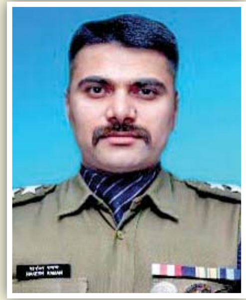

राकेश रमन
सहा. कमाण्डेन्ट

विशान्त
सहा. कमाण्डेन्ट

राजेश कुमार बरनला
सहा. कमाण्डेन्ट

नरेश कुमार
सहा. कमाण्डेन्ट

एल. इबोम्चा सिंह
सहा. कमाण्डेन्ट

अताउर रहमान
निरीक्षक

कुलदीप सिंह
उप निरीक्षक

नीतीश कुमार दुबे
उप निरीक्षक

अंकित मान
उप निरीक्षक

सन्दीप कुमार
उप निरीक्षक

विजय कुमार सिंह
उप निरीक्षक

रवि शंकर
उप निरीक्षक

देवसंत कुमार
सिपाही

गोरले जगनमोहन राव
सिपाही

मुकेश कुमार साकेत
सिपाही

हेमन्त सिंह
सिपाही

कनक रामचियारी
सिपाही

रंजन दास
सिपाही

बोरिचा हरेश भाई देशाभाई
सिपाही

इम्तियाज नासीर
सिपाही

सायर अहमद डार
सिपाही

विकास कुमार
सिपाही

रामशरण यादव
सिपाही

राणा जुल्फकार अली
सिपाही

इरशाद अहमद हजाम
सिपाही

राजु सरकार
सिपाही

सूरज कुमार
सिपाही

संदीप कुमार
सिपाही

जहाँगीर मुनावर
सिपाही

संजय कुमार कमात
सिपाही

संजय चहल
सिपाही

मनोज कुमार बारिक
सिपाही

विकास भगत
सिपाही

सुजीत ओराँव
सिपाही

जावेद अहमद डार
सिपाही

इमरान खान
सिपाही

नासीर अहमद गनी
सिपाही

नासीर अहमद शेख
सिपाही

नजीर अहमद
सिपाही

विशिष्ट सेवा के लिए राष्ट्रपति का पुलिस पदक

एनी अब्राहम
उप महानिरीक्षक, महानिदेशालय

अखिलेश प्रसाद सिंह
उप महानिरीक्षक, ग्रु.के. राँची

गुरशक्ति सिंह सोढी
उप महानिरीक्षक, श्रीनगर सेक्टर मुख्यालय

योग्यान सिंह
उप महानिरीक्षक, ऑप्स रेंज, सुकमा

सराहनीय सेवा के लिए पुलिस पदक

क्र. सं.	पदनाम	नाम	कार्यालय / यूनिट
1.	कमाण्डेन्ट	सुमंत कुमार झा	24 बटालियन
2.	कमाण्डेन्ट	पंकज सिंह	117 बटालियन
3.	कमाण्डेन्ट	वेद प्रकाश त्रिपाठी	54 बटालियन
4.	कमाण्डेन्ट	आर जय कुमार	के.रि.पु. बल अकादमी
5.	कमाण्डेन्ट	रबीश कुमार सिंह	179 बटालियन
6.	कमाण्डेन्ट	पुष्पेंद्र कुमार	100 आरएएफ
7.	कमाण्डेन्ट	धीरेन्द्र वर्मा	38 बटालियन
8.	कमाण्डेन्ट	कैलाश	झारखण्ड सेक्टर मुख्यालय
9.	सीएमओ (एसजी)	डॉ. लीना केशव	सी.एच. मुजफ्फरपुर
10.	सीएमओ (एसजी)	डॉ. मनोज कुमार सिन्हा	सी.एच. नीमच
11.	सीएमओ (एसजी)	डॉ. लॉरेंस बंदो	जी.सी. जमशेदपुर
12.	द्वि.क.अ.	मो. तारिक चिश्ती	68 बटालियन
13.	द्वि.क.अ.	हंस राज	211 बटालियन
14.	द्वि.क.अ.	प्राण कृष्ण साहू	149 बटालियन
15.	द्वि.क.अ.	राकेश कुमार श्रीवास्तव	09 बटालियन
16.	द्वि.क.अ.	तेज सिंह परिहार	रेंज मुख्यालय , नीमच
17.	उप कमाण्डेन्ट	संजय कुमार सिंह	63 बटालियन
18.	उप कमाण्डेन्ट	अनिल कुमार	सी.आई.ए.टी. शिवपुरी
19.	उप कमाण्डेन्ट	काजल कुमार मुखोपाध्याय	25 बटालियन
20.	उप कमाण्डेन्ट	के.वी. कुरियाकोस	198 बटालियन
21.	उप कमाण्डेन्ट	बुधैया रथम्मा	जी.सी. रंगारेड्डी
22.	उप कमाण्डेन्ट/मंत्रा.	नारायण कुमार शर्मा	जी.सी.- 1 अजमेर
23.	सहा. कमाण्डेन्ट/मंत्रा.	महावीर सिंह बिष्ट	महानिदेशालय
24.	सहा. कमाण्डेन्ट/पी एस	आर संथी	महानिदेशालय
25.	सहा. कमाण्डेन्ट	गणेश बाबू सिंह चौहान	234 बटालियन
26.	सिस्टर/आईसी	पी. पलानीमल	सी.एच. आवडी
27.	निरीक्षक / जी.डी.	राकेश कुमार सक्सेना	191 बटालियन
28.	निरीक्षक / जी.डी.	अब्दुल मजीद	72 बटालियन

क्र. सं.	पदनाम	नाम	कार्यालय / यूनिट
29.	निरीक्षक / जी.डी.	राम नारायण झा	32 बटालियन
30.	निरीक्षक / जी.डी.	श्री कृष्ण यादव	121 बटालियन
31.	निरीक्षक / जी.डी.	निर्मल केरकेटा	सी.टी.सी. मुदखेड
32.	निरीक्षक / जी.डी.	आर सरवण कुमार	26 बटालियन
33.	निरीक्षक / जी.डी.	एम. चंद्र सिंह	60 बटालियन
34.	निरीक्षक / जी.डी.	शबीउल हसन	218 बटालियन
35.	निरीक्षक / जी.डी.	कमलेश कुमार	जी.सी. सोनीपत
36.	निरीक्षक / जी.डी.	राम अवतार	जी.सी. पिंजौर
37.	निरीक्षक / जी.डी.	जसवंत सिंह	152 बटालियन
38.	निरीक्षक / जी.डी.	मांगी लाल पुरोहित	157 बटालियन
39.	निरीक्षक / जी.डी.	पूर्णकांत बोरा	136 बटालियन
40.	उप निरीक्षक / जी.डी.	अरुण कुमार	47 बटालियन
41.	उप निरीक्षक / जी.डी.	एस कृष्णन	जी.सी. ग्रेटर नोएडा
42.	उप निरीक्षक / जी.डी.	नीलकांत सिन्हा	जी.सी. एजीटी
43.	उप निरीक्षक / जी.डी.	राजेश चंद्र सिंह	जी.सी. अगरतल्ला
44.	उप निरीक्षक / जी.डी.	जय किशुन राम	148 बटालियन
45.	उप निरीक्षक / जी.डी.	कश्मीर सिंह	176 बटालियन
46.	उप निरीक्षक / जी.डी.	त्रिभुवन नाथ चौबे	38 बटालियन
47.	उप निरीक्षक / जी.डी.	सी.पी. श्रीधरन	42 बटालियन
48.	उप निरीक्षक / जी.डी.	ए. अशोकन	आर.टी.सी. पेरिंगम
49.	उप निरीक्षक / जी.डी.	किशन चंद	84 बटालियन
50.	सहा. उप निरीक्षक / जी.डी.	राम दुलार सिंह	आई.एस.ए. माउण्ट आबू
51.	निरीक्षक / आरओ	चेतन सिंह	4 सिग्नल बटालियन
52.	निरीक्षक / आरओ	जोस पी.एम.	2 सिग्नल बटालियन
53.	निरीक्षक / आरओ	अली मोहम्मद	5 सिग्नल बटालियन
54.	हव./कारपेंटर	सुरेंद्र शर्मा	47 बटालियन
55.	उप निरीक्षक/एम.टी.	बिमल कुमार	121 बटालियन
56.	सिपाही / कुक	राम बहादुर आचार्य	26 बटालियन
57.	सिपाही / नाई	राम अवतार	103 बटालियन
58.	सिपाही / सफाई कर्मचारी	संजय कुमार	94 बटालियन
59.	सिपाही/ धोबी	अशोक कुमार	117 बटालियन

केरिपुबल ने शूरवीरों की वीरता एवं बलिदान को याद किया

स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर मरणोपरांत पुलिस पदक से सम्मानित केरिपुबल के 4 शूरवीरों के सम्मान में महानिदेशक डॉ. ए.पी. माहेश्वरी एवं बल के अन्य वरिष्ठ अधिकारियों द्वारा केरिपुबल अकादमी–गुरूग्राम कैंप के शौर्य वन में पौधे लगाए गए थे। इस 'शौर्य वन' का उद्घाटन केन्द्रीय गृह मंत्री श्री अमित शाह ने दिनांक 12 जुलाई 2020 को किया था जिसमें वीरता पदक से सम्मानित बल के सभी बहादुरों के नाम का एक पेड़ लगाया जाएगा। केरिपुबल अपने आंतरिक सुरक्षा जांबाजों के बहादुरीपूर्ण कर्तव्य और दृढ़ निष्ठा पर गर्व करती है जिसने अपनी यश और सफलता के अलावा 2036 वीरता पदक भी हासिल किए हैं। उन्हीं के सम्मान में अकादमी में महानिदेशक द्वारा 'वीरता की दीवार' का उद्घाटन किया गया। इस दीवार पर अकादमी के उन प्रशिक्षु अधिकारियों की तस्वीरें होंगी जिन्होंने गत वर्षो में वीरता के लिए पदक प्राप्त किए हैं। वर्ष 2005 में स्थापित केरिपुबल अकादमी ने सीधे नियुक्त राजपत्रित अधिकारियों के प्रशिक्षण के केन्द्र और प्रशिक्षु अधिकारियों को योद्धाओं और कमाण्डरों के रूप में तैयार करने की ख्याति अर्जित की है जिनमें से कईयों ने अपने कर्तव्यों का लोहा मनवाया है। वर्तमान में यह दीवार 117 अधिकारियों जिन्हे 138 वीरता पदक से सम्मानित किया जा चुका है, उनकी तस्वीरों से सुसज्जित है। इनमें कीर्ति चक्र पुरस्कार विजेता श्री हर्षपाल सिंह, उप कमा., शौर्य चक्र विजेता श्री विंज पी. जोसेफ, सहा. कमा., श्री नागेन्द्र सिंह सहा. कमा., श्री चंदन कुमार सहा. कमा., श्री कुलदीप

सिंह चाहर उप कमा. और श्री विकास जाखड़ सहा. कमा. का नाम शामिल है। इसके बाद अकादमी के अरावली रेंज में बीज का हवाई छिड़काव किया गया जो आगे चलकर अकादमी के प्रकृति मनोहर पृष्ठभूमि के रूप में तैयार होगा। यह उस श्रेणी की वनस्पतियों का संवर्धन करेगा जिससे जंगल, कैंप और युद्ध कला अभ्यासों के लिए अकादमी को प्राकृतिक परिदृश्य प्रदान करेगा। यह प्रकृति संरक्षण के प्रति बल के जवानों की अटूट देशभक्ति है जिसके चलते एक माह पहले शुरू किये गये अखिल भारतीय वृक्षारोपण अभियान में 25 लाख पौधे लगाए गए थे। अरावली रेंज से अकादमी तक की वापसी की यात्रा एक पैदल यात्रा थी जोकि बल के 'फिट इंडिया' अभियान के दौरान 1 करोड़ किलोमीटर चलने/चलाने के लक्ष्य को पूरा करने में योगदान देगी।

केरिपुबल ने मनाया राष्ट्रीय खेल दिवस

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल – अपने जवानों की शारीरिक तंदुरुस्ती को विशेष महत्व देती है जिससे समग्र कार्यो के साथ-साथ परिचालनिक दक्षता एवं उत्पादकता में अभिवृद्धि होती है। बल के खिलाड़ियों की लीग में 2 पद्मश्री पुरस्कार विजेता, एक राजीव गाँधी खेल रत्न पुरस्कार विजेता, 16 अर्जुन पुरस्कार विजेता और हाल ही में मेजर ध्यानचंद लाईफ टाईम पुरस्कार प्राप्त करने वाले खिलाड़ियों के नाम शामिल होने का गौरव प्राप्त है। बल पूरे देश भर में अपनी तैनाती वाले 1600 से अधिक स्थानों पर वॉलीबॉल मैचों का आयोजन कर राष्ट्रीय खेल दिवस को बड़े उत्साह एंव जोश के साथ मना रहा है। भारतीय हॉकी के महान खिलाड़ी मेजर ध्यानचंद को समर्पित इस दिवस पर बल के महानिदेशक डॉ. ए.पी. माहेश्वरी ने कादरपुर, गुरूग्राम में स्थित केरिपुबल अकादमी का दौरा किया और वहां खेले जा रहे 3-ए साईड वॉलीबॉल मैच का उद्घाटन किया। दो बार ओलंपियन रह चुके भारतीय खेल जगत के नायक श्री सुशील कुमार इस सुअवसर पर सम्मानित अतिथि के रूप में पधारे। घनिष्ठ सबंध बनाने के साथ ही सीआरपीएफ अपने कैंप परिसरों के आसपास निवासरत जन समुदायों की केरिपुबल 'फिट इंडिया' एवं 'खेलो इंडिया' अभियान में भागीदारी सुनिश्चित कर रही है। मैचों को देखने के बाद बल के महानिदेशक ने कहा कि यही टीम भावना ही खेलों में जीत दिलाती है और ऑपरेशन में फोर्स को सफलता दिलाती है। यह शारीरिक फिटनेस के लिए बल की प्रतिबद्धता दर्शाता है कि केरिपुबल ने 'फिट इंडिया' अभियान में 1 करोड़ किलोमीटर चलने/

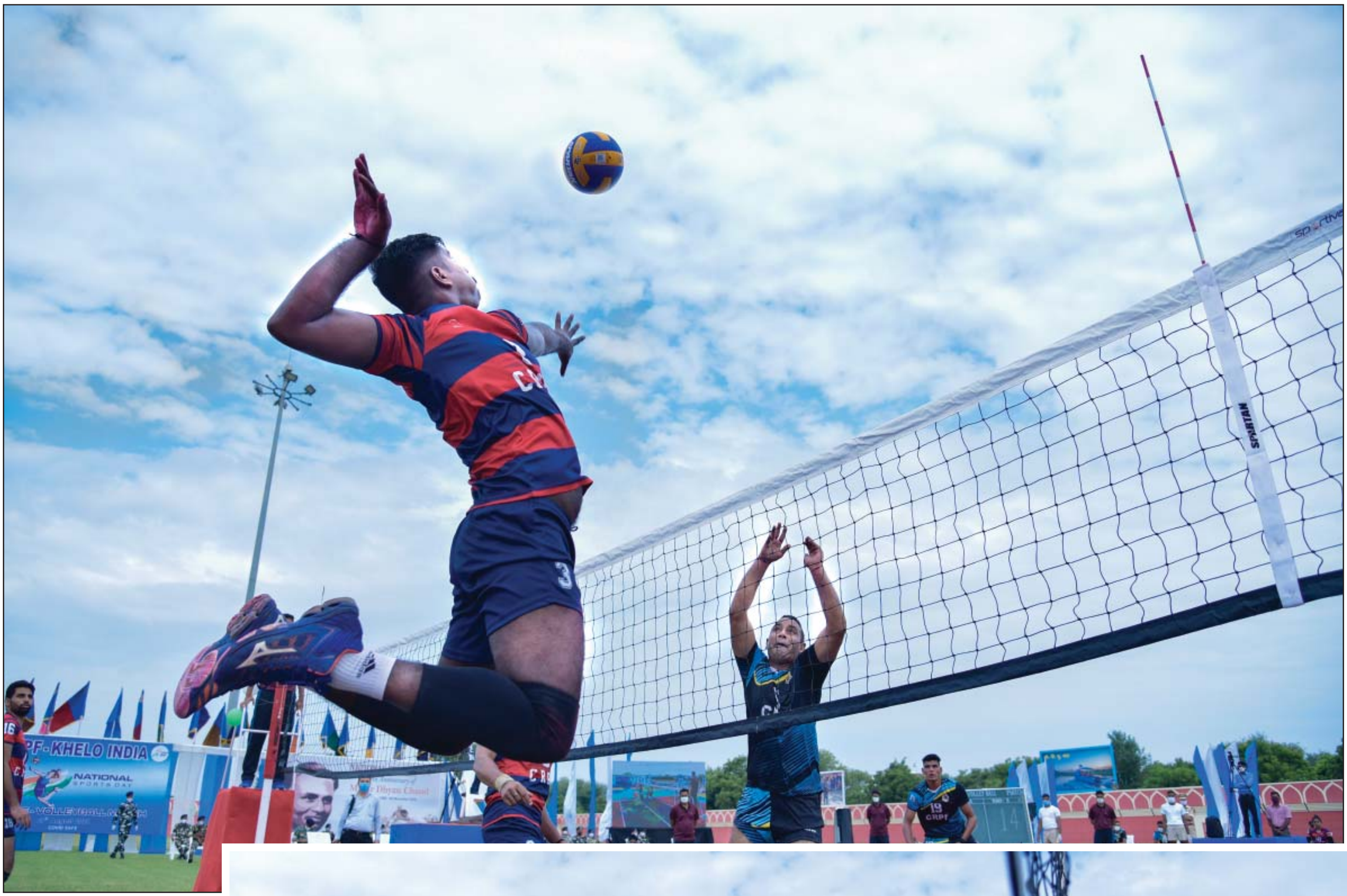

चलाने का लक्ष्य रखा है तथा कैंप के आसपास निवासरत आम लोगों की भागीदारी बढ़ाने का बीड़ा उठाया है। कुछ ही दिन पहले बल ने आदित्य मेहता फांउडेशन के साथ पैरा-स्पोर्टस में अपने दिव्यांग शूरवीरों को प्रशिक्षित करने और उनको कुशल बनाने के लिए एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किया है ।

गंगबल यात्रा

अमरनाथ यात्रा की तरह, गंगबल यात्रा (नारानाग) भी गांदरबल जिले की प्रसिद्ध यात्रा है। हर वर्ष की भाँति, तीर्थयात्रियों का समूह, जिसमें ज्यादातर शरणार्थी कश्मीरी पंडित होते हैं। जैसा कि इतिहासकार बताते हैं कि भगवान शिव को समर्पित गांदरबल जिले का नारंग मंदिर 8वीं शताब्दी में कायस्थ नागा करकोटा वंश के राजा ललिता दिया मुखता पिडा के द्वारा बनवाया गया है। उस मंदिर में पूजा करने के बाद तीर्थयात्री इस पवित्र स्थल से पैदल यात्रा शुरू करते हैं। नारानाग मंदिर नालाह सिंधा के आसपास और जिला-गांदरबल (जम्मू व कश्मीर) के कंगन से 14 किलोमीटर और श्रीनगर से 55 किलोमीटर की दूरी पर अवस्थित है। नारानाग मंदिर हर साल ग्रीष्म काल के दौरान अगस्त और सितम्बर के महीने में कश्मीरी पंडितो के दर्शन के लिए खोला जाता है। हर साल गांदरबल जिला प्रशासन कश्मीरी पंडितों के लिए गंगबल यात्रा की व्यवस्था करता है। सुरक्षाबल यानि कि केरिपुबल, सेना और स्थानीय पुलिस की टुकड़ियाँ गंगबल यात्रा के श्रद्धालुओं (कश्मीरी पंडित) को पूर्ण सुरक्षा प्रदान करती है। सुरक्षा बलों द्वारा सुरक्षा प्रदान किये गए कश्मीरी पंडित नारानाग पहुँच रहे हैं। गंगा अष्टमी के शुभ अवसर पर व्यक्तिगत श्रद्धा के

साथ तीर्थ यात्रियों का आना शुरू हो गया है। जम्मू और कश्मीर में शीघ्र शांति बहाली के लिए तीर्थ यात्रियों ने विशेष पूजा अर्चना की। राजसीहरमुख पर्वत की तलहटी में स्थित गंगबल झील लगभग 3.5 किलोमीटर लंबी, आधी किलोमीटर चौड़ी और 80 मीटर गहरी है। कश्मीरी हिन्दू अपने रिश्तेदारों के नश्वर अवशेषों को गंगबल में समय-समय पर विसर्जित करते है। 118 बटालियन की 'डी' कम्पनी, श्री रूपराम मीणा, सहायक कमाण्डेंट की कमान में और श्री पी.के. साहू, द्वि. क. अधि. (ऑप्स) एंव श्री ए.के. ध्यानी, कमाण्डेंट के समग्र पर्यवेक्षण में तीर्थयात्रियों की सुरक्षा प्रदान करने के लिए दिनांक 24/08/2020 से 27/08/2020 तक तैनात रही। दिनांक 25/08/2020 को श्री देविन्दरजीत सिंह, पुलिस उप महानिरीक्षक, श्रीनगर उत्तरी, श्री अनिल कुमार ध्यानी, कमाण्डेंट 118 बटालियन ने उक्त स्थानों की सुरक्षा संबंधी तैनाती की जांच के लिए दौरा किया। उक्त गंगबली यात्रा की पूर्ण सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए डी/118 के कार्मिकों ने बेहतर समन्वय बनाते हुए प्रभावकारी तरीके से अपने कर्तव्यो को बखूबी निभाया जिसके परिणामस्वरूप उक्त यात्रा सुचारू रूप से और शांतिपूर्वक सम्पन्न हुई। उक्त यात्रा को सफल बनाने के लिए 118 बटालियन के जवानों के द्वारा की गई कड़ी मेहनत की जिला प्रशासन, पुलिस और तीर्थयात्रियों ने भूरि-भूरि प्रशंसा की।

वृक्षारोपण अभियान-2020

पश्चिमी सेक्टर एक नजर में

संजय आ. लाठकर, भा.पु.से.
महानिरीक्षक, पश्चिमी सेक्टर

पेड़-पौधों की कीमत अमूल्य है। ये हमारी पृथ्वी, इस पर रहने वाले जीव-जंतुओं और मनुष्यों के लिए अनमोल धरोहर हैं। इनसे ही हमारा जीवन है। हमारे देश की संस्कृति एवं सभ्यता वनों में ही पल्लवित तथा विकसित हुई है। वृक्षारोपण से प्रकृति का संतुलन बना रहता है। वृक्ष अगर ना हो तो सरोवर में ना जल होगा और ना ही नदियों की कल-कल की ध्वनि गुंजायमान होगी। वृक्षारोपण मूल रूप से पौधे को पेड़ का रूप देने की प्रक्रिया है। बढ़ते पर्यावरण प्रदूषण को रोकने तथा धरती को प्रदूषण मुक्त करने के लिए हमें पेड़-पौधों की रक्षा तथा उनके नवरोपण की ओर ध्यान देना चाहिए।

▲श्री संजय आ. लाठकर, भा.पु.से., महानिरीक्षक पश्चिमी सेक्टर दिनांक 12/07/2020 को तलोजा (नवीं मुम्बई) में पौधारोपण करते हुए।

वृक्षारोपण की प्रतिबद्धता

केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल द्वारा देश की कानून व व्यवस्था बनाए रखने के दायित्वों के साथ-साथ पर्यावरण संरक्षण के लिए विभिन्न अभियानों का हिस्सा बनकर अपनी जिम्मेदारियों का निर्वहन बखूबी ढंग से किया जा रहा है। वर्तमान परिदृश्य में कोरोना महामारी की विकट परिस्थिति है तथापि बल की दिनचर्या व गतिविधियों में कोई कमी नहीं आयी है। जुलाई और अगस्त का महीना मानसून का महीना होता है और ऐसे में पश्चिमी सेक्टर केरिपुबल पर्यावरण संरक्षण के प्रति महाराष्ट्र व गुजरात राज्यों में वृक्षारोपण अभियान को लेकर बहुत उत्सुक रहता है।

इस वर्ष गृह मंत्रालय, भारत सरकार के दिशा-निर्देशों के अनुसरण में बल के महानिदेशक डॉ. ए.पी. माहेश्वरी, भा.पु.से. द्वारा बल के विभिन्न सेक्टरों/संस्थानों के वृक्षारोपण के लिए समयबद्ध लक्ष्य निर्धारित किए गए। इसी क्रम में, पश्चिमी सेक्टर के लिए कुल 1,25,000 पौधे लगाने का लक्ष्य दिया गया जिसे पूर्ण करने के लिए 20 जुलाई, 2020 की समय-सीमा तय की गई थी। पश्चिमी सेक्टर ने महानिदेशक महोदय के निर्देशों को एक संकल्प की तरह लेते हुए निर्धारित समय-सीमा से पहले ही अर्थात दिनांक 05 जुलाई, 2020 तक दिए गए लक्ष्य पूर्ण कर लिया।

कार्यालय	पौधारोपण हेतु निर्धारित लक्ष्य	कुल रोपित पौधों की संख्या	प्रतिशत
ग्रुप केंद्र गाँधीनगर	35,000	37,100	106
ग्रुप केंद्र नागपुर	35,000	37,000	105.71
ग्रुप केंद्र पुणे	35,000	38,000	108.57
135(महिला) बटा.	10,000	12,000	120
242 बटा.	10,000	12,000	120
कुल	**1,25,000**	**1,36,100**	**108.88**

इसके अतिरिक्त, पश्चिमी सेक्टर के परिचालनिक क्षेत्राधिकार के अंतर्गत स्थित 01-कोबरा बटालियन, 02-द्रुत कार्य बल बटालियन एवं 02-प्रशिक्षण संस्थानों के लिए भी महानिदेशालय द्वारा लक्ष्य निर्धारित किए गए एवं निर्धारित लक्ष्य को पूर्ण किया जा चुका है-

कार्यालय का नाम	वृक्षारोपण हेतु निर्धारित लक्ष्य	कुल रोपित पौधों की संख्या	प्रतिशत
केंद्रीय प्रशिक्षण महाविद्यालय, मुदखेड़	31,250	33,250	106.4
रंगरूट प्रशिक्षण केंद्र लातूर	31,250	33,250	106.4
100 बटा. द्रु.का.बल	20,000	22,000	110
102 बटा. द्रु.का.बल	20,000	24,000	120
206 कोबरा बटा.	20,000	22,050	110
कुल	1,22,500	1,34,550	109.83

परिचालन रेंज गढ़चिरौली एवं उनकी परिचालनिक बटालियनों द्वारा बिना किसी निर्धारित लक्ष्य के स्वेच्छा से वृक्षारोपण का आयोजन करते हुए 30,195 पौधे लगाए गए हैं जो पर्यावरण संरक्षण के प्रति उनकी दृढ़ इच्छाशक्ति को दर्शाता है।

कार्यालय	वृक्षारोपण हेतु निर्धारित लक्ष्य	कुल रोपित पौधों की संख्या
परिचालन रेंज, गढ़चिरौली	शून्य	1380
09 बटा.	शून्य	12100
37 बटा.	शून्य	4000
113 बटा.	शून्य	4015
191 बटा.	शून्य	4700
192 बटा.	शून्य	4000
	कुल	30,195

उपर्युक्त विवरणों से विदित है कि पश्चिमी सेक्टर द्वारा निर्धारित लक्ष्य से अधिक लगभग 121.55 प्रतिशत पौधों का रोपण किया गया है जो इस सेक्टर के कार्मिकों व अधिकारियों की पर्यावरण के प्रति संवेदनशीलता व उनकी मेहनत की बदौलत संभव हो पाया है।

अखिल भारतीय वृक्षारोपण अभियान

माननीय श्री अमित शाह, गृह मंत्री, भारत सरकार द्वारा दिनांक 12 जुलाई, 2020 को केंद्रीय सशस्त्र पुलिस बलों द्वारा चलाए जा रहे अखिल भारतीय वृक्षारोपण अभियान की शुरूआत ग्रुप केंद्र केरिपुबल गुरूग्राम, हरियाणा में एक पौधा लगाकर की गई। उसी समय केरिपुबल के अन्य कार्यालयों के साथ-साथ पश्चिमी सेक्टर के सभी संस्थानों/बटालियनों द्वारा भी 30,000 पौधे लगाए गए। इसी कड़ी में पश्चिमी सेक्टर मुख्यालय केरिपुबल नवीं मुंबई द्वारा 102 बटा. द्रुत कार्य बल, तलोजा नवी मुंबई के कैम्प परिसर में वृक्षारोपण कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमें विभिन्न किस्मों के 2,000 पौधे लगाए गए। अब तक पश्चिमी सेक्टर के परिचालनिक क्षेत्राधिकार के अंतर्गत आने वाले संस्थानों/बटालियनों द्वारा विभिन्न किस्मों के 3,02,845 पौधे लगाए गए हैं।

▲ श्री संजय कुमार, उप महानिरीक्षक व अन्य दिनांक 12/07/2020 को ग्रुप केंद्र नागपुर में पौधारोपण करते हुए।

गड्ढों की तैयारी

▲ 206 कोबरा बटा. के अधिकारी व जवान दिनांक 12/07/2020 को भंडारा जिले में पौधारोपण करते हुए।

पश्चिमी सेक्टर के परिचालनिक क्षेत्राधिकार के अंतर्गत महाराष्ट्र व गुजरात राज्यों में स्थित बटालियनों/कार्यालयों द्वारा पेड़ लगाने के लिए पहली आवश्यकता के अनुरूप गड्ढों की खुदाई की तैयारियाँ जून महीने में ही शुरू कर दी गई थी ताकि वर्षा प्रारंभ होते ही पौधे लगा दिए जाएं। इससे पौधों के जीवित रहने की संभावना अधिक रहती है। सेक्टर में खोदे गए गड्ढों की संख्या कुछ इस प्रकार से है:-

महीना	जून, 2020	जुलाई, 2020	अगस्त, 2020
गड्ढों की संख्या	1,42,791	1,59,759	300

रोपे गए पौधे

सभी संस्थानों व कायार्लयों द्वारा विभिन्न चरणों में वृक्षारोपण कार्यक्रमों का आयोजन किया गया जिसमें बल के अधिकारियों व कर्मचारियों के साथ-साथ महिलाओं, बच्चों एवं आम नागरिकों ने भी बड़े उत्साह के साथ भाग लिया तथा पर्यावरण के प्रति अपना संकल्प व्यक्त किया। इस दौरान लगाए गए पौधों का विवरण कुछ इस प्रकार है:-

महीना	जून, 2020	जुलाई, 2020	अगस्त, 2020	कुल
रोपे गए पौधों की संख्या	1,40,731	1,60,119	2000	3,02,850

▲ 192 बटा. द्वारा गढ़चिरौली में आयोजित वृक्षारोपण कार्यक्रम में शामिल बच्चे पौधारोपण करते हुए।

▲ ग्रुप केंद्र नागपुर परिसर में महिलाएं पौधारोपण करती हुईं।

भागीदारी

▲ 37 बटा. के अधिकारी व जवान दिनांक 12/07/2020 को अहेरी, गढ़चिरौली में पौधारोपण करते हुए।

अगर इस वृक्षारोपण अभियान की सफलता पर एक दृष्टि डाली जाए तो इसमें बल के अधिकारी और कर्मचारियों सहित बड़ी संख्या में आम नागरिक, महिलाओं और बच्चों की भागीदारी रही जो निस्संदेह बधाई के पात्र हैं। उनकी भागीदारी का विवरण कुछ इस प्रकार है-

महीना	आम नागरिक	महिलाएं	बच्चे	बल के सदस्य	रोपे गए पौधों की संख्या
जून, 2020	328	111	311	3004	1,40,731
जुलाई, 2020	181	94	124	3205	1,60,119
अगस्त, 2020	-	-	-	210	2,000
कुल					3,02,850

वृक्षारोपण के स्थल

▲ 113 बटा. के अधिकारी व जवान पौधारोपण करते हुए।

▲ 192 बटा. द्वारा आयोजित वृक्षारोपण कार्यक्रम में स्थानीय विद्यालय के शिक्षकगण पौधारोपण करते हुए।

पश्चिमी सेक्टर के परिचालनिक क्षेत्राधिकार के अंतर्गत गुजरात व महाराष्ट्र राज्य में स्थित बल के कार्यालयों/बटालियनों द्वारा पौधारोपण का यह कार्यक्रम न सिर्फ कैंप में चलाया गया बल्कि कैंप के आसपास के इलाकों व अन्य स्थानीय क्षेत्रों में भी आयोजित किया गया जिसमें स्थानीय क्षेत्रों के प्रतिनिधि भी शामिल हुए। कैंप परिसर के अतिरिक्त बाहर के स्थानीय क्षेत्रों में आयोजित किए गए वृक्षारोपण कार्यक्रम संबंधी कुछ प्रमुख स्थलों का ब्यौरा इस प्रकार है:-

महीना	स्थान	रोपे गए पौधों की संख्या
जून, 2020	नागपुर जिले में - गॉव खैरीखुर्द	13550
	गढ़चिरौली जिले में - एमआईडीसी गढ़चिरौली, प्राथमिक शाला धोंडराज, नारगुन्डा, कोठी जिला परिषद, वडसा, हालेवारा, कोटमी, हेडरी, कसनसुर, एटापल्ली, धानोरा बाजार, बाजार, धानोरा बस स्टैण्ड एवं स्कूल मार्ग, कैंप परिसर के आसपास इत्यादि।	6173
	गाँधीनगर में - माधवगढ़ फाइरिंग रेंज गाँधीनगर, लेखवाड़ा गाँव, सादरा एवं आलमपुर गाँव।	29500
	लातूर में - महादेवनगर, लातूर, खेड़ापुर व वन संरक्षित चिंचोलीराववाडी।	15743
	अहमदाबाद में - निरोल वार्ड, हाथीजन, विवेकानंद नगर।	11238
	नवी मुंबई में - भंडारली कल्याण फाटा, एमआईडीसी पनवेल	11050
जुलाई, 2020	बालिका विद्यालय भामरागड, मॉडल टाउन अहेरी, एस आई एवं कामर्स कॉलेज, एमआईडीसी गढ़चिरौली, वडसा, हालेवारा, कोटमी, हेडरी, कसनसुर, एटापल्ली	9853
	लातूर में - वन संरक्षित चिंचोलीरावबाडी लातूर	7980
	अहमदाबाद में - गन्नाड, हाथीजन अहमदाबाद	3122
	नवी मुंबई में - भंडारली कल्याण फाटा, एमआईडीसी पनवेल, सिलफाटा के नजदीक पहाड़ी, कल्याण।	13000
	गांधीनगर में - लेखवाड़ा गॉव, सादरा एवं आलमपुर गॉव।	2000

पौधों की किस्म

वृक्षारोपण के इस अभियान में पश्चिमी सेक्टर के विभिन्न कार्यालयों द्वारा अलग-अलग स्थानों पर विविधताओं से भरे हुए सैकड़ों किस्मों के पौधे लगाए गए हैं। इनमें से कुछ प्रमुख किस्मों के बारे में आंकड़ों का उल्लेख आगे किया गया:-

फलदार वृक्ष

नाम	संख्या
आम	909
जामुन	16344
अनार	675
अमरूद	340
इमली	11139
बेल	1405
सीताफल	1795
सहजन	485
आँवला	670
महुआ	875
कटहल	824

छायादार वृक्ष

नाम	संख्या
पीपल	1900
नीम	22517
बरगद	1865
अमलतास	1921
गुलमोहर	12277
महोगनी	209
करंज	8905
अर्जुन	4090
अशोका	4641

इमारती वृक्ष

नाम	संख्या
शीशम	6197
सागवान	1400
चिचवा	750
बाँस	2041
खेर	2300
बबूल	5750

▲ 37 बटा. द्वारा आयोजित वृक्षारोपण कार्यक्रम में आम नागरिक पौधारोपण करते हुए।

निगरानी व्यवस्था

यहाँ पर यह उल्लेख करना समीचीन होगा कि इन लगाए गए पौधों की सतत् निगरानी की व्यवस्था की गई है और उसकी देखभाल के लिए कंपनी स्तर पर टोलियों का गठन किया गया है जो लगाए गए पौधों की निरंतर देखभाल करते हैं। इस कार्य में कुछ कार्यालयों द्वारा जो कैंप परिसर के बाहर पौधे लगाए गए हैं उनकी निगरानी के लिए स्थानीय लागों की भी मदद ली जा रही है। समय-समय पर पौधों में जैविक खाद भी डाली जा रही है और गुड़ाई की जाती है। जो पौधे किसी कारणवश सूख जाते हैं उनके स्थान पर नए

▲ ग्रुप केंद्र पुणे द्वारा आयोजित वृक्षारोपण कार्यक्रम।

▲ ग्रुप केंद्र गाँधीनगर द्वारा आयोजित वृक्षारोपण कार्यक्रम।

पौधे लगाने का भी प्रबंध किया गया है। दृष्टांतस्वरूप, वृक्षारोपण के इस अभियान के दौरान लगाए गए पौधों में से 9537 पौधे सूख गए थे या किसी कारणवश मृत हो गए थे उनके स्थान पर 9537 नए पौधे लगा दिए गए हैं।

जन संदेश

बल के विभिन्न कार्यालयों द्वारा चलाए गए इस वृक्षारोपण कार्यक्रम की स्थानीय प्रशासन तथा आम नागरिकों द्वारा प्रशंसा की गई तथा समाचार पत्रों में भी केरिपुबल के पर्यावरण के प्रति इस जागरूकता कार्यक्रमों को अनुकरणीय पहल बताते हुए सराहना की गई है।

▲ परिचालन रेंज, गढ़चिरौली में आयोजित वृक्षारोपण कार्यक्रम में पेड़ लगाती महिला।

केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल ने देश की आंतरिक सुरक्षा व कानून व्यवस्था की ड्यूटियों के साथ-साथ धरती को भी हरा-भरा बनाने और पर्यावरण को संरक्षण देने का बीड़ा उठाया है। महानिदेशक, केरिपुबल ने इस वर्ष देश भर में 22 लाख पेड़ लगाने का लक्ष्य रखा है। बल के महानिदेशक के इस पहल की भारत के प्रधानमंत्री ने प्रशंसा करते हुए 'अंतरराष्ट्रीय पर्यावरण दिवस' के मौके पर केरिपुबल को 'पर्यावरण योद्धा' (नेचर वॉरियर) की संज्ञा दी है। यह बल के लिए अत्यंत गौरव की बात है एवं इसका पूरा श्रेय बल के वीर जवानों को जाता है जिन्होंने हर चुनौतियों का सामना पूरी दक्षता, निष्ठा और कर्तव्यपरायणता के साथ किया है।

वृक्षारोपण से ही पृथ्वी पर सुख-चैन है
इन्हें लगाओ, जीवन का एक महत्वपूर्ण संदेश है।

भाषा पर अधिकार के लिए शब्दों के मूल को समझना जरूरी है

भाषा संवाद का प्रमुख साधन है। भाषा के माध्यम से ही हम अपनी बातों को दूसरे तक पहुंचाते है। इसलिए भाषा का ज्ञान रखना बहुत आवश्यक हो जाता है। शब्दों के मूल अर्थों को जानने का अध्ययन अत्यन्त रोचक और आश्चर्य से भरा हुआ है। प्राय: मन में यह जिज्ञासा उठती है कि शब्द अपने मूल रूप में क्या अर्थ रखते होंगे प्रारंभिक काल में उनका अर्थ क्या था? जब यह पता चलता है कि शुरू में उनका अर्थ वर्तमान अर्थ से भिन्न है तो अचम्भा होता है। संस्कृत में मृगया में मृग शब्द किसी भी पशु का अर्थ देता था, चूँकि राजा लोग पशुओं में हिरण का शिकार करना अधिक पसन्द करते थे अत: शिकार या आखेट के लिए मृगयां शब्द का प्रयोग संस्कृत भाषा में अत्यधिक प्रयुक्त होने लगा ।

(DUNCE) मन्द बुद्धि को कहा जाता है जबकि DUNCE अत्यन्त बुद्धिमान व्यक्ति था। DUNCE का पूरा नाम जान डंस स्काट्स था। उस के छात्र उसकी तरह चतुर और प्रवीण नहीं थे। डंस के शिष्यों को डंस मैन कहा जाता था। मूर्ख की तरह व्यवहार करने वाले को डंस नाम दिया गया। वे उसी प्रकार प्रसिद्ध हुए जैसे महान अरस्तू के नाम से मूर्ख व्यक्ति को अरस्तू का अवतार कहा जाता है।

अंग्रेजी में 'एराइव' पहले सागर 'तट की ओर' के लिए प्रयुक्त होता था। लैटिन में एडीपारा (Adepara) शब्द मिलता है अर्थात् Ad+rip (की ओर+तट) ripa शब्द ripples (लहरें) के भी निकट है। 'एराइव' शब्द का प्रयोग सागर के तट पर नौका पहुँचने के लिए किया जाता था। बाद में प्रयोग करते-करते इसका अर्थ जमीन पर गंतव्य-स्थान तक पहुँचने के लिए किया जाने लगा। अब तो अंतरिक्ष यान के चाँद पर पहुँचने के लिए भी इसका प्रयोग किया जाता है ।

अरविन्द कुमार सिंह, नि./अनु.
जन संपर्क शाखा, महानिदेशालय

'अकादमी' शब्द का इतिहास अत्यन्त रोचक है। एकाडमस नामक व्यक्ति इसलिए इतिहास प्रसिद्ध है कि उसने हेलन आफ ट्रॉय के भाईयों को उस स्थान के बारें में बताया था जहाँ हेलन को अपहरण के बाद छिपा कर रखा हुआ था। (प्लेटो अपने विद्यार्थियों को एथेन्स में जहाँ पढ़ाते थे एकाडिमिया Akademia के बिल्कुल पास था। और उक्त एकाडमस यहाँ रहता था। अंग्रेजी में 15वीं शताब्दी में यह अकादमी शब्द 'उच्च अध्ययन के स्थान' के लिए बहुत अधिक प्रयुक्त होने लगा। 17वीं शताब्दी तक आते-आते वह संस्था या समूह जो अध्ययन के लिए अत्यधिक समर्पित रहता है और जहाँ कला व विज्ञान की शिक्षा दी जाती है उसके लिए अकादमी शब्द का प्रयोग होने लगा जैसे 'अमेरिकन अकादमी ऑफ आर्ट्स एंड लैटर्स', 'साहित्य अकादमी' आदि ।

पुरानी अंग्रेजी में bedu और आधुनिक शब्द 'bead' का मूल अर्थ अनुरोध करना या अनुनय-विनय करना था। बाद में अपने देवता के समक्ष प्रार्थना करने के लिए यह शब्द चल पड़ा। 14वीं शताब्दी तक आते-आते यह शब्द प्रार्थना करने के साधन मालो के मनकों के लिए प्रयुक्त होने लगा। To tell one's beads का अर्थ to count one's prayer लिया जाने लगा। समय के साथ अर्थ बदला। आजकल 'बीड' शब्द लकड़ी, कॉंच, पत्थर या

धातु की गोल छोटी वस्तु के लिए प्रयोग किया जाता है, चाहे वह धार्मिक कार्य के लिए प्रयुक्त हो या नहीं या उसमें छेद हो अथवा नहीं ।

Beri-Beri 'सिंहली भाषा में' बेरी शब्द का अर्थ कमजोर है। दो बार बेरी शब्द का प्रयोग तीव्रता का सूचक है। बेरी-बेरी रोग 19वीं शताब्दी में कुपोषण के कारण श्रीलंका व पूर्वी देशों में फैला जब चावलों की पिसाई होने पर उनमें विटामिन बी की कमी हो गई 'अत्यधिक कमजोरी' अर्थ से इसका अर्थ बदलकर एक विशेष रोग हो गया ।

कैमिस्ट्री शब्द को पहले अलकीमि या Alchemy कहा जाता था। यह शब्द अरबी से आया है। इसका उद्‌गम वस्तुत: इससे भी पहले मिश्र या यूनान में हुआ है। भाषाविद् इस शब्द की यात्रा पर परस्पर असहमत है। पहले सोना बनाने के लिए कुद मिश्रण किया जाता था। इसे कीमियागरी कहा जाता था। अल कैमिस्ट्री में अल शब्द श्री का अर्थ देता है। बाद में 'अल' शब्द का प्रयोग छूट गया सिर्फ कैमिस्ट्र कहलाता है। फार्मेसिस्ट और ड्रगिस्ट अब भेषजविद और औषधि-निर्माता रसायनविद 'कैमिस्ट' कहलाते है। औषध-विक्रेता को भी कैमिस्ट कहा जाता है ।

क्लेरिक और क्लर्क शब्द की व्युत्पति अत्यन्त रोचक है ग्रीक के KLERIKOS शब्द से यह व्युत्पत्ति हुई है। विरासत में हिस्सा होना इसका अर्थ है। इसाई मत में क्लर्क उस व्यक्ति को कहा जाता है जिसका अभिषेक किया जाता था। बाद में पढ़े-लिखे व्यक्ति को क्लर्क कहा जाने लगा। आज कार्यालयी कामकाज करने वाला क्लर्क कहा जाता है जबकि अमेरिकन अंग्रेजी में सेल्स मैन क्लर्क कहलाता है जिसके पास भरतीय संदर्भो में कोई क्लेरिकल काम नही है।

कांस्टेबल अस्तबल के सेवक को कहा जाता था। कांस्टेबल में स्टेबल शब्द अस्तबल का द्योतक है। बाद में उच्च रैंक के अफसर को कान्स्टेबल कहा जाने लगा। अब इसका अर्थ शान्ति स्थापित करने के लिए नियुक्त पुलिसकर्मी है। अमेरिका में सरकारी तंत्र में छोटे अधिकारी को कान्स्टेबल कहा जाता है और भारत में भी ।

Coquette (कॅकेट) नखरेबाज को कहते है। पहले छोटे मुर्गे को कॅकेट कहा जाता था। इश्कबाज व्यक्ति को जो उसी प्रकार प्रेम का दिखावा करता है जैसे मुर्गा मुर्गी को अपनी ओर आकर्षित करता है। बाद में पुरूष, स्त्री दोनों के लिए कॅकेट शब्द प्रयुक्त होने लगा। 18वीं शताब्दी से यह शब्द केवल प्रेम प्रदर्शन करने वाली स्त्री के लिए प्रयुक्त हुआ ।

Electric, electron शब्द का मूल अर्थ अत्यन्त रोचक है। चन्द्रमा शब्द elekris, elector चमकने वाले सूर्य के लिए प्रयुक्त किया जाता था। सोना, चाँदी धातुओं के लिए electrum शब्द का प्रयोग हुआ। धातु विज्ञानी अन्य धातुओं जैसे ताँबा, निकल, जिंक, सोने , चॉदी जैसे समान चमक देती है उसके लिए इस शब्द का प्रयोग करते हैं ।

Owl शब्द का अर्थ भी बड़ा रोचक है जिसे हिन्दी में उल्लू जो पक्षी का नाम है लंबे समय तक पश्चिमी पौराणिक कथाओं में जादू और जादूगरी से जुड़ा हुआ है और ज्ञान का प्रतीक माना जाता है जबकि भारत में किसी को मूर्खता के साथ जोड़कर बोला जाता है। जापान में विशेष अर्थ रखता है उसे वहां अच्छे भाग्य और भाग्य के प्रतीक के रूप में देखा जाता है ।

इसी प्रकार से हिंदी शब्द जो मूलत: संस्कृत से उत्पन्न रहती होते हैं वे कालखंड एवं सामाजिक परिस्थिति के अनुसार उत्पन्न होते है। **'कुश'** शब्द की उत्पत्ति पूजा पाठ के दौरान कुश का प्रयोग होता है। 'कुश' बहुत ही तीखा होता है। तो कुश को उखाड़ कर लाने के लिए होशियार व्यक्ति को भेजा जाता था जो उखाड़ कर ला सके। आगे चलकर 'कुश' शब्द से कौशल बना जिसे अंग्रेजी में skill कहा जाता है। भारत में हम मेहमान का गर्मजोशी के साथ हार्दिक स्वागत करते है जिसे अंग्रेजी में Warm welcome कहा जाता है। इस शब्द की व्युत्पत्ति इंग्लैड में इस परिवेश में हुई कि वहां सर्दी बहुत ज्यादा पड़ती है और मेहमान के आने पर उन्हे गर्म पेय पदार्थ कॉफी/चाय दी जाती थी इसलिए वार्म वेलकम बोला जाता था। Panacea-रामबाण। रामजी के बाण की तरह तेज और तीखा जो पेड़ो को छेदते हुए बाली को

मारकर वापिस आ जाए। 'वेतन' (Salaries) शब्द नमक के महत्व का एक निरंतर अनुस्मारक है। रोमन दिग्गजों को एक सेलेनियम नमक भत्ता दिया गया था। बाद में इस शब्द का मतलब नमक खरीदने के लिए नकद भत्ते से था। यह अपने वर्तमान के लिए छोटा सा कदम था। उसी प्रकार Leaf=पत्र। बेलपत्र, तुलसी पत्र/पत्ता। Now letter means पत्र हो गया। कुछ शब्द जो बाहर से आये और भारतीय संस्कृति में घुल-मिल गए। कुछ शब्दों का हम प्रयोग तो करते हैं लेकिन उसकी बारीकियों पर ध्यान नहीं देते हैं ।

पावरोटी- पाव पूर्तगाल से आया और महाराष्ट्र में रोटी जुड़कर पावरोटी हो गया जो दिल्ली मे Double bread हो गया। श्री श्री 108 कृपा जी महाराज बोलते है इसके पीछे अर्थ है कि 27 नक्षत्रx7 दिशा=108 शागिर्द (Disciple) - शिष्य होता है जबकि लोग इसे साथी के रूप में प्रयोग कर रहे हैं वह गलत है। अवकाश (Holiday)-सरकारी कार्यालय बंद होते हैं। 1881 में Negotiable Instrument Act पराक्रम्य लिखित अधिनियम के लागू होने से रविवार को अवकाश शुरू हुआ। अवकाश एवं छुट्टी (Leave) में थोड़ा अन्तर है। (Leave) छुट्टी = जो ली जाती है और उस दिन कार्यालय खुला रहता है। लेकिन कार्यालयों में कई जगह इसकी बारीकियों पर ध्यान नहीं दिया जाता हैं। गणतंत्र (Republic) गण+प्रतिनिधि = विशिष्ट व्यक्ति। जन = 135 करोड़ जनसंख्या, गण = प्रतिनिधि = 545 गण। 135 करोड़ - 545 जिसको चुनते है वह Republic हो जाता है। पब्लिक अर्थात् जनता के विशिष्ट प्रतिनिधियों का तंत्र गणतंत्र। जनसंख्या (Population)। जो ज्यादा संख्या को प्रिय हो वह लोकप्रिय हो जाता (Popular)। अध्यक्ष जिसे अंग्रेजी में (Head of Office)-कहा जाता है। अधि= अधिक, अक्ष = आँख। इस प्रकार जिनको अधिक आँख हो वही अध्यक्ष है। सरदार। सर = सिर, दार = सूली अर्थात् जो अपनी धर्म की रक्षा के लिए अपना सर कटवाने को तैयार हो वह सरदार है। चपरासी (Peon)। चप = बाया राशि = दाया। अर्थात् जो अधिकारी के बाये-दाये रहने वाला हो चपरासी कहलाता है। साक्षी (Witness) सा = सामने, अक्षी = आँख। सामने आँख अर्थात् आँखो के सामने। प्रतिमा (Statue)। प्रति = कॉपी मात्र नहीं। अर्थात् जिसकी नकल/कॉपी नहीं हो सकती वही प्रतिमा है। निदान (Diagnosis)। निदान। नि = तर्कपूर्ण दान = देना। किसी को क्यो देना क्या क्या देना सब समझकर देना दवा अर्थात निदान है। नियुक्ति (Appointment)। नियुक्ति। नि+तर्कपूर्ण+युक्ति 'पद के लिए उपयुक्त होने पर' जो युच धातु से बना है योज, योग = जुड़ना।

यदि शब्दों की मूल धातु का पता चल जाए तो यह ज्ञान हमारा अर्जित ज्ञान बन जाता है तथा जो कुछ सीखना होता है वह इस अर्जित ज्ञान से तुरन्त और सरलता से सीखा जा सकता है।

कौन पहुंचा है अपनी आखिरी मंजिल तक
हर किसी के लिए थोड़ा आसमान बाकी है।।

हिंदी बढ़ेगी तभी, जब आप सब पढ़ेगें तभी

स्त्रोत: 'द प्राइवेट लाइफ ऑफ इंग्लिश वर्डस्' लेखक-लुईस हैलर, एलेक्जेन्डर हयूमेज तथा मलकाह ड्रार एवं अन्य किताबों से ।

हिन्दी हमारी मातृभाषा है; मात्र एक भाषा नहीं.

देश की एकता एवं अखण्डता में केरिपुबल का योगदान एवं चुनौतियां

प्रस्तावना:- केन्द्रीय रिज़र्व पुलिस बल की स्थापना के दिन से ही इसका इतिहास देश की एकता और अखण्डता में वीरता भरी उपलब्धियों और शौर्य गाथाओं से भरा हुआ है। केरिपुबल पिछले आठ दशकों में अपने उपलब्धियों की बदौलत दिन-प्रतिदिन मजबूत होता गया है। केरिपुबल देश की एकता और अखण्डता को मजबूत करने में आने वाले चुनौतियों को हमेशा अवसर के रूप में स्वीकार कर सफलता की सीढियाँ चढ़ता रहा है। इस बल की कार्यप्रणाली और गतिविधियाँ राज्यों के डकैती रोधी ऑपरेशनों की दृष्टि से शुरू की गई थी। तदोपरांत आंतरिक सुरक्षा व कानून-व्यवस्था बनाए रखने के उद्देश्यों को पूरा करने के साथ-साथ इस बल की ड्यूटियाँ- आंतकवाद, उग्रवाद, भारतीय संसद के चुनावी ड्यूटी, संसद की सुरक्षा, विभिन्न श्राईन बोर्डों की सुरक्षा, नक्सलवाद से मुकाबले जैसे मूल कार्य क्षेत्र से परे और अधिक बढ़ती जा रही है। ड्यूटी के लिए दृढ़-निष्ठा की गाथा, कुछ शानदार उपलब्धियाँ और उल्लेखनीय बलिदानों की दास्तान भविष्य में लंबे समय तक बल के सदस्यों- अधिकारियों, जवानों एवं वीरांगानाओं के लिए प्रेरणादायी रही है। केरिपुबल ने कड़ी मेहनत, समर्पण और बलिदान देकर इस देश के लोगों का विश्वास और सम्मान भी जीता है।

देश की एकता और अखण्डता में केरिपुबल का योगदान :- देश की एकता और अखण्डता में केरिपुबल का योगदान हमारे बल के ध्येय में मूलमंत्र के तरह उल्लेखित है जिसका अक्षरश: केरिपुबल अपने ड्यूटीयों से निर्वहन करता रहा है।

बल का ध्येय:- *केरिपुबल का लक्ष्य है राष्ट्र की एकता, अखण्डता एवं संविधान की मर्यादा को अक्षुण्ण बनाये रखना। देश की आंतरिक सुरक्षा सुनिश्चित रखने तथा कानून व्यवस्था को बनाए रखने के लिए शासन को कौशलपूर्ण एवं प्रभावी सहायता प्रदान करना इसका उद्देश्य है ताकि सामाजिक सद्भाव तथा राष्ट्र के विकास को गति मिले। राष्ट्रीय आपदाओं से निपटने के लिए और आंतरिक सुरक्षा को कुशल प्रबंधन की श्रेष्ठता के लिए बल के सदस्य सदा प्रयत्नशील रहेगें। राष्ट्र की सेवा एवं निष्ठा हमारे जीवन के सर्वोच्च मूल्य होंगे।*

निरी. जीडी **प्रियरंजन**
के.प्र.महा., केरिपुबल, मुदखेड़

केन्द्रीय रिज़र्व पुलिस बल का भारतीय जनमानस को एकता के सूत्र में पिरोने में महत्वपूर्ण योगदान रहा है। देश की एकता और अखण्डता को अक्षुण्ण बनाए रखने में केरिपुबल ने कर्त्तव्यपरायणता से ड्यूटियों का निर्वाह किया है। केरिपुबल के शूरवीरों ने बल की गरिमा को बढ़ाने के लिए जीवन पर्यन्त संघर्ष किया और इस बल के आदर्श वाक्य **'सेवा एवं निष्ठा'** को बनाए रखने के लिए अपने प्राणों को भी सहर्ष न्यौछावर कर दिया। आजादी के बाद भारत संघ में रियासतों के एकीकरण के दौरान बल ने एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। छोटी रियासत जिसने भारतीय संघ में शामिल होने के लिए मना कर दिया था, को अनुशासित करने में इस बल ने केंद्र सरकार की मदद की। बल का राष्ट्र के लिए निम्नलिखित योगदान अविस्मरणीय है:-

* भारत के हॉट स्प्रिंग (लद्दाख) पर पहली बार 21 अक्टूबर 1959 को चीनी हमले को केरिपुबल ने नाकाम

किया। केरिपुबल के एक छोटे से गश्ती दल पर चीन द्वारा घात लगाकर हमला किया गया। जिसमें बल के दस जवानों ने देश के लिए सर्वोच्च बलिदान दिया। उनकी शहादत की याद में देश भर में हर साल 21 अक्टूबर को पुलिस स्मृति दिवस के रूप में मनाया जाता है।

* 1962 के चीनी आक्रमण के दौरान एक बार फिर बल ने अरूणाचल प्रदेश में भारतीय सेना को सहायता प्रदान की। इस आक्रमण के दौरान केरिपुबल के 8 जवान शहीद हुए।

* 1965 में द्वितीय बटालियन के द्वारा रणकच्छ की ''सरदार'' और अन्य चौकियों पर हुए पाकिस्तानी हमलों को विफल कर देने की घटना भारतीय इतिहास में स्वर्णाक्षरों में अंकित है, जिसमें हमारे छः बहादुर जवानों ने शहादत दी। इस गाथा को श्रद्धांजलि के रूप में 9 अप्रैल को शौर्य दिवस मनाया जाता है।

* 1971 में भारत पाक युद्ध में भी बल ने भारतीय सेना के साथ कंधे से कंधा मिलाकर संघर्ष किया।

* पूर्वोत्तर में विद्रोह की स्थिति से निपटने के लिए इस बल की प्रतिबद्धता लगातार उच्च स्तर पर है। केरिपुबल की ताकत न केवल कानून और व्यवस्था बनाए रखने के लिए बल्कि संचार तंत्र व्यवधान मुक्त रखने के लिए भी शामिल किया गया।

* पंजाब में राज्य बँटवारे से लेकर खालिस्तान की माँग को लेकर वहाँ पर फैले आतंक और उग्रवाद से निपटने के लिए उल्लेखनीय भूमिका निभाई जो कि बल द्वारा किये गये गए कार्य का अपने आप में एक उदाहरण है।

* देश के कई धार्मिक संस्थानों की सुरक्षा में केरिपुबल का सराहनीय योगदान रहा है। जिसमें से पंजाब के अमृतसर मंदिर, उत्तर प्रदेश के राम जन्मभूमि, अयोध्या; काशी विश्वनाथ मंदिर, बनारस; कृष्ण जन्मभूमि, मथुरा; जम्मू के श्री माता वैष्णो देवी, कटरा से लेकर कश्मीर के अमरनाथ यात्रा में केरिपुबल ने अपनी विशेष छाप छोड़ी है।

* 13 दिसम्बर 2001 में भारतीय संसद की सुरक्षा करते हुए केरिपुबल के जवान एवं वीरांगना कमलेश कुमारी के बलिदान को यह देश कभी नहीं भूलेगा।

* वर्तमान में कोविड-19 जैसी माहमारी के दौरान देश के प्रत्येक कोने में स्थानीय जनता को राशन, समुचित ईलाज, दवाई और अन्य दैनिक संसाधन की सुविधा मुहैया कराने में हमारे अधिकारियों एवं जवानो ने अद्वितीय क्षमता एवं साहस का परिचय दिया है।

* देश में आने वाली विभिन्न प्राकृतिक आपदाओं/विपदाओं तथा विविध प्रकार की चुनौतियों को केरिपुबल ने हमेशा आपदा रक्षक के रूप में कुशलतापूर्वक निपटाया है।

* बल के जवानों ने राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय प्रतियोगिताओं तथा खेल-कूद स्पर्धाओं में भी बल एवं राष्ट्र का नाम गौरवान्वित किया और अनेक कीर्तिमान स्थापित किया है।

* पर्यावरण सुरक्षा के क्षेत्र में माननीय गृहमंत्री श्री अमित शाह द्वारा 12 जुलाई को शुरूआत किये गये अखिल भारतीय वृक्षारोपण अभियान में केरिपुबल का महत्वपूर्ण योगदान है जो कि पूरे सशस्त्र बलों में सबसे अनूठा एवं अनुपम है।

देश की एकता और अखण्डता में केरिपुबल के योगदान और बलिदान को देखते हुए देश के माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने पुलिस स्मृति दिवस के दिन 21 अक्टूबर, 2015 को नमन (Warriors Remembered) पुस्तक का लोकार्पण किया। भारत के ''वीर परिवार'' नाम के एप्प को तत्कालीन राष्ट्रपति श्री रामनाथ कोविंद द्वारा 09 अप्रैल शौर्य दिवस के अवसर पर लॉन्च किया गया। केरिपुबल के अधिकारियों और शूरवीर जवानों के योगदान और बलिदान को देखते हुए शौर्य-गाथाओं की 12 श्रृंखलाएँ प्रकाशित हो चुकी हैं।

देश की एकता और अखण्डता में केरिपुबल को चुनौतियाँ :- वर्तमान सुरक्षा परिदृश्य में पुलिस संगठनों एवं विधि-प्रर्वतक एजेंसियों को पारम्परिक अपराधों जैसे- चोरी, लूट, डकैती, अपहरण, हत्या, बलात्कार, विभिन्न प्रकार की तस्करी, अवैध व्यापार, अन्य सामाजिक, आर्थिक और साइबर अपराधों आदि से निपटने के साथ-साथ कई और भी कड़ी चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा हैं और ये चुनौतियाँ पुलिस के कार्यक्षेत्र का सबसे अहम हिस्सा बन गई हैं। जो कि निम्नानुसार है:-

केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल ने अपने लंबे गौरवपूर्ण इतिहास में अपने

को बदलती परिस्थितियों के अनुरूप ढ़ालने तथा देश की एकता और अखण्डता के लिए पैदा होने वाली विभिन्न चुनौतियों से निपटने में अद्वितीय क्षमता का परिचय दिया है। वर्त्तमान में बल की टुकड़ियाँ देश के विभिन्न राज्यों में आतंकवाद, उग्रवाद व माओवादी हिंसा से निपटने के लिए तैनात है। राष्ट्र विरोधी तत्वों द्वारा आधुनिक हथियारों का इस्तेमाल और घातक नीतियों के मद्देनजर हमने अपने बल की परिचालिनिक कार्य क्षमता में उत्तरोतर सुधार व आवश्यक बदलाव जारी रखा। विभिन्न परिचालिनिक क्षेत्रों की आवश्यकता अनुसार बल की टुकड़ियों का प्रशिक्षण व आधुनिक हथियारों व साजो-सामान से लैस होना हमारी चुनौती रही है। केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल विभिन्न संस्कृतियों, भाषाओं, धर्मों और सम्प्रदायों से आने वाले सदस्यों का बल है। बल की छोटी से छोटी टुकड़ी भी भारतीयता का परिचायक है यह विविधता हमें अपनी चुनौतियों से कुशलतापूर्वक निपटने का बल प्रदान करती है। हम अपनी इस विशेषता को निरंतर बनाये रखने में सफल रहे है। बल के सदस्य जहाँ एक ओर कठिन परिस्थितियों में अपनी ड्यूटी का निर्वाहन करते है वही उनके परिवार अपनी पारिवारिक जिम्मेदारियों को कुशलता से निभाते है और बल के सदस्यों को चिंतामुक्त वातावरण में अपनी ड्यूटी करने में अहम सहयोग देते हैं।

1. नक्सली चुनौतियों से घिरी आंतरिक सुरक्षा:- वर्त्तमान में हमारे बल की सबसे बड़ी चुनौती नक्सलवाद है, जिसमें हमारे बल की 90 बटालियन देश के कुल 11 नक्सल प्रभावित राज्यों में नियुक्त है। विदित है कि भौगोलिक हालात की जानकारी के अभाव में केरिपुबल के जवानों को नक्सलियों से निपटने के लिए दुर्गम जंगलों में भेजना एक चुनौती भरा कार्य होता है। नक्सलवाद आज जिस मोड़ पर पहुँच चुका है, इससे स्पष्ट रूप से कहा जा सकता है कि यह देश की अखण्डता एवं आंतरिक सुरक्षा के लिए एक बड़ा खतरा बन चुका है। नि:संदेह यह शांति, विकास देश की एकता एवं अखण्डता तथा कानून व्यवस्था के लिए बड़ी बाधा बनते जा रहा है। वास्तव में नक्सलवाद घोर एवं घातक हिंसक कार्यवाहियों का पर्याय बन चुका है और एक गंभीर सुरक्षा चुनौती के रूप में उभरा है। माओवादी घटनाओं के अभी तक के आंकड़े कम चिंताजनक नहीं है। अब तक 20 राज्यों के लगभग 223 जिलों तक नक्सलियों ने अपने प्रभाव, प्रचार एवं प्रसार कर लिया है। छत्तीसगढ़ के दंतेवाड़ा जिले में अप्रैल, 2010 में केरिपुबल के 76 जवानों की शहादत भूली नहीं जा सकती है। ऑपरेशन ग्रीन हंट में केरिपुबल के जवानों का योगदान हमेशा सराहनीय रहा है। नक्सलवाद देश की आंतरिक सुरक्षा के लिए चुनौती बन गया है। इस चुनौती से निपटने के लिए गृह मंत्रालय ने केरिपुबल में 10 कोबरा बटालियनों का गठन किया है। जिन्होंने नक्सलियों पर नकेल कस दी है। इस चुनौती से निपटने के लिए केरिपुबल ने अपने अभियानों में कई सफलताएँ हासिल की है जिसमें किशन जी जैसे कई नक्सली कमाण्डरों को ढ़ेर कर अपने देश के प्रति सम्पर्ण एवं निष्ठा दिखाई है।

2. आंतकवादी चुनौती:- केरिपुबल के लिए कश्मीर में आंतकवाद एक बहुत बड़ी चुनौती का रूप ले चुका है। इस चुनौती से लड़ने के लिए हमारे बल की 61 बटालियन जम्मू-कश्मीर में नियुक्त है। कश्मीर में आंतकवादियों का सामना करने में केरिपुबल को स्थानीय लोगों के विरोध तथा दूसरे देशों से समर्थित आंतकवादियों का सामना करने में दोहरी चुनौतियों से गुजरना पड़ता है। कश्मीर की घाटी में वातावरण, भाषा, भौगोलिक परिवेश, स्थानीय प्रशासनिक व्यवस्था भी केरिपुबल के लिए चुनौती रही है। लेकिन इन चुनौतियों का सामना डटकर किया जा रहा है। पुलवामा में 40 केरिपुबल के शूरवीरों के बलिदान को देश हमेशा याद रखेगा। जम्मू एवं कश्मीर से विगत वर्ष 05 अगस्त 2019 को अनुच्छेद 370 एवं धारा 35 ए हटाने के बाद केरिपुबल का योगदान स्वर्णिम इतिहास के रूप में जाना जाएगा। यह कार्य 2019 में लोकसभा चुनावों में सफलतापूर्वक अपनी ड्यूटीयों

का निर्वहन के तुंरत बाद किया गया। प्रत्येक वर्ष अमरनाथ यात्रा में, माता वैष्णों देवी की सुरक्षा में तैनात एवं श्रीनगर एयरपोर्ट की सुरक्षा के साथ-साथ कई अन्य महत्वपूर्ण सुरक्षा ड्यूटियों का केरिपुबल निर्वहन कर रही है। केरिपुबल ने देश के सिरमौर को अपनी सेवा से ऊँचा किया है।

3. **उग्रवाद**:- केरिपुबल के लिए पूर्वोत्तर के राज्यों में उग्रवाद एक बड़ी चुनौती है। इस चुनौती से लड़ने के लिए हमारे बल की 37 बटालियन पूर्वोत्तर के राज्यों में प्रतिनियुक्त है। पूर्वोत्तर राज्यों में अलगाववाद की समस्याओं से निपटने में केरिपुबल का योगदान सराहनीय रहा है।

4. **स्थानीय जनता का सहयोग** :- स्थानीय जनता के सहयोग के बिना पुलिस/सुरक्षा बल अपने मकसद की प्राप्ति नहीं कर सकती।

5. **भौगोलिक परिवेश** :- केरिपुबल की ड्यूटी देश के विभिन्न क्षेत्रों में रहती है, जिस क्षेत्र के बारे में हम कुछ भी नहीं जानते है उस क्षेत्र में जाकर अपनी ड्यूटी करनी पड़ती है। केरिपुबल के सदस्य दुरूह परिस्थितियों और दुर्गम स्थानों पर भी कार्य करते हैं।

6. **अनवरत् ड्यूटी** :- केरिपुबल के जवानों की ड्यूटी अनवरत् चलती रहती है और अधिकतर जवान अपने परिवार से दूर दुर्गम स्थानों पर रहते है, जिसका उदाहरण जम्मू एवं कश्मीर है, जहाँ 2019 में लोकसभा चुनावों में सफलतापूर्वक अपनी ड्यूटियों के निर्वहन के तुरन्त पश्चात अमरनाथ यात्रा की जिम्मेदारी दी गई तत्पश्चात विगत वर्ष 05 अगस्त 2019 को अनुच्छेद 370 एवं धारा 35 ए हटने के बाद से केरिपुबल अनवरत् ड्यटी में तैनात है।

उपसंहार :- आज हमारे देश में जितने सशस्त्र पुलिस बल हैं, उनमें केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल सबसे अनूठा एवं अनुपम है, क्योंकि इसके जांबाज अधिकारी, अधीनस्थ अधिकारी एवं जवान दिन-रात मेहनत करके सौंपी गई ड्यूटियों के निर्वहन में कोई कसर नहीं छोड़ रहे हैं। आज केरिपुबल की केवल यह पहचान नहीं है कि यह विश्व का सबसे बड़ा केन्द्रीय सशस्त्र पुलिस बल है बल्कि राज्यों व केन्द्र शासित प्रदेशों की पुलिस द्वारा कानून-व्यवस्था बनाए रखने के संबंध में चलाए जाने वाले पुलिस ऑपरेशनों में सहायता, संसद की सुरक्षा, वी.आई.पी. की सुरक्षा, चुनाव ड्यूटी, आर.ओ.पी. ड्यूटी, वामपंथ, उग्रवाद प्रभावित राज्यों के प्रमुख संवेदनशील क्षेत्रों में ड्यूटी आदि में केरिपुबल का कोई सानी नहीं है। जम्मू-कश्मीर एवं पूर्वोत्तर की कठिन भौगोलिक स्थिति हो या वामपंथ, उग्रवाद प्रभावित अन्य कोई परिस्थिति सब में हमारे जवान एवं अधिकारी अपनी काबिलियत का लोहा मनवा रहे हैं। हमारे बल के जवान व अधिकारी संयुक्त राष्ट्र के विभिन्न अभियानों में भी मुस्तैदी से अपनी सेवाएं दे रहे हैं। साथ ही साथ इस बल का एक सराहनीय मानवीय चेहरा है जो कि सामान्य जनमानस का भरोसा एवं विश्वास भी जीता है।

हिंदी भाषा की वर्तमान स्थिति

(एस. एन. सुमन)
निरीक्षक (हिंदी अनुवादक)
राजभाषा अनुभाग, महानिदेशालय, केरिपुबल

हम जानते हैं कि 14 सितम्बर 1949 को संविधान की भाषा समिति ने हिंदी को राजभाषा के पद पर आसीन किया क्योंकि भारत की बहुसंख्यक जनता द्वारा हिंदी भाषा का प्रयोग किया जा रहा था। स्वतंत्रता के पश्चात भले ही हिंदी को राजभाषा का दर्जा दिया गया लेकिन अंग्रेजी भाषा का प्रयोग भी अनवरत चलता रहा है।

भले ही आज हिंदी की वैश्विक स्थिति काफी बेहतर है। विश्व में प्रायः सभी महत्वपूर्ण देशों के विश्वविद्यालयों में हिंदी अध्ययन-अध्यापन हो रहा है और यह विश्व भाषा के रूप में वैश्विक पटल पर उभरी है, परन्तु विडंबना यह है कि विश्व में अपनी स्थिति के बावजूद हिंदी भाषा अपने ही घर में उपेक्षित हो रही है। अंग्रेजी के मोहजाल से हम अपने आप को अभी तक नहीं निकाल पाए है। आज हिंदी बोलने वालों की संख्या विश्व में सबसे अधिक हो चुकी है फिर भी अंग्रेजी बोलने वालों को तेज तर्रार, बुद्धिमान एवं हिंदी बोलने वालों को अनपढ़, गंवार समझा जाता है।

अहिंदी क्षेत्रों की क्या बात करें, हिंदी भाषी क्षेत्रों में भी हिंदी दिन-प्रतिदिन उपेक्षित हो रही है। इसका अंदाजा इस बात से सहज ही लगाया जा सकता है कि हिंदी माध्यम वाले विद्यालयों में कोई अपने बच्चों को शिक्षा के लिए भेजना नहीं चाहता है क्योंकि आज हिंदी भाषी क्षेत्रों में भी अंग्रेजी शिक्षा ग्रहण न करने वालों को नौकरी नहीं मिल पा रही है। आमजन का हिंदी से दूराव बढ़ता जा रहा है। अगर शिक्षा के क्षेत्र में हिंदी इस कदर ही उपेक्षित रही तो हमारी अगली पीढ़ी को धीरे-धीरे हिंदी से अलगाव ही हो जायेगा। हमें अपनी अगली पीढ़ी को हिंदी का महत्व समझाना होगा। मातृभाषा का सम्मान करना सिखाना होगा। शिक्षण संस्थानों में हिंदी के महत्व पर चर्चा करनी होगी। क्योंकि अपनी भाषा एक ऐसी संपत्ति है जिससे देश एक सूत्र में बंधा रहता है और एकता के बगैर देश का संपूर्ण विकास नहीं हो सकता है।

हम देखते है कि प्रायः हर जगह दीवारों पर चमचमाते अंग्रेजी के सुनहरे पट्ट दिखाई देते है। अंग्रेजी अखबार मांगना फैशन सा हो गया है। तुष्टिकरण की नीति से कभी भी किसी भाषा का विकास नहीं हो सकता है। यही कारण है कि हिंदी आज तक व्यावहारिक दृष्टि से न तो राजभाषा और न ही राष्ट्रभाषा बन पाई है। हिंदी की आज यही दशा है जहां हिंदी अपने ही लोगों से पग-पग पर उपेक्षित हो रही है। दोहरेपन की नीति के कारण ही आज तक इस देश को सही मायने में एक भाषा नहीं मिल सकी है जिसमें पूरा देश बातचीत कर सके। इसलिए हिंदी को यथाशीघ्र राष्ट्रभाषा का दर्जा दिया जाए जिसकी वह हकदार है ताकि हिंदी को भी अपने हिंदी होने पर गर्व हो सके।

हालांकि सरकार ने हिंदी के संरक्षण और संवर्धन के लिए अपने स्तर पर पहल की है और काफी प्रयास भी कर रही है। परन्तु सतही तौर पर सरकारी कार्यलयों में कामकाज के क्रियान्वयन का कार्य पूर्णतः हिंदी में अभी भी नहीं हो पा रहा है। इसलिए सरकारी कार्यालयों में हिंदी में कार्य अनिवार्य रूप से करना आरम्भ किया जाए। हिंदी संवर्ग से जुड़े कर्मियों को उचित सम्मान दिया जाए व उनके कैरियर में उन्नति के लिए उन्हें समुचित अवसर दिए जाए ताकि वे न केवल हिंदी भाषी क्षेत्रों में अपितु अहिंदी भाषी क्षेत्रों में भी पूरे जोश के साथ हिंदी का प्रचार प्रसार करने में अपनी अहम भूमिका अदा कर सके। हिंदी भाषा-भाषी कार्मिक सरकारी कामकाज पूर्णतयाः हिंदी में ही करें तथा अनुवाद मांगने की प्रवृत्ति त्यागें। कार्यालयों में सरल और बोलचाल के हिंदी शब्दों का प्रयोग किया जाए। सबसे महत्वपूर्ण यह है कि सरकारी कार्यालयों में हिंदी का प्रयोग शीर्षस्थ स्तर से शुरू किया जाए ताकि उनके अधीन कार्यरत कार्मिक स्वतः ही हिंदी में कार्य करने के लिए प्रेरित हो सकें।

हिंदी हमारी राष्ट्रभाषा है इसलिए प्रत्येक नागरिक का यह कर्तव्य है कि वह इसका सम्मान करे। राष्ट्रभाषा राष्ट्र की आत्मा होती है जिसके माध्यम से पूरा देश संवाद करता है। अतः हर नागरिक को चाहिए कि वह दोहरी मानसिकता को छोड़कर पूरे गर्व के साथ हिंदी को अपने जीवन में अपनाए तभी सही मायने में हिंदी का गौरव बना रहेगा। जय हिंदी, जय हिंदी ।

केरिपुबल में राजभाषा संवर्ग का उद्भव एवं विकास

निरी. हि. अनु. **रमेश कुमार पाण्डेय**
राजभाषा अनुभाग, महानिदेशालय

भारत की संविधान सभा ने 14 सितम्बर 1949 को देवनागरी लिपि में लिखी हिंदी को देश के राज-काज चलाने के साथ-साथ केन्द्र व राज्यों के बीच सम्पर्क बनाए रखने की भूमिका निभाने का दायित्व सौंपकर उसे संविधान के अनुच्छेद 343(1) के अंतर्गत संघ की राजभाषा के रूप में अंगीकार किया गया। चूंकि केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल, केन्द्र सरकार का बहुउद्देशीय केन्द्रीय सशस्त्र पुलिस बल है इसलिए इसके कार्यालयों में राजभाषा संबंधी संवैधानिक और कानूनी उपबंधों का अनुपालन सुनिश्चित करने तथा संघ के सरकारी कामकाज में हिन्दी के प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल में सर्वप्रथम वर्ष 1975 में 01 हिंदी अनुवादक के पद का सृजन किया गया और यहीं से केरिपुबल में राजभाषा संवर्ग के उद्भव का आंशिक प्रादुर्भाव हुआ।

समय के साथ बदलती परिस्थितियों के अनुसार देश की आंतरिक सुरक्षा के साथ-साथ एकता और अखण्डता को बनाए रखने के लिए केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की मांग दिन प्रतिदिन बढ़ती गई और बल का विस्तार होता गया। बल के विस्तार के साथ ही बल में सेक्टर कार्यालय, रेंज कार्यालय, ग्रुप केन्द्र, प्रशिक्षण संस्थान और ड्यूटी बटालियनों से संबंधित कार्यालयों की संख्या में भी उसी अनुपात से बढ़ोत्तरी हुई। बल के सभी कार्यालयों में राजभाषा संबंधी संवैधानिक और कानूनी उपबंधों का अनुपालन सुनिश्चित करने संबंधी चुनौतियों से निपटने के लिए वर्ष 1981 में पहली बार गृह मंत्रलय ने दिनांक 26/12/1981 के पत्र संख्या टी.नौ.18/79-80-प्रशा. चार/पीएफ-4 के तहत राजभाषा संवर्ग का सृजन किया गया जिसमें कुल 22 पदों (हिंदी अधिकारी-1 (ग्रुप बी), हिंदी अनुवादक-ग्रेड-1 (सूबेदार मेजर)-01 और हिंदी अनुवादक (निरीक्षक)-17 और हिंदी टाइपिस्ट-03) की स्वीकृति प्रदान की।

केरिपुबल में राजभाषा संवर्ग के सृजन के बाद वर्ष 1981 में महानिदेशालय में भी एक स्वत्रंत हिन्दी अनुभाग की स्थापना की गई जिसके अंतर्गत 01 हिन्दी अधिकारी, 01 सूबेदार मेजर (हिन्दी अनुवादक ग्रेड-01), 03 निरीक्षक (हिन्दी अनुवादक ग्रेड-2) तथा 03 स.उ.नि. (मं.) हिन्दी टंकक अर्थात कुल 08 पदों की नियुक्ति अधिकृत की गई। हालांकि केरिपुबल में वर्तमान में कुल 246 बटालियन के साथ 04 जोन, 21 सेक्टर मुख्यालय, 43 ग्रुप केन्द्र, 02 परिचालन सेक्टर मुख्यालय, 17 परिचालन रेंज और 39 प्रशासनिक रेंज सहित करीब सवा तीन लाख की नफरी हो गई है। तदनुसार, राजभाषा संवर्ग की नफरी भी बढ़ती गई और वर्ष 2014 में किए गए पहले कैडर रिव्यू से पूर्व राजभाषा संवर्ग में अधिकारी सहित अनुवादकों की नफरी 19 से बढ़कर 67 (सहायक निदेशक-01, सू.मे.-01 और निरीक्षक- 65) की हो गई।

गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग द्वारा जारी निर्देशानुसार केन्द्र सरकार के कार्यालयों में राजभाषा हिंदी के काम-काज के लिए निर्धारित लक्ष्यों की प्राप्ति एवं बल में बढ़ते हिंदी के काम-काज को देखते हुए गृह मंत्रालय ने दिनांक 29.09.2014 के पत्र संख्या ओ. चार. 5/2013-डीए-चार- संगठन-केरिपुबल/पीएफ-3 के तहत इस बल का पहला कैडर रिव्यू स्वीकृत किया जिसके अंतर्गत सहायक कमा. (राजभाषा) और सूबेदार मेजर (हिंदी अनुवादक) के नव पदों का सृजन करते हुए बल के राजभाषा संवर्ग में कुल 110 (सहा. कमा.-15, सू.मे. 30 और निरी.-65) पदों की नफरी की गई जिससे वर्षों तक एक पद में अर्थात निरी. (हिंदी अनुवादक) के पद पर नियुक्त होकर इसी पद से सेवा निवृत्त होने वाले कार्मिकों के केरियर में चमत्कारिक रूप परिवर्तन आया और इनके 15 सहा. कमा. (राजभाषा) और 30 सूबेदार मेजर (हिंदी अनुवादक) के पदों पर पदोन्नत होने का मार्ग प्रशस्त हुआ।

बल का विस्तार होने के साथ-साथ राजभाषा संवर्ग से संबंधित नफरी में भी आंशिक बढ़ोत्तरी होना स्वाभाविक है और इस तरह राजभाषा संवर्ग के द्वितीय कैडर रिव्यू 2020 के होने से पूर्व राजभाषा संवर्ग की कुल 118 (सहा. कमा.-15, सू.मे.-30 और निरी.-73) की नफरी हो गई। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में भारत सरकार गृह मंत्रालय ने अपने मंत्रालय सहित सभी अधीनस्थ विभागों में ज्यादा से ज्यादा काम हिंदी में करने संबंधी दिशा निर्देश जारी किया है। गृह मंत्रालय ने दिशा निर्देश जारी कर यहां तक कहा है कि गृह मंत्रालय को प्रेषित किए जाने वाले सभी प्रस्ताव हिंदी में ही प्रस्तुत किए जाएं। इससे यह स्पष्ट परिलक्षित होता है कि केन्द्र सरकार हिंदी को बढ़ावा देने के प्रति कितनी जागरूक है। हालांकि हम यह कहने से गुरेज नहीं कर सकते हैं कि राजभाषा हिंदी का विस्तार प्रतिदिन बढ़ रहा है और यही कारण है कि भारत सरकार, गृह मंत्रालय ने दिनांक 20/05/2020 के पत्र संख्या 1-45020/31 /2019-कार्मिक-दो (3472155) के तहत राजभाषा संवर्ग में नव पदों का सृजन करते हुए कुल 423

(सहा. कमा. (राजभाषा)-45, निरी.-66 और उप निरी.-312) की नफरी की गई है। इस कैडर रिव्यू से इस बल में पदस्थ 30 सूबेदार मेजर (हिंदी अनुवादक) को सहा. कमा. (राजभाषा) के पद पर पदोन्नत होने का अवसर प्रशस्त होने के साथ ही 312 उप निरी.(हिंदी अनुवादक) के पद पर नए अभ्यर्थियों के लिए रोजगार का सुनहरा अवसर भी प्राप्त हुआ। यही नहीं अब हिंदी दूरवर्ती क्षेत्रों में स्थित केरिपुबल की बटालियनों में भी उप निरीक्षक/हिंदी अनुवादक का पद सृजन किया गया है जिससे हम महसूस कर सकते हैं कि हिंदी का विस्तार किस स्तर तक किया जा रहा है।

यद्यपि वर्तमान में राजभाषा सवंर्ग में वास्तविक रूप से कुल 63 (सहा. कमा.-13, सू.मे. 25 और निरी.-25) की नफरी ही विद्यमान है फिर भी यह नफरी केरिपुबल में राजभाषा के उत्तरोतर विकास के लिए सतत प्रत्यनशील है। हम सभी जानते हैं कि जिस तरह से समय का चक्र चलता है और मौसम बदलता है, ठीक उसी तरह भविष्य में राजभाषा की स्थिति का चक्र और उपयोगिता का क्रम भी बदलेगा तथा भारत सरकार के कार्मिक एवं प्रशिक्षण विभाग के दिनांक 18 सितंबर, 2013 के ज्ञापन संख्या ए.बी.-14017/46/2011-स्था (आर.आर.) के अनुसार जब इस बल में राजभाषा संवर्ग के पदो के सृजन के बाद एकरूपता आएगी, उसी दिन से इस बल में राजभाषा का स्वर्ण युग आएगा। तब तक इस बल के राजभाषा संवर्ग के सभी अधिकारी एवं कार्मिक अपने कर्तव्यों को समर्पित भाव से निर्वहन करते हुए निम्न पंक्तियों के साथ राजभाषा का गुणगान और प्रचार-प्रसार करते रहें:-

''हिंद देश के वासी हम सब, हिंदी अपनी भाषा,
इसको सीखो, इसको बोलें, यही हमारी अभिलाषा।''

अमर शहीद अरविन्द तिवारी 'शौर्य चक्र' के पिता द्वारा अधीनस्थ अधिकारी मेस का शुभारम्भ

172वीं बटालियन में अधीनस्थ अधिकारी मेस के उद्घाटन के अवसर पर मुख्य अतिथि के रुप में श्री अरविन्द तिवारी पिता शहीद सिपाही/जीडी आशीष कुमार तिवारी ''शौर्य चक्र'' (मरणोपरांत) को आमंत्रित किया गया तथा उन्होंने 172 बटा0 अधीनस्थ अधिकारी मेस का उद्घाटन किया।

करो प्रण उन माँओं का,
हम मान न घटने देंगें
बच्चों का, वीरों की विधवाओं का
सम्मान न घटने देंगें
वह परिवार हमारा
अब हम उसका भार उठायेंगे
सम्मान प्रदर्शित करें सभी
जग को हम बतलायेंगे
पूजे जाते वीर जहाँ
वह भारत कहलायेंगे
वीरों की मिट्टी यह जननी
वीरों का यह भारत कहलायेंगे

उपरोक्त के अलावा आपको यह भी अवगत कराया जाता है कि शहीद सिपाही जीडी/जीडी आशीष कुमार तिवारी निवासी ग्राम-चेचरिया, पोस्ट अटौला, थाना मेराल, जिला-गढ़वा ने 202 कोबरा बटालियन में पदस्थापना के दौरान दिनांक 26/07/2010 को पश्चिम बंगाल के पश्चिम मिदनापुर जिले में माओवादियों से लड़ते हुए मातृभूमि की रक्षा में अपना सर्वस्व बलिदान कर दिया था। जिनके नाम पर 172 वीं बटालियन मुख्यालय अधीनस्थ अधिकारी मैस ''बंधन'' का उद्घाटन किया गया।

एक बार फिर चर्चा में 'गमछा'

जीतेन्द्र कुमार,
सहायक कमाण्डेंट बिहार सेक्टर, केरिपुबल, पटना

यह कहा जा सकता है कि 'गमछा' समाज, इतिहास, संस्कृति और धर्म का अभिन्न अंग-वस्त्र रहा है। पिछले कुछ दिनों से कोई इसे ग्लोबल-वस्त्र बनाना चाहता, तो कोई इसे देसी परिधान का हिस्सा। ...और कुछ लोग ऐसे भी हैं जिन्हें इस गमछे से ग्रामीण परिवेश की गंध आती है। अलग-अलग लोग, अलग-अलग सोच।

अहिंसा के प्रवर्तक और सबसे बड़े पुजारी भगवान बुद्ध और महात्मा गाँधी; दोनों देदीप्यमान व्यक्तित्वों के कंधे का सहारा इसे मिला है और इसने भी उनके कंधों की शोभा बढ़ाई है। वहीं हिंसात्मक गतिविधियों में, घटना को अंजाम देने के बाद अपना चेहरा/ पहचान छिपाने के लिए अक्सर प्रयोग में लाया जाता है। कई गिरोह वाले किसी खास गमछे को अपना आपसी पहचान चिन्ह भी बनाते हैं। इस प्रकार अहिंसा और हिंसा का भी अभिन्न अंग रहा है गमछा।

भारत के हर हिस्से के पारंपरिक परिधान अथवा लोकवस्त्र की परिकल्पना ही इसके बिना अधूरी लगती है। आजकल कई ख्यातिलब्ध, लोकप्रिय ब्राण्ड भी अपने कपड़ों में गमछे को डिजाइन करने लगे हैं। अब तो यह पारंपरिक वस्तु; फैशन, फिल्म से लेकर कई बड़ी हस्तियों के गले में भी शोभा बढ़ा रही है। हालांकि गमछे का भी अपना समृद्ध इतिहास और संस्कृति है। यह भी किसी न किसी बहाने चर्चा में बना ही रहता है।

वर्ष 2004 में एक अनूठा प्रयोग नासा के अंतरिक्ष यात्री एडवर्ड माइकल फिंक ने भी किया था। फिंक जब अंतरिक्ष से धरती पर लौटे, तो उन्होंने असम के सीएम को वो भाग्यशाली गमछा बतौर सम्मान हवाले किया था, जिसे वे अपने संग ब्रह्मांड के भ्रमण पर ले गए थे। यह सौभाग्यशाली गमछा इन दिनों असम के एक संग्रहालय की शोभा बढ़ा रहा है। यह गमछा इस वजह से भी गर्व का विषय है, क्योंकि इस पर सभी छह सह अंतरिक्ष यात्रियों के साथ सुनीता विलियम्स के भी दस्तखत हैं।

वर्ष 2018 में सात बार लिम्का बुक ऑफ रिकार्ड में अपना नाम दर्ज करा चुके, नरेश चंद्र माथुर ने 'हैंडलूम डे' के मौके पर ए फोर साइज का एक अनोखा कैलेंडेर/पुस्तक जारी/विमोचन किया था। इसका नाम उन्होंने 'ग्लैमर ऑफ गमछा' रखा था। इसमें गमछे का इतिहास, निर्माण, उसके प्रकार और रंगों की विस्तृत जानकारी दी गई है। उनका उद्देश्य हैंडलूम उत्पाद के महत्व, हेरिटेज व संस्कृति को जन-जन तक पहुंचाना है। कैलेंडर में संत कबीर और महात्मा गांधी की तस्वीर के अलावा 18 वर्षीय हीमा दास की गमछे के साथ तस्वीर है।

अभी कुछ दिन पहले समाचार पत्रों में यह खबर प्रकाशित हुई थी कि 'दिल्ली के कनॉट पैलेस के जिस होटल में गमछे की वजह से बिहार के युवा साहित्यकार नीलोत्पल मृणाल को प्रवेश से रोका गया, उसी होटल के वेटर अब गमछा लेकर खाना परोस रहे हैं। होटल प्रबंधन के निर्देश पर यह पहल शुरू हुई है।' यह तब हुआ जब उक्त साहित्यकार ने अपनी पीड़ा सोशल मीडिया पर अभिव्यक्त की और लोगों ने उसके समर्थन में स्वतः स्फूर्त आन्दोलन शुरू कर दिया। तब भी 'गमछा' ही चर्चा के केंद्र में रहा था।

हालही में एक राज्य में सरकार का विरोध करने वाले का कहना था कि हम 'गमछा' लेकर प्रदर्शन कर रहे हैं 'जो हमारी संस्कृति और अस्तित्व के हमारे गौरव को दर्शाता है।''

...और अब गमछा फिर एक नई सोच और संस्कार के साथ वर्तमान परिपेक्ष्य में चर्चा में आया है। जब से यह कोरोना (COVID-19) खबरों में आना शुरू हुआ, तब से ही चिकित्सकों ने यह बताया कि कोई जरूरी नहीं कि मास्क ही लगाया जाए, साधारण गमछे से भी नाक-मुँह ढक कर बचा जा सकता है। लेकिन लोग मास्क पर ही अपना पूरा जोड़ डाले रहे। ऐसे में जब, अब बाजार में मास्क मिलना मुश्किल हो गया है, तब लोग एक बार फिर गमछे को याद कर इसकी माँग बढ़ा रहे हैं। ..और एक बार फिर 'गमछा' चर्चा में आ गया और इसकी महत्ता लोगों को समझ में आने लगी। वास्तव में बड़े काम की चीज है यह। कमाल का है ये गमछा भी...!

हमारी 'हिन्दी'

कुमारी रंजीता
सहायक कामाण्डेंट
ग्रुप केन्द्र केरिपुबल संबलपुर ओडिशा

कैसी है यह विडम्बना
जिसने सींचा भारत को
जिसकी खुशबु भारत में
उसकी ऐसी आलोचना
कैसी है यह विडम्बना

हिन्दी है हम ये सब जानें
फिर क्यूं अंग्रेजी को मानें
ना कर ऐसी अवमानना
कैसी है यह विडम्बना

तू भी हिन्दी हम भी हिन्दी
फिर कैसी आपस की रंजिश
पूरब-पश्चिम उत्तर-दक्षिण
कर चहुँ ओर उद्घोषणा
ना कर ऐसी आलोचना
कैसी है यह विडम्बना

सी.आर.पी.एफ.

देवेन्द्र कुमार पन्त
निरीक्षक/मंत्र0
कार्मिक, शाखा, महानिदेशालय

शौर्य और बलिदान का पर्याय है सीआरपीएफ
इस नये भारत का एक अध्याय है सीआरपीएफ।

पुलिस बलों के इतिहास को स्वर्णिम बनाती है सीआरपीएफ
हॉट स्प्रिंग और सरदार पोस्ट में इतिहास बनाती है सीआरपीएफ ।

पूर्वोत्तर राज्यों को अलगाववाद मुक्त कराती है सीआरपीएफ
पंजाब में आतंकवाद को जड़ से मिटाती है सीआरपीएफ।

नक्सलवाद की कमर को भी अब तोड़ चुकी है सीआरपीएफ
कश्मीर को आतंकवाद मुक्त करने का जज्बा रखती है सीआरपीएफ।

शौर्य और बलिदान के नित नये मापदण्ड बनाती है सीआरपीएफ
पदकों की तालिका में नित नये आयाम बनाती है सीआरपीएफ ।

संसद पर हमले को भी नाकाम करती है सीआरपीएफ
अपनी सर्वत्र सजगता का परिचय देती है सीआरपीएफ।

चुनावों की निष्पक्षता की एक उदाहरण है सीआरपीएफ
आपदा के प्रबन्धन की एक मिसाल है सीआरपीएफ।

अपने शहीदों को नित नमन करती है सीआरपीएफ
उनकी शौर्य और वीरता की गाथाएं कहती है सीआरपीएफ।

धर्मनिरपेक्ष भारत का द्योतक है सीआरपीएफ
एक राष्ट्र और श्रेष्ठ राष्ट्र का उद्घोषक है सीआरपीएफ।

जय हो, जय हो, भारत माँ की जय पुकारती सीआरपीएफ
इसी महान मंत्र के साथ राष्ट्र निर्माण के पथ पर अग्रसर है सीआरपीएफ।

बाल वृक्ष

निरीक्षक मंत्रा.- **राकेश कुमार गंगेले**
ग्रुप केन्द्र रायपुर

आज का मानव दानव क्यों है, काट रहा क्यों पेड़ों को।
गाय को चारा बचा नहीं है, बची ना पत्ती भेड़ों को।।
धूं-धूं करती धरती जलती, गरम हवा जोरों को चलती,
धरती पर पग धरे ना जाते, धूप सहन ना हो पाती।
हो रहा क्षरण भूमि का, ना बचा सहारा पेड़ों को,
गाय को चारा बचा नहीं है, बची ना पत्ती भेड़ों को।।

गाड़ी-फैक्ट्री धुक-धुक करती धुआँ उगलती जहरीला,
स्वच्छ हवा को दूषित करती, जीवन बना पथरीला।
ना धुआँ उड़ाओ मेरे प्यारो, होता कष्ट है पेड़ों को,
गाय को चारा बचा नहीं है, बची न पत्ती भेड़ों को।।

लिये कुल्हाड़ी मानव फिरता, पेड़ों की कर रहा कटाई,
रक्षक ही भक्षक बन बैठा, हरियाली की हुई सफाई।
पत्ता-पत्ता विनती करता, अब मत काटो पेड़ों को,
गाय को चारा बचा नहीं है, बची न पत्ती भेड़ों को।।

पर्यावरण बचाना है तो, पेड़ों को लहराना होगा,
हरे वृक्ष की हरियाली से, भू-आँचल को सजाना होगा।
जागृत कर दो जाकर अपने, सभी गाँव और खेड़ों को,
गाय को चारा बचा नहीं है, बची न पत्ती भेड़ों को।।

आओ मिल कर शपथ उठायें, बाल-वृक्ष हम पाँच लगायें,
नित एक लोटा नीर चढ़ायें, पाल-पोस कर बड़ा बनायें।
पेड़ों से धारा खूब सजायें, आंगन खेत और मेढ़ों को,
गाय को चारा बचा नहीं है, बची न पत्ती भेड़ों को।।

आओ मिल कर पेड़ लगायें, धारती का आंचल लहरायें,
हरी स्वच्छ दुनिया को सजायें, धानी चुनरिया फिर फहरायें।
हाथ जोड़ "राकेश" बिनती करता, सब लगाओ पेड़ों को,
गाय को चारा बचा नहीं है, बची न पत्ती भेड़ों को।।

मातृ भाषा

निरीक्षक/मं. डी.के. शर्मा
कोबरा सेक्टर मुख्य.

मैं जिस मिट्टी का हूँ, वह स्वाभिमान है मेरा
मातृ भाषा हिन्दी है और वतन हिन्दुस्तान है मेरा।।
वर्ष में एक बार हिंदी दिवस मनाते हो।
हिन्दी मातृ भाषा है हमारी यह नारा भी लगाते हो ।।

किन्तु अपने बच्चों को अंग्रेजी माध्यम स्कूल में पढ़ाते हो।
हिन्दी के नाम पर सभी को बेवकूफ क्यों बनाते हो।।
कहते हो हिन्दी हमारी मातृ भाषा है।
हिन्दी से ही देश की प्रगति और उन्नति की आशा है।।

बोलते हो आता है हमें हिन्दी पढ़ने और पढ़ाने में रस।
इसलिये वर्ष में मना लेते हैं एक दिन हिन्दी दिवस।।

मानसिकता इनकी कौन बदलेगा, इनको लव इंगलिश से है।
देशी खाना छोड़ दिया और प्यार भी इंगलिश डिश से है।।

मानसिकता सभी की ऐसी कहते हैं फ्यूचर बस इंगलिश से है।
हिन्दी का स्कोप ही कहाँ है, अब हिन्दी में कहाँ रस है।।

हिन्दी में अंग्रेजी शब्दों को मिलाकर।
हिन्दी को अपने तरीके से हिलाकर।।

कहते हो हिन्दी को विकास के पथ पर ले जायेंगे।
और नये-नये तरीके इजाद कर हर वर्ष हिन्दी दिवस मनायेंगे।।

डी.के. शर्मा कहता है, दोस्तों
जो माता-पिता गरीब हैं, हिन्दी उनके सबसे करीब है।।
वे ही अपने बच्चों को हिन्दी स्कूल में पढ़ाते हैं।
और हिन्दी भाषा का मान आगे बढ़ाते हैं।।

अंग्रेजी सभ्यता में चाचा अंकल, मामा अंकल और पिता डैड हो जाता है।
चाची आँटी और मामी आँटी तथा माता मम्मी बन जाता है।।

माता को मम्मी और पिता को डेड बताकर कहते हैं हम सभ्य हो गये।
माता को माँ और पिता को बापू कहने वाले सब असभ्य हो गये।।
सोचते हैं अंग्रेजी से वतन की गुलामी आसानी से मिल जायेगी।
और देश की संस्कृति और सभ्यता अपने आप ही बदल जायेगी।।

इसी भ्रम में लोग अंग्रेजी को अपना मान लेते हैं।
और हिन्दी को दूर रखकर, गौरव लाने की ठान लेते हैं।।

सोचते हैं, बच्चों को अंग्रेजी पढ़ाकर देश को सभ्य बना रहे हैं।
सच तो यह है कि देश की असली संस्कृति तो गरीब ही बचा रहे हैं।

जो अपने बच्चों को हिन्दी स्कूल में पढ़ा रहे हैं।
और अपने बच्चों को देश सेवा का पाठ पढ़ा रहे हैं।।

भाषा तो वो होती है दोस्तों, जो दिल से निकलती है।
उधार की भाषा से कभी जिन्दगी नहीं चलती है।।

कोई भी भाषा सीखना बुरा नहीं होता है।
परन्तु अपनी भाषा के बिना कोई भी देश पूरा नहीं होता है।।

अपनी भाषा से दिल का रिश्ता खास होता है।
और अपनी भाषा पर ही पूर्ण विश्वास होता है ।।

उधार की भाषा से मनुष्य रहता है पराधीन और विवश ।
इसलिये वर्ष में मनाते हैं हम एक दिन हिन्दी दिवस।।

इसलिये दोस्तों आज से ही प्रण लीजिये।
हिन्दी को कागजों में नहीं वास्तविकता में भी जगह दीजिये।।
और अपनी मातृ भाषा को दिल से अपना लीजिये ।।

जिन्दगी की सच्चाई

उप नि/रे-ओ-**विरेन्द्र कुमार**
234 वाहिनी (बेतार प्लाटून), बेतार वाहिनी

समय चला, पर कैसे चला,
!!पता ही नहीं चला!!
!!पता ही नहीं चला!!

जिन्दगी की आपाधापी में,
कब निकली उम्र हमारी
!!पता ही नहीं चला!!

तम्बू-टैंटो के बेतार केन्द्र से
शुरू हुआ था सफर अपना,
कब संगमरमर के बेतार केन्द्र तक आ गए,
!!पता ही नहीं चला!!

कागज कलम पर पढ़ने वाले संदेश,
कब फईल-फोल्डर तक आ गए ,
!! पता ही नहीं चला !!

मोर्से बजाते-बजाते थकते थे उस वक्त,
कब से हम इंट्रानेट/इंटरनेट चलाने लगे
!!पता ही नहीं चला!!

जिस मोर्से के माहिर थे कभी हम,
कब- चेंज होना शुरू हो गए
!!पता ही नहीं चला!!

कभी थी जिम्मेदारी हम पर बेतार की,
कब बेतार के लिए हुए जिम्मेदार हम,
!!पता ही नहीं चला!!

एक दौर था जब दिन में भी
बेखबर सो जाते थे ,
कब रातों की उड़ गई नींद,
!!पता ही नहीं चला!!

दर दर भटके थे नौकरी की खातिर ,
आज रिटायर भी हो चला मगर समय का ,
!!पता ही नहीं चला, पता ही नहीं चला!!

मेरा देश प्रेम

सउनि./मंत्र **मौ. शाहाबुद्दीन**
172 बटा. केरिपुबल गढ़वा (झारखण्ड)

प्यार हमें है देश से इतना
जितना माँ से करते हैं
देश के लिए जीते हैं
देश के लिए मरते हैं।

है घर हमारा सरहद ही
रक्षा उसकी करते हैं
रक्षा करना धर्म हमारा
मौत से हम नहीं डरते हैं।

दुश्मन से जब-जब खतरा हो
नरकलोक तक पीछा उसका करते हैं
प्राणों पर अगर आ जाये
संकोच नही हम करते हैं।

पहरा देते सरहद पर
हो शीतलहर या धूप प्रखर
हो सुबह शहर या शाम पहर
एक पल भी हम नहीं डरते हैं

प्यार हमें है देश से इतना
जितना माँ से करते हैं
देश के लिए हम जीते हैं
देश के लिए ही मरते हैं।

पापा पापा छोड़ दो पीना शराब

सिपाही जीडी **मुकेश चन्द्र गुप्ता**
185 बटालियन

पापा छोड़ दो पीना शराब
पापा पापा छोड़ दो पीना, अब ये शराब,
पीने से सेहत भी हो रही है, आपकी खराब,
उसी पैसे से लाकर मुझे, दे दो ना किताब,
पढूंगा लिखूंगा, बड़ा होकर मैं जीतूंगा खिताब,
तमन्ना करके पूरी मैं भी, बन जाऊँगा नवाब,
पापा पापा छोड़ दो पीना, अब ये शराब।

नशे से बिगड़ गई है, देखो घर की हालत,
हर जगह की झेलनी, पड़ रही है जलालत,
पूरी कर दो पापा, मेरे दिल की ये चाहत,
माँ के साथ मैं भी, कभी हो सकूँ ना आहत,
गड़बड़ हो रहा है पापा, घर का पूरा हिसाब,
पापा पापा छोड़ दो पीना, अब ये शराब।

पीने से होती है, घर-परिवार की बदनामी,
विपदा ऐसी आ सकती है घर में, जैसे सुनामी,
करनी पड़ेगी फिर मुझे, दूसरों की गुलामी,
नहीं मिलेगी फिर मुझे, कहीं भी सलामी,
पीने वालों को देखा है मैंने, होते सेहत खराब,
पापा पापा छोड़ दो पीना, अब ये शराब।

पीने की आदत से अगर, आपको कुछ हो गया,
लगेगा मुझे ऐसा फिर, सब कुछ मेरा खो गया,
ऐसी बातों को सोचकर, मैं लिखते ही रो गया,
देर रात हो चुकी है चिन्तित होकर सो गया,
फिर कैसे होगी पापा जी मेरा, पूरा हर ख्वाब?
पापा पापा छोड़ दो पीना, अब ये शराब।

महानिदेशालय के कार्यक्रम

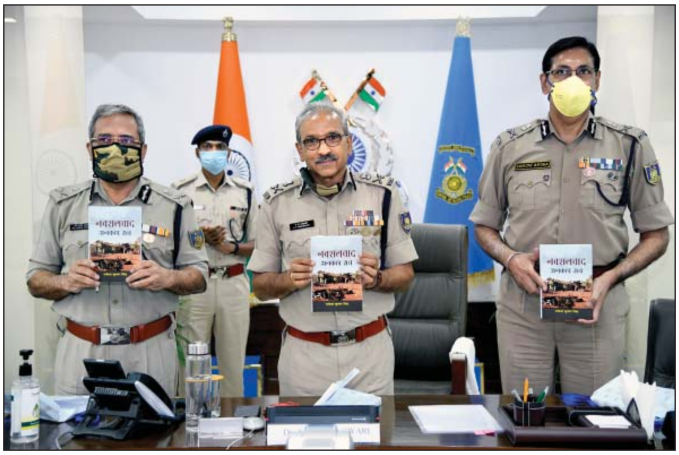

▲ दिनांक 10 जुलाई 2020 को 'नक्सलवाद अनकहा सच' पुस्तक का विमोचन करते बल के महानिदेशक डॉ. ए.पी. माहेश्वरी

▲ दिनांक 10 जुलाई 2020 को विडियो कॉंफ्रेन्स के दौरान अधिकारियों को संबोधित करते हुए बल के महानिदेशक डॉ. ए.पी. माहेश्वरी

▲ दिनांक 17 जुलाई 2020 को मिडिया कर्मी को साक्षातकार देते हुए एवं उनकी टीम के साथ वार्ता करते बल के महानिदेशक

▲ दिनांक 07 अगस्त को भारतीय स्टेट बैंक के अधिकारियों के साथ महानिरीक्षक (प्रशा.) की बैठक के उपरान्त सामूहिक फोटो

▲स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर सम्मान गारद से सलामी लेते हुए बल के महानिदेशक डॉ. ए.पी. माहेश्वरी

महानिदेशालय के कार्यक्रम

▲स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर उपस्थित अधिकारियों एवं जवानों को संबोधित एवं गारद को मिष्ठान वितरित करते बल के महानिदेशक डॉ. ए.पी. माहेश्वरी

▲दिनांक 19 अगस्त 2020 को महानिदेशालय में 'वृक्षारोपण एवं जल संरक्षण' विषय पर आयोजित वेबिनार के माध्यम से व्याख्यान के लिए पधारी पद्मश्री डॉ . सुनीता नरेन, भारतीय पर्यावरणविद, बल के महानिदेशक डॉ. ए.पी. माहेश्वरी से चर्चा करते हुए एवं तदोपरांत महानिदेशक द्वारा स्मृति चिन्ह भेंट करते हुए

▲दिनांक 20 अगस्त 2020 को सद्भावना दिवस के अवसर पर बल के महानिदेशक शपथ दिलाते हुए

▲ दिनांक 24 अगस्त 2020 को 'खेलो इंडिया' की पूर्व तैयारी पर वेबिनार के दौरान बल के महानिदेशक डॉ. ए.पी. माहेश्वरी

विविध कार्यक्रम

▲ 32 बटालियन द्वारा अयोजित सिविक एक्शन प्रोग्राम

▲ 237 बटालियन द्वारा सिविक एक्शन प्रोग्राम के तहत जरूरतमन्द लोगों को कोरोना से बचाव के आवश्यक सामग्री का वितरण करते हुए

▲ 4 सिग्नल बटालियन द्वारा वृहद वृक्षारोपण अभियान

▲ 232 (महिला) बटालियन द्वारा वृक्षारोपण अभियान

▲ सीआईएटी सिलचर द्वारा वृक्षारोपण अभियान के दौरान स्थानीय नागरिकों के साथ पौधारोपण करते हुए

▲ ग्रुप केन्द्र, अमेठी द्वारा वृक्षारोपण अभियान

विविध कार्यक्रम

▲ प्रथम सिग्नल बटालियन द्वारा सिविक एक्शन प्रोग्राम के तहत जरूरतमन्द लोगों को राशन सामग्री वितरण

▲ 36 बटालियन द्वारा सिविक एक्शन प्रोग्राम के तहत जरूरतमन्द लोगों को कोरोना से बचाव की आवश्यक सामग्री का वितरण करते हुए

▲ 99 बटालियन द्वारा स्थानीय लोगों को कोरोना से बचाव की आवश्यक सामग्री का वितरण करते व मकानों को सेनिटाइज करते हुए

▲ 114 बटालियन द्वारा सिविक एक्शन प्रोग्राम के तहत जरूरतमन्द लोगों को राशन सामग्री वितरण

▲ ग्रुप केन्द्र, सोनीपत द्वारा सिविक एक्शन प्रोग्राम के तहत जरूरतमन्द लोगों को भोजन वितरण

उपलब्धियाँ

परिचालन शाखा

जम्मू व कश्मीर

02/07/2020

श्री नरेन्दर यादव , द्वि.कमा.अधि. (घाटी की क्यूएटी) के नेतृत्व में 118 बटालियन की टुकड़ियां और राज्य पुलिस (एसओजी) के साथ नाकाबंदी और तलाशी अभियान चलाया गया। तलाशी अभियान के दौरान सुरक्षाबल की टुकड़ियों और आतंकवादियों के बीच मुठभेड़ हुई। मुठभेड़ के दौरान 118 बटालियन के बल संख्या 015193539 हवलदार/जीडी कुलदीप ओरांव घायल हो गए जिन्हें तुरंत 92 बेस अस्पताल पहुंचाया गया लेकिन कार्मिक वीरगति को प्राप्त हुए। मुठभेड़ के बाद घटना स्थल की तलाशी करने पर एक अज्ञात उग्रवादी का शव, ऐके 47 रायफल, 03 मैगजीन एवं जिंदा कारतूस बरामद हुई। मुठभेड़ के दौरान 7.76×39 एमएम की 446 गोलियां चली । बरामद सामग्री एवं शव को स्थानीय पुलिस को सुपुर्द कर दिया गया ।

04/07/2020

श्री गौरव सिंह, कमाण्डेंट-18 बटालियन एवं श्री मयंक तिवारी, द्वि.कमा.अधि. के नेतृत्व में केरिपुबल की टुकड़ियां, 34 आरआर तथा राज्य पुलिस ने नाकाबंदी और तलाशी अभियान चलाया। ऑपरेशन के दौरान आतंकवादी ने ग्रेनेड से अंधाधुंध फायरिंग शुरू कर दी। मुठभेड़ के दौरान 02 आतंकवादी मारे गए जिनकी पहचान हिलाल अहमद मलिस ('सी' कैटेगरी हिजबुल मुजाहिद्दीन का उग्रवादी जो कुलगाम, जम्मू व कश्मीर) तथा अली भाई उर्फ हैदर ('ए' केटेगरी जैश-ए-मोहम्मद उग्रवादी, निवासी पाकिस्तान) के रूप में पहचान की गई। मौका ए वारदात से निम्नलिखित सामग्री की बरामदगी हुई:- ऐके 56 रायफल-01, पिस्तौल-9 एमएम), ऐके मैगजीन-5, 05 एपीआई राउंड-60, चीनी ग्रेनेड-01, पोच-1 तथा गन पाउडर। इस वारदात में 34 आरआर के 03 जवान मामूली रूप से घायल हुए। बरामद सामग्री स्थानीय पुलिस को सुपुर्द कर दी गई एवं प्राथमिकी दर्ज कराई गई।

07/07/2020

श्री विनोद कुमार राव, सहायक कमाण्डेंट, 183 बटालियन के नेतृत्व में 53 आरआर एवं राज्य पुलिस की एसओजी के साथ मिलकर संयुक्त नाकाबंदी एवं तलाशी अभियान चलाया गया। अभियान के दौरान मुठभेड़ में 53 आरआर का एक जवान शहीद हो गया एवं 02 बुरी तरह से जख्मी हो गए। मुठभेड़ के उपरांत निम्नलिखित बरामदी हुई:- मारे गए आतंकवादी-1, ऐके 47 रायफल-1, तीन मैगजीन सहित। ऑपरेशन के दौरान पत्थरबाजी भी हुई। स्थिति को नियंत्रित करने के लिए फोर्स ने निम्नलिखित गोला-बारूद का प्रयोग किया:- पीएजी कार्ट शॉट नं0 09-21 एसआरएसएन चिल्लीपावा-16, लॉन्ग रेंज सॉफ्ट नोस चिल्ली-06, शॉर्ट रेंज सेल सॉफ्ट नोस-5, एलआरएसएन पी/बी-10, स्टन शेल-01, एलआरएसएन चिल्ली पावा-16 शॉट रेंज पावा, इत्यादि । उक्त सभी सामग्रियों को स्थानीय पुलिस को सुपुर्द कर दिया गया। प्राथमिकी भी दर्ज कराई गई।

12/07/2020

श्री रवीश कुमार सिंह, कमाण्डेंट 179 बटालियन के नेतृत्व में 22 आरआर एवं राज्य पुलिस ने नाकाबंदी एंव तलाशी अभियान चलाया। छिपे हुए आंतकवादियों ने अंधाधुंध गोलियां चलाना शुरु कर दिया । मुठभेड़ के दौरान टुकड़ियों ने बहादुरीपूर्वक मुकाबला किया जिसमें 03 अज्ञात आतंकवादी मारे गए और निम्नलिखित

सामग्री की बरामदगी हुई :-03 मारे गए आतंकवादियों का शव, ऐके 47 रायफल-3, ऐके मैगजीन-09, जिंदा कारतूस-139 इत्यादि । बरामद सामान स्थानीय पुलिस को सुपुर्द कर दी गई एंव प्राथमिकी दर्ज कराई गई ।

13/07/2020

श्री टी.एल. हयकीप, सहायक कमाण्डेंट 116 बटा. के नेतृत्व में 3 आरआर, एसओजी एवं राज्य पुलिस के साथ मिलकर संयुक्त नाकाबंदी एवं तलाशी अभियान चलाया गया। इस मुठभेड़ में 02 आतंकवादी मारे गए। 1 जाहिद अहमद खानडे (पुत्र तारीक अहमद खानडे निवासी-हुगम श्रीगुफवारा) (लश्करे-तोयबा) तथा एक एफटी । निम्नलिखित सामान की बरामदगी हुई। एके 47-1, जिंदा कारतूस-19, चीनी ग्रेनेड-01, मैगजीन-2 इत्यादि । बरामद सामान राज्य पुलिस को सुपुर्द कर दिया गया । मुठभेड़ में एक सिविलियन महिला अरीफा (पुत्री गुलाम मोहम्मद निवासी विददे, 28 वर्ष) घायल हो गई ।

17/07/2020

श्री गौरव सिंह, कमाण्डेंट 18 बटालियन के नेतृत्व में 9 आरआर तथा एसओजी ने तलाशी अभियान चलाया। मुठभेड़ के दौरान 03 आंतकवादी 1. वहीद उर्फ नुमन उर्फ अबु बकर उर्फ अबु माविश केटेगरी 'ए' पाकिस्तान, राउफ अहमद डार (सुपुत्र अब्दुल हमीद डार) अवहत्तो पुलिस स्टेशन -कुलगाम जिला-कुलगाम, केटेगरी 'बी' तथा रईस अहमद नायक (सुपुत्र अली मो0 नायक केटेगरी 'सी') चिम्मर थाना-डी.एच.पोरा, जिला-कुलगाम (जम्मू व कश्मीर) केटेगरी 'सी' मारे गए। निम्नलिखित सामानों की बरामदगी हुई:- ऐके 47-01, यूबीजीएल-01 रायफल-एम4-01, गोलियां- एम 4 '19, यूबीजीएल ग्रेनेड-04। 03 सेना के जवान घायल हो गए।

18/07/2020

श्री हरिशंकर शुक्ला, सहायक कमाण्डेंट 14 बटा. के नेतृत्व में 62 आरआर और एसओजी के साथ मिलकर नाकाबंदी एवं तलाशी अभियान चलाया गया। मुठभेड़ के दौरान 03 आंतकवादी मारे गए एवं 02 पिस्तौल तथा कुछ विस्फोटक सामग्री की बरामदगी हुई। मुठभेड़ के दौरान पत्थरबाजी से फोर्स के जवान घायल हो गए। भीड़ को तितर-बितर करने के लिए पीएजी शॉट नं.9-04, प्लास्टिक टीएस शेल ओसी-18 नग, स्टेन शेल नॉरमल-6, स्टेन ग्रेनेड-05 का प्रयोग हुआ ।

25/07/2020

श्री एस.पी. उनियाल, द्वि.कमा, अधि. के नेतृत्व में केरिपुबल 29 बटा., 44 बटा., 117 बटा. की नफरी, 29 आर आर एवं एसओजी के साथ, कार्गो, राज्य पुलिस के साथ मिलकर संयुक्त नाकाबंदी एवं तलाशी अभियान चलाया गया। मुठभेड़ के दौरान लश्करे तोयबा के ऐजाज अहमद भट पुत्र अली भट निवासी लारीबल, थाना-काकापोरा, जिला-पुलवामा और इशफाक रशीद खान उर्फ अबु मुसैब सुपुत्र अब्दुल रशीद खान निवासी सोजेथ श्रीनगर को मार गिराया गया। निम्नलिखित सामग्री की बरामदगी हुई। ऐके 56-01 एवं 2 मैगजीन तथा जिंदा कारतूस, 01 चीनी पिस्तौल मैगजीन सहित । मारे गए आंतकवादी के शव एंव सामान स्थानीय पुलिस को सुर्पुद कर दिया गया ।

एलडब्लुई क्षेत्र

ओडिशा

दिनांक 22/07/2020 को ग्रे हाउंड्स के पर्यवेक्षण में 198 बटा0/केन्द्रीय सशस्त्र पुलिस बल की टुकड़ियों ने विशेष अभियान चलाया। ऑपरेशन के दौरान एक माओवादी दालम सदस्य (गाँव-वक्कापल्ली, जी मेडुगूला, जिला-विशाखापत्तनम) मारा गया तथा .303 रायफल-01, पिस्तौल-1, .303 गोलियां-40 बरामद हुई। इस घटना में बल संख्या 115.45862 सिपाही/जीडी पी.के शामिल थे ।

क्षति

01/07/2020

श्री जोहन बेस, सहायक कमाण्डेंट (179 बटा0) ने जम्मू व कश्मीर पुलिस के साथ मिलकर नवापुरा, थाना-सोपोर, जिला

बारामुला में नाका लगायी। इस दौरान अज्ञात आतंकवादियों ने सैन्य टुकड़ियों पर अंधाधुंध गोलीबारी शुरू कर दी। गोलीबारी के दौरान 179 केरिपुबल के 05 जवान गंभीर रूप से घायल हो गए। उन्हें तुरंत 92 बेस अस्पताल पहुंचाया गया। बल संख्या 031503039 हवलदार/जीडी दीप चन्द वर्मा वीरगति को प्राप्त हुए। घायल कार्मिकों का विवरण निम्न प्रकार से है :-1. 031445842 हव0/जीडी दीपक कैलाश पाटील 2. 055214758 सिपाही/जीडी निलेश छावरे 3. 145120289 सि0/जीडी0 भोया राजेश भाई 4.115124306 सि0/चालक ईश्वर 5. मुठभेड़ के उपरांत तलाशी करने पर ऐके मैग-2, जिंदा कारतूस-30, खाली खोखा-50 नग। इस घटना में आंतकवादियों द्वारा किये जा रहे गोलीबारी के बीच में 01 सिविलियन बसीर अहमद खाण्ड, श्रीनगर, बीच में आ जाने के कारण मौत हो गई। 01 आर्म्स एंव 03 सरकारी वाहन भी क्षतिग्रस्त हो गया। बरामद सामान स्थानीय पुलिस को सुपुर्द कर दी गई एवं प्राथमिकी भी दर्ज कराई गई।

02/07/2020

श्री नरेन्दर यादव, द्वि.कमा.अधि. (घाटी क्यूएटी) के नेतृत्व में एसओजी के साथ मिलकर नाकाबंदी एवं तलाशी अभियान चलाया। तलाशी के दौरान छिपे हुए आतंकवादियों ने बल की टुकड़ी पर अंधाधुंध फायरिंग शुरु कर दी। इस ऑपरेशन में 118 बटालियन के बल संख्या 015193539 हव./जीडी. कुलदीप ओरांव बुरी तरह से जख्मी हो गए जिन्हें तुरंत 92 बेस अस्पताल पहुंचाया गया लेकिन वे वीरगति को प्राप्त हुए। मुठभेड़ के उपरांत तलाशी करने पर निम्नलिखित सामानों की बरामदगी हुई :-01 अज्ञात आतंकवादी का शव, ऐके 47 रायफल-01, मैगजीन 3 इत्यादि। आतंकवादियों को नाकाम करने के लिए फोर्स ने 446 रांउड गोलियां चलायी। बरामद सामान राज्य पुलिस को सुपुर्द कर दिया गया एवं प्राथमिकी दर्ज करा दी गई।

12/08/2020

श्री विनोद कुमार राव, सहायक कमाण्डेंट, (183 बटा.) 53 आरआर तथा एसओजी, जेकेपी के साथ मिलकर एम्बुश लगाया गया। इस मुठभेड़ के दौरान मारे गए आतंकवादी आजाद अहमद लोन पुत्र मोहम्मद अबदुल्लाह लोन, निवासी लेयरेज, थाना-काकापोरा, जिला-पुलवामा, हिजबुल मुजाहीद्दीन, कैटेगरी-'सी' तथा ऐके सीरीज रायफल-01, 15 जिंदा कारतूस, तीन मैगजीन, हैंड ग्रेनेड-01 आदि की बरामदगी हुई। मुठभेड़ में 53 आर्म्ड रेजिमेंट का एक सिपाही वीरगति को प्राप्त हुए। बरामद सामान को राज्य पुलिस को सुपुर्द कर दिया गया।

17/08/2020

सुरेन्द्र बहादुर (176 बटा0) ने राज्य पुलिस के साथ मिलकर कानून व व्यवस्था की पिकेट ड्यूटी की। ड्यूटी के दौरान अज्ञात आंतकवादी ने टुकड़ियों पर गोलियों की बौछार कर दी। इस मुठभेड़ में केरिपुबल के 02 जवान बल संख्या 015203926 सिपाही/चालक खुर्शीद खान तथा बल संख्या 145025092 सिपाही/जीडी शर्मा लवकुश सुदर्शन एफ/119 बटा. तथा एसपीओ मुजफ्फर (राज्य पुलिस) वीरगति को प्राप्त हुए। इस अभियान में 01 आंतकवादी को मार गिराया गया। घटना की सूचना मिलते ही रेंज क्यूएटी, एसओजी पाटटन, क्रीरी, 29 आरआर, 10 सेक्टर आरआर, आईजी केओएस, डीआईजी नार्थ कश्मीर ऑप्स रेंज तुंरत घटनास्थल पर पहुंचे और अभियान में शामिल हुए। इस अभियान में लश्करे-तोयबा के 03 आंतकवादी मार गिराये गये जिनकी पहचान 1 अनैतुल्लाह मीर पुत्र मुस्ताक अहमद मीर, निवासी अंडरगाम 2. साजाद निवासी बराथकालान, सोपोर (उत्तरी कश्मीर के शीर्ष कमांडर, केटेगरी-ए) 3. उस्मान (उत्तरी कश्मीर के शीर्ष कमांडर, केटेगरी-ए) तथा एके रायफल-2, पिस्तौल-3, हैंड ग्रेनेड-1 एवं 69 राउंड की बरामदगी हुई। इस मुठभेड़ में 29 आरआर के 2 सिपाही शहीद हो गए तथा एक सिपाही बुरी तरह से जख्मी हो गए। अभियान में एके 47 की 183 राउंड एवं इनसास की 50 राउंड का प्रयोग किया गया। वाहन संख्या एएस 01-जेसी 0719 तथा एके इनसास रायफल क्षतिग्रस्त हो गई। बरामद सामान राज्य पुलिस को सुपुर्द कर दी गई और प्राथमिकी दर्ज कराई गई ।

19/08/2020

श्री एस.के.सिंह, उप कमा0 (178 बटा.) के नेतृत्व में 44

आरआर, एसओजी इमाम साहिब तथा राज्य पुलिस के साथ मिलकर नाकाबंदी एवं तलाशी अभियान चलाया गया। मुठभेड़ के दौरान 01 आंतकवादी तालिब हुसैन मीर पुत्र अंसर अहमद मीर निवासी मोहलीपोरा, थाना/जिला- कुलगाम को मार गिराया गया। यूबीजीएल, एके 47-1, चीनी पिस्तौल-1, यूजीबीएल ग्रेनेड-6, चीनी हैंड ग्रेनेड-4 की बरामदगी हुई। मारे गए आतंकवादी का शव एवं सामान स्थानीय पुलिस को सुपुर्द कर दिया गया।

19/08/2020

श्री हरेन्द्र कुमार वर्मा, सहायक कमाण्डेंट (92 बटा.) 32 आरआर, एसओजी करालगुन्ड एंव राज्य पुलिस के साथ मिलकर नाकाबंदी एवं तलाशी अभियान चलाया। इसी बीच टुकड़ियों एवं आतंकवादियों के बीच मुठभेड़ हुई। मुठभेड़ उपरांत तलाशी के दौरान 02 मारे गए आतंकवादी नसीर उद्दीन लोन उर्फ अबु साद पुत्र गुलाम मोहम्मद लोन निवासी तानत्रे पोरा, गुन्ड बराह, सोपोर तथा संदिग्ध विदेशी आतंकवादी जो पाकिस्तान का निवासी हो सकता है एवं एके 47-10 नग, भारतीय मुद्रा, मोबाईल आदि की बरामदगी हुई। बरामद सामान राज्य पुलिस को सुपुर्द कर दिया गया एंव प्राथमिकी दर्ज कराई गई।

22/08/2020

श्री डी.एन. श्रीवास्तव, सहायक कमाण्डेंट (176 बटा.) के नेतृत्व में एसओजी क्रीरी और 52 आरआर ने मिलकर नाकाबंदी एवं तलाशी अभियान चलाया गया। मुठभेड़ में 01 आंतकवादी को मार गिराया गया। मारे गए आतंकवादी लश्करे तोयबा का सदस्य था जिसका नाम अनीस उर्फ छोटरा सुल्तान था। मुठभेड़ के उपरांत एके 47-1 तथा 05 मैगजीन की बरामदगी हुई। मारे गए आतंकवादी का शव एवं बरामद सामान राज्य पुलिस को सुपुर्द कर दिया गया एवं प्राथमिकी दर्ज कराई गई।

28/08/2020

श्री संजीव कुमार, उप कमा0 (178 बटा.), 44 आरआर, एसओजी-इमाम साहिब के साथ मिलकर नाकाबंदी एवं तलाशी अभियान चलाया। तलाशी के दौरान मुठभेड़ हो गई। मुठभेड़ के दौरान 04 अज्ञात आतंकवादी तथा 01 आतंकवादी शोएब अहमद भट (पुत्र मो0 सफी भट निवासी छजसु बातापोरा मोहल्ला, अवंतीपुरा) ने आत्मसमर्पण किया। इस दौरान ऐके 47, 02 नग एवं पिस्तौल-03 नग की बरामदगी हुई। इस दौरान पत्थरबाजी हुई। इस पत्थरबाजी में बल के 07 जवान बल संख्या 9714202013 हवलदार/जीडी वीरेन्दर कुमार, 075136833 सिपाही/जीडी नाबाज्योति राय, 125192233 सिपाही/जीडी रवि कुमार, 125131705 सिपाही/जीडी अर्नाधान बोनिया, 135094974 सिपाही/जीडी भोजराज छेत्री, 175372972 सिपाही/जीडी मोहित सिंह तथा 175022169 सिपाही/जीडी गुड्डु कुमार घायल हो गए तथा 02 वाहन भी क्षतिग्रस्त हो गया।

29/08/2020

श्री अनिल तालकोत्र, उप कमा0 (183 बटा.) के नेतृत्व में 50 आर आर एसओजी, जेकेपी के साथ मिलकर नाकाबंदी एवं तलाशी अभियान चलाया गया। इस ऑपरेशन के दौरान मुठभेड़ हुई जिसमें 03 आंतकवादी अदिल हाफिज) 21 वर्ष, पुत्र हबीबुल्लाह हाफिज निवासी डालीपोरा, जिला-पुलवामा) आर्शिद अहडार) पुत्र हसन डार निवासी-डुदगाम, थाना रापोरा जिला-पुलवामा) तथा राउफ अहमद मीर (पुत्र मोहिउद्दीन मीर निवासी-मोचपोना, थाना एवं जिला- पुलवामा) को मार गिराया गया। 02 पिस्तौल, ऐके 47-1 नग एवं 03 मैगजीन की बरामदगी हुई। इस मुठभेड़ में आर्मी का एक जवान शहीद हो गया। बरामद सामान एवं मारे गए आतंकवादी के शव को स्थानीय पुलिस को सौंप दिया गया।

29/08/2020

श्री राजेश त्रिपाठी, द्वि.कमा.अधि. (61 बटा. एवं घाटी क्यूएटी) के नेतृत्व में 20 आर आर और एसओजी के साथ मिलकर नाकाबंदी एंव तलाशी अभियान चलाया। आतंकवादियों के साथ मुठभेड़ शुरू हो गई। मुठभेड़ में 03 आतंकवादी साकिब अहमद खन्डे (पुत्र बसीर अहमद खान्डे, पम्पोर), उमर तारीक भट (पुत्र तारीक अहमद भट, ड्रांगबल पम्पोर) एवं जुबैर अहमद शेख (पुत्र अब माजीद शेख, ड्रांगबल, पम्पोर) को मार गिराया गया

एवं ऐके 47-01, मैग्जीन 04 नग, राउंड-03 चीनी राउंड-5 की बरामदगी हुई। इस मुठभेड़ में 115 बटा. के बल संख्या 115342883 सिपाही/जीडी फेदा हुसैन डार (जोकि घाटी क्यूएटी में अटैच हैं) मामूली रूप से चोटिल हो गए। एसओजी का 01 जवान शहीद हो गया। बारामद सामान को स्थानीय पुलिस को सुपुर्द कर दिया गया।

एलडब्लुई क्षेत्र

05/08/2020

श्री पी.आर. मिश्रा, उप कमा. (85, 168, 229 बटा. की टीम) डीआरजी तथा राज्य पुलिस के साथ मिलकर संयुक्त अभियान चलाया। इस दौरान माओवादी एवं टुकड़ियों के बीच मुठभेड़ हो गई। मुठभेड़ के उपरांत तलाशी करने पर एक महिला नक्सली, 12 बोर गन-01, 12 बोर जिंदा कारतूस-4 डेटानेटर-3, माओवादी साहित्य-3, रेडियो सेट-1 आदि की बरामदगी हुई। बरामद सामान एवं शव स्थानीय पुलिस को सौंप दिया गया।

12/08/2020

श्री संजय कुमार, उप कमा. (223 बटा.) डीआरजी एवं राज्य पुलिस के साथ मिलकर संयुक्त अभियान चलाया। इस दौरान मुठभेड़ हुई। मुठभेड़ के उपरांत मारे गए 04 माओवादियों के शव एवं 303 रायफल-01, देशी निर्मित भरमार-3 नग तथा बड़े मात्रा में नक्सल साहित्य की बरामदगी हुई। शव एवं बरामद सामान राज्य पुलिस को सौंप दी गई।

क्षति

17/08/020

उप निरीक्षक सुरेन्द्र बहादुर के नेतृत्व में केरिपुबल की टुकड़ी राज्य पुलिस के साथ मिलकर कानून व व्यवस्था पिकेट ड्यूटी की। अज्ञात आंतकवादियों ने टुकड़ी पर अंधाधुंध फायरिंग किया। इस मुठभेड़ में केरिपुबल के 02 जवान बल संख्या 015203926 सिपाही/चालक खुर्शीद खान एवं बल संख्या 145025092 सिपाही/जीडी शर्मा लवकुश सुदर्शन-एफ/119 बटा के शहीद हो गए तथा एक एसपीओ मुजफ्फर (राज्य पुलिस) के भी शहीद हो गए। बरामद सामान स्थानीय पुलिस को सौंप दिया गया।

भर्ती शाखा

1. केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल में पारा मेडिकल स्टाफ के विभिन्न पदों पर भर्ती करने के लिए दिनांक 18/07/2020 को विज्ञापन प्रकाशित किया गया है। उम्मीदवारों से आवेदन दिनांक 20/07/2020 से ग्रुप केन्द्र, केरिपुबल, भोपाल (म.प्र.) में प्राप्त किये जा रहे हैं तथा आवेदन प्राप्त करने की अंतिम तिथि 31/08/2020 हैं। दिनांक 20/12/2020 को लिखित परीक्षा सम्पूर्ण भारत में 09 केन्द्रों पर कराई जाएगी।

2. केन्द्रीय रिज़र्व पुलिस बल में विशेषज्ञ चिकित्साधिकारी के रिक्त पदो को भरने के लिए 69 विशेषज्ञ चिकित्साधिकारी को 20 कम्पोजिट अस्पतालों में संविदा पर रखने के लिए दिनांक 14/09/2020 को 04 केन्द्रों पर वॉक-इन-इंटरव्यू कराने की प्रक्रिया चल रही है।

3. कम्पोजिट अस्पताल, केरिपुबल जम्मू के मोलीक्यूलर बायोलॉजी लैब में 01 माइक्रोबायोलॉजिस्ट, 01 सहायक माइक्रो- बायोलॉजिस्ट एवं 02 लैब टेक्निशियन को 06 माह के लिए संविदा पर रखने के लिए वॉक-इन-इंटरव्यू कराने की प्रक्रिया चल रही है।

4. कम्पोजिट अस्पताल, केरिपुबल बनतालाब में जम्मू एवं कश्मीर परिचालन थियेटर के लिए स्टॉफ नर्स-40, लैब टेक्नीशियन-05, फार्मासिस्ट-05, रेडियोग्राफर-02, नर्सिंग सहायक-10 एवं सफाई कर्मचारी-05 को 06 माह के लिए संविदा पर रखने के लिए दिनांक 17/08/20 से 20/08/20 तक वॉक-इन-इंटरव्यू कराने की प्रक्रिया चल रही है।

शहीदों को नमन

शहीद सिपाही/चालक
खुर्शीद खान
119 बटालियन
05.07.1979 से 17.08.2020

शहीद सिपाही
शर्मा लवकुश सुदर्शन
119 बटालियन
20.11.1993 से 17.08.2020

शहीद हवलदार/जीडी
दीप चन्द वर्मा
179 बटालियन
05.07.1979 से 17.08.2020

शहीद हवलदार/जीडी
कुलदीप ओरांव
118 बटालियन
20.11.1993 से 17.08.2020

सेवानिवृत्ति

श्री आर.पी पाण्डेय
महानिरीक्षक,
सेवानिवृत्तः 31 जुलाई 2020

उप निरीक्षक/जीडी
नेताई चन्द्र शील
सेवानिवृत्तः 31 जुलाई 2020

हवलदार/जीडी
राम फुल मीना
सेवानिवृत्तः 31 जुलाई 2020

प्रतिनियुक्ति

श्री महेश्वर दयाल, भा.पु.से.
महानिरीक्षक,
विभाग में नया आगमन (इन्डक्शन)

श्री पी.एस. रनपीसे, भा.पु.से.
महानिरीक्षक,
विभाग में नया आगमन (इन्डक्शन)

श्री दीपक रतन, भा.पु.से
महानिरीक्षक,
विभाग में नया आगमन (इन्डक्शन)

स्थानान्तरण

क्रसं.	ईरला नं.	अधिकारी का नाम	स्थानातंरण	
महानिरीक्षक के रूप में नियुक्ति				
01	12021	महेश्वरदयाल, भा.पु.से.	तमिलनाड : 97	31/07/2020 (अपराह्न)
02	12022	पी.एस. रनपीसे, भा.पु.से.	ओडिशा : 95	17/08/2020 (पूर्वाह्न)
03	..	दीपक रतन, भा.पु.से	उ0प्र0 : 97	
अपर महानिदेशक				
01	11741	अरुण कुमार शर्मा, भा.पु.से.	प्रशिक्षण महा0	कार्यालय विशेष महानिदेशक, पूर्वोत्तर जोन
02	11897	संजय चन्दर, भा.पु.से.	कार्यालय विशेष महानिदेशक, पूर्वोत्तर जोन	प्रशिक्षण महानिदेशालय
पुलिस महानिरीक्षक				
01	12021	महेश्वर दयाल, भा.पु.से.	विभाग में नया आगमन (इन्डक्शन)	झारखंड सेक्टर (टैक-लातेहार)
02	12022	पी.एस. रनपीसे, भा.पु.से.	विभाग में नया आगमन (इन्डक्शन)	जम्मू सेक्टर
03		दीपक रतन, भा.पु.से	विभाग में नया आगमन (इन्डक्शन)	ऑप्स कश्मीर
04	9874	राजू भार्गव, भा.पु.से.	पुनर्कार्यग्रहण	निर्माण महानिदेशालय
05	11384	राजेश कुमार, भा.पु.से.	ऑप्स कश्मीर	महानिदेशालय (समग्र नफरी) आगे उत्तरी सेक्टर के साथ रखा गया है।
07	11385	सुश्री चारू सिन्हा, भा.पु.से.	जम्मू सेक्टर	श्रीनगर सेक्टर
08	2222	संजय कौशिक	कार्यालय विशेष महानिदेशक, पूर्वोत्तर जोन	देहरादून सेक्टर
09	2495	आर.एन.एस. बहाद	त्रिपुरा सेक्टर	सीटीसी मुदखेड़
10	2517	राकेश कुमार यादव	सीटीसी मुदखेड़	कार्यालय विशेष महानिदेशक, जम्मू व कश्मीर जोन
पुलिस उप महानिरीक्षक				
01	2666	गोपाल लाल मीणा	कार्यालय उड़ीसा सेक्टर	कार्यालय राजस्थान सेक्टर

महानिदेशक की डिस्क एवं प्रशंसा पत्र

(जुलाई अगस्त 2020)

क्र.सं.	ईरला/ बल संख्या	पद नाम	नाम	कार्यालय	अभ्युक्ति
1	3560	कमाण्डेंट	देशराज	185 बटा.	स्वर्ण (परिचालन) 3 स्टार
2	6130	द्वि.क.अधि.	उमाकान्त	185 बटा.	स्वर्ण (परिचालन)
3	7156	उप कमा.	विनोद कुमार	185 बटा.	रजत (परिचालन)
4	107090014	निरी./जीडी	ओम प्रकाश कुमार	185 बटा.	स्वर्ण (परिचालन)
5	155340175	उनि/जीडी	दिलीप कुमार दास	185 बटा.	कांस्य (परिचालन)
6	041689165	सि./जीडी	जितेन्दर राय	185 बटा.	रजत (परिचालन)
7	075222915	सि./जीडी	संदीप सिंह	185 बटा.	कांस्य (परिचालन)
8	115261606	सि./जीडी	सोहनवीर सिंह	185 बटा.	कांस्य (परिचालन)
9	115134632	सि./जीडी	मणिराम बोरो	185 बटा.	कांस्य (परिचालन)
10	145220934	सि./जीडी	नीरज कुमार	185 बटा.	कांस्य (परिचालन)
11	031450399	निरी./जीडी	संजीव कुमार थपलियाल	130 बटा.	स्वर्ण (परिचालन) 2 स्टार
12	145053594	सि./जीडी	बसवाराज	130 बटा.	कांस्य (परिचालन)
13	6635	द्वि.क.अधि.	नरेन्द्र यादव	75 बटा.	रजत (परिचालन)
14	9789	सहा.कमा.	एल. इबोम्चा सिहं	29 बटा.	प्रशस्ति रॉल
15	9470	सहा.कमा.	अनिरूद्ध प्रताप सिंह	54 बटा.	स्वर्ण (परिचालन)
16	9653	सहा.कमा.	अमित कुमार	44 बटा.	स्वर्ण (परिचालन) 1 स्टार
17	145340814	उनि/जीडी	रामबोल कुमार	181 बटा.	रजत (परिचालन)
18	145183675	उनि/जीडी	सुनील कुमार	82 बटा.	स्वर्ण (परिचालन)
19	45267745	सउनि/जीडी	विवेक प्रकाश	117 बटा.	रजत (परिचालन)
20	951381188	हव./जीडी	हरगेन्द्र कुमार	73 बटा.	कांस्य (परिचालन)
21	991400484	हव./जीडी	बशिष्ट यादव	28 बटा.	कांस्य (परिचालन)
22	115063388	सि./जीडी	किशनपाल सिंह	23 बटा.	रजत (परिचालन)
23	115340104	सि./जीडी	राहुल सिंह	82 बटा.	स्वर्ण (परिचालन) 2 स्टार
24	115340274	सि./जीडी	साजाद अहमद लोन	29 बटा.	कांस्य (परिचालन)
25	115061251	सि./जीडी	सुशील कुमार रावत	49 बटा.	स्वर्ण (परिचालन) 1 स्टार
26	115134044	सि./जीडी	कनमणी राभा	118 बटा.	रजत (परिचालन)
27	125031737	सि./जीडी	वी. पुगेलेन्धी	35 बटा.	कांस्य (परिचालन)
28	175025436	सि./जीडी	अरूण कुमार	132 बटा.	कांस्य (परिचालन)
29	065320487	सि./जीडी	शिवनन्दन सिंह	82 बटा.	रजत (परिचालन)
30	105170457	सि./जीडी	पंकज कुमार चौधरी	161 बटा.	रजत (परिचालन)
31	085071064	सि./जीडी	अजय कुमार	28 बटा.	रजत (परिचालन)
32	105030148	सि./जीडी	गोबीराज एम	117 बटा.	कांस्य (परिचालन)
33	145122167	सि./जीडी	शिंगद संजय	54 बटा.	कांस्य (परिचालन)
34	105311013	सि./जीडी	गोपीनाथ बार	132 बटा.	कांस्य (परिचालन)
35	175370372	सि./चालक	रविकांत कुमार	161 बटा.	कांस्य (परिचालन)
36	155020803	सि./जीडी	विकास केसरी	28 बटा.	रजत (परिचालन)
37	केपीएस 045839	एस.पी.	ताहिर अशरु	जम्मू व कश्मीर पुलिस	रजत (परिचालन)
38	127945	डिप्टी एस.पी.	सुरीन्दर सिंह	जम्मू व कश्मीर पुलिस	कांस्य (परिचालन)
39	046130	निरीक्षक	साहिल सिंह चरक	जम्मू व कश्मीर पुलिस	कांस्य (परिचालन)
40	987572	निरीक्षक	राशिद मलिक	जम्मू व कश्मीर पुलिस	कांस्य (परिचालन)
41	973256	उप निरीक्षक	गुलजार हुसैन	जम्मू व कश्मीर पुलिस	कांस्य (परिचालन)
42	118729	उप निरीक्षक	जोनेश कुमार	जम्मू व कश्मीर पुलिस	कांस्य (परिचालन)
43	117741	सिपाही	अजय रैना	जम्मू व कश्मीर पुलिस	कांस्य (परिचालन)
44	3355	उप महानिरीक्षक	पी.सी. झा	पुलिस महानिरीक्षक (परिचालन) उत्तरी जम्मू	स्वर्ण (परिचालन) 1स्टार

क्र.सं.	ईरला/ बल संख्या	पद नाम	नाम	कार्यालय	अभ्युक्ति
45	4815	कमाण्डेंट	बी.पी. यादव	84 बटा.	स्वर्ण (परिचालन)
46	9652	सहा. कमा.	अजय मलिक	84 बटा.	कांस्य (परिचालन)
47	9961	सहा. कमा.	टेकचन्द	84 बटा.	कांस्य (परिचालन)
48	41621667	उप निरीक्षक	जगदीश चन्द	84 बटा.	कांस्य (परिचालन)
49	880060206	स.उ.नि./जीडी	बलकार सिंह	84 बटा.	कांस्य (परिचालन)
50	971442084	हव./जीडी	सुनील कुमार	84 बटा.	कांस्य (परिचालन)
51	991171013	हव./जीडी	रेकाल सिंह	84 बटा.	रजत (परिचालन)
52	991370996	हव./जीडी	धनेन्दर सिंह	84 बटा.	कांस्य (परिचालन)
53	005160184	हव./जीडी	जोगिन्दर पाल	84 बटा.	रजत (परिचालन)
54	025180385	सि./जीडी	सुभाष चन्द्रा	84 बटा.	रजत (परिचालन)
55	041725106	सि./जीडी	ब्रिजेश कुमार	84 बटा.	कांस्य (परिचालन)
56	045073629	सि./जीडी	करतार नाथ	84 बटा.	कांस्य (परिचालन)
57	055154952	सि./जीडी	लालमिनलेन ल्हौवुम	84 बटा.	कांस्य (परिचालन)
58	105205233	सि./जीडी	कृष्ण मुरारी कुमार	84 बटा.	कांस्य (परिचालन)
59	105205028	सि./जीडी	विजय कुमार पासवान	84 बटा.	कांस्य (परिचालन)
60	105205358	सि./जीडी	साहिलाश कुमार पाण्डेय	84 बटा.	कांस्य (परिचालन)
61	115320513	सि./जीडी	शक्ति कुमार प्रसाद	84 बटा.	स्वर्ण (परिचालन)
62	125232742	सि./जीडी	सुरेन्दर सिंह	84 बटा.	कांस्य (परिचालन)
63	125262525	सि./जीडी	परमजीत धामा	84 बटा.	कांस्य (परिचालन)
64	135231025	सि./जीडी	बिलाल अहमद लोन	84 बटा.	कांस्य (परिचालन)
65	175300765	सि./जीडी	राकेश चन्द्र पाण्डेय	84 बटा.	कांस्य (परिचालन)
66	175301682	सि./जीडी	प्रमोदा राम	84 बटा.	कांस्य (परिचालन)
67	131350119	सि./जीडी (महिला)	आरती खाकल	232 बटा.	कार्स्य (प्रशा.)
68	6700	उप कमाण्डेंट	संतोष कुमार पाल	आईटी विंग, महानिदेशालय	रजत (प्रशा.)
69	911590062	निरीक्षक(मंत्र.)	विनोद भास्करन	166 बटा. (आईटी, महा. में संलग्न)	कार्स्य (प्रशा.)
70	015263421	सउनि/मं.	सुरेन्द्र सिंह	आईटी विंग, महानिदेशालय	कार्स्य (प्रशा.)
71	850857572	निरीक्षक/आरओ	रॉयमोन के.टी.	1सिग्नल बटालियन (आईटी महानिदेशालय में सलंग्न)	कार्स्य (प्रशा.)
72	9653	सहा.कमा.	अमित कुमार	44 बटा.	स्वर्ण (परिचालन) 2 स्टार
73	145183586	उनि./जीडी	पंकज	82 बटा.	रजत (परिचालन)
74	991110744	हव./जीडी	अविलाख सिंह	28बटा.	कांस्य (परिचालन)
75	005020641	हव./जीडी	एस.के.त्रिपाठी	75 बटा.	रजत (परिचालन)
76	105170136	हव./आरओ	पंकज कुमार सिंह	5 सिगनल बटा.	कांस्य (परिचालन)
77	115063388	सि./जीडी	किशनपाल सिंह जादौन	23 बटा.	स्वर्ण (परिचालन)
78	145121678	सि./जीडी	भम्मर वसूर	21 बटा.	रजत (परिचालन)
79	115095904	सि./जीडी	भास्कर ज्योति देउरी	35 बटा.	कांस्य (परिचालन)
80	041587327	सि./जीडी	राजीव कुमार पुनिया	54 बटा.	रजत (परिचालन)
81	145313666	सि./जीडी	विवेक कुमार तिवारी	61 बटा.	कांस्य (परिचालन)
82	145082326	सि./जीडी	ललित मोहन जोशी	28 बटा.	रजत (परिचालन)
83	065346595	सि./जीडी	राणा जुल्फिकार अली	132 बटा.	स्वर्ण (परिचालन) 2 स्टार
84	105067944	सि./जीडी	किलेदार	23 बटा.	रजत (परिचालन)
85	140681837	सि./जीडी	संतोष कुमार	75 बटा.	कांस्य (परिचालन)
86	105201432	सि./जीडी	रंजन कुमार	161 बटा.	स्वर्ण (परिचालन) 2 स्टार
87	145318598	सि./जीडी	इब्रान अंसारी	21 बटा.	स्वर्ण (परिचालन) 1 स्टार
88	175020861	सि./जीडी	रितु राज	29 बटा.	कांस्य (परिचालन)
89	055124839	सि./जीडी	बारान्डा दिलीप कुमार डी.बी.	54 बटा.	स्वर्ण (परिचालन)
90	115134044	सि0/जीडी	कनमणि राभा	118 बटा.	स्वर्ण (परिचालन)
91	175300979	सि0/जीडी	संदीप	25 बटा.	कांस्य (परिचालन)
92	005221209	सि0/चालक	प्रमोद कुमार	35 बटा.	कांस्य (परिचालन)
93	035151191	सि0/चालक	वीरेन्दर सिंह	ग्रु.के. श्रीनगर	कांस्य (परिचालन)

क्र.सं.	ईरला/ बल संख्या	पद नाम	नाम	कार्यालय	अभ्युक्ति
94	861182427	स.उ.नि./जीडी	हरेकृष्णा दास	171 बटा.	कांस्य (परिचालन)
95	041664464	सि./जीडी	तीरथा नाथ हन्डीक्यू	171 बटा.	कांस्य (परिचालन)
96	156627	सिटी एस.पी.-हजरतबल	सुधांशु वर्मा	जम्मू व कश्मीर पुलिस	कांस्य (परिचालन)
97		पुलिस कमिश्नर	वी.सी.सज्जीयनार, भा.पु.से	साईबराबाद	कांस्य (प्रशा.)
98	7004	उप कमा.	बी.वेंकटरेड्डी	दक्षिणी सेक्टर मुख्यालय	रजत (प्रशा.)
99	110710037	निरीक्षक/जीडी	एम. श्रीधर	दक्षिणी सेक्टर मुख्यालय	कांस्य (प्रशा.)
100	025050214	हव./जीडी	राघवेन्द्र एच.डी.	आईआईएम पूणे	कांस्य (प्रशा.)
101	015150347	हव./जीडी	फारूख अहमद	02 बटा.	कांस्य (परिचालन)
102	4001	कमाण्डेंट	नदीम अहमद सामदानी	182 बटा.	स्वर्ण (परिचालन) 3 स्टार
103	8859	सहा.कमा.	वरूण शर्मा	182 बटा.	प्रशस्ति रॉल
104	005042057	हव./जीडी	बिजय कुमार बेहरा	182 बटा.	स्वर्ण (परिचालन) 1 स्टार
105	031414893	सि./जीडी	प्रोदीप दास	182 बटा.	स्वर्ण (परिचालन)
106	060650169	सि./जीडी	आबीद अली	182 बटा.	रजत (परिचालन)
107	110726167	सि./जीडी	अमलेश कुमार	182 बटा.	रजत (परिचालन)
108	135030493	सि./जीडी	के. मरियप्पन	182 बटा.	कांस्य (परिचालन)
109	4013	कमाण्डेंट	देवेन्द्र सिंह	183 बटा.	स्वर्ण (परिचालन) 3 स्टार
110	8423	सहा.कमा.	अभय कुमार सिंह	183 बटा.	रजत (परिचालन)
111	9232	सहा.कमा.	अखिलेश कुमार	183 बटा.	स्वर्ण (परिचालन)
112	8958	सहा.कमा.	विनोद कुमार राव	183 बटा.	रजत (परिचालन)
113	913286354	सउनि/जीडी	सत्य प्रकाश	183 बटा.	कांस्य (परिचालन)
114	5682	द्वि.कमा.अधि.	अपर्णा आर.एस.	241 बटा.	स्वर्ण (परिचालन)
115	6569	द्वि.कमा.अधि.	संदीप सिंह पंवार	241 बटा.	स्वर्ण (परिचालन)
116	11681	सहा.कमा.	संतोष शैली	241 बटा.	कांस्य (परिचालन)
117	041743532	उनि/जीडी	अंजन कुमार	241 बटा.	कांस्य (परिचालन)
118	172415563	सि0/जीडी (महिला)	प्रेटी शाह	241 बटा.	कांस्य (परिचालन)
119	172410052	सि0/जीडी	कावासी सुरेश	241 बटा.	कांस्य (परिचालन)
120	172412394	सि0/जीडी	अजय कुमार	241 बटा.	कांस्य (परिचालन)
121	4227	कमाण्डेंट	निशीत कुमार	159 बटा.	स्वर्ण (परिचालन) 2 स्टार
122	11273	सहा.कमा.	अवधेश कुमार	159 बटा.	कांस्य (परिचालन)
123	11671	सहा.कमा.	बिनोद कुमार	159 बटा.	कांस्य (परिचालन)
124	085197924	सि./जीडी	मनोज कुमार सिंह	159 बटा.	रजत (परिचालन)
125	060041529	सि./जीडी	रामू कुमार	159 बटा.	कांस्य (परिचालन)
126	4253	कमाण्डेंट	आर.डी. जिन्नी अनल	20 बटा.	कांस्य (परिचालन)
127	9946	सहा.कमा.	रोजश कुमार पाण्डेय	20 बटा.	कांस्य (परिचालन)
128	11173	सहा.कमा.	सुमित संजय सोरेन	20 बटा.	स्वर्ण (परिचालन)
129	097190204	निरीक्षक/जीडी	ध्रुबाजीत कोंवर	20 बटा.	कांस्य (परिचालन)
130	095241522	निरीक्षक/जीडी	केबराम हेरोजीत सिंह	20 बटा.	रजत (परिचालन)
131	015143808	हव./जीडी	भास्करा राव सुरारापु	20 बटा.	कांस्य (परिचालन)
132	105317218	सि./जीडी	कुमुद रंजन रॉय	20 बटा.	कांस्य (परिचालन)
133	4506	कमाण्डेंट	ओरेया रवि मन्द्रुमुन्डा	156 बटा.	कांस्य (परिचालन)
134	10472	सहा.कमा.	के.जैकब	156 बटा.	कांस्य (परिचालन)
135	971261374	हव./जीडी	भगवान त्रिपाठी	156बटा.	कांस्य (परिचालन)
136	041544789	सि./जीडी	जादब देबनाथ	156 बटा.	कांस्य (परिचालन)
137	111691848	सि./जीडी	गुरू चरण बासके	156 बटा.	कांस्य (परिचालन)
138	4498	कमाण्डेंट	सुरेन्दर कुमार	209 बटा.	स्वर्ण (परिचालन)
139	10075	सहा.कमा.	अरूण कुमार राणा	209 बटा.	कांस्य (परिचालन)
140	107200076	निरीक्षक/जीडी	भूपेन्द्र कुमार	209 बटा.	कांस्य (परिचालन)
141	110727903	उनि./जीडी	दीपक कुमार सिंह	209 बटा.	कांस्य (परिचालन)
142	065026849	हव./जीडी	सत्य देव यादव	209 बटा.	कांस्य (परिचालन)

क्र.सं.	ईरला/ बल संख्या	पद नाम	नाम	कार्यालय	अभ्युक्ति
143	095320216	सि./जीडी	जवाहर लाल सोनवानी	209 बटा.	कांस्य (परिचालन)
144	145043437	सि./जीडी	प्रदीप कुमार यादव	209 बटा.	कांस्य (परिचालन)
145	7035	उप कमा.	पंकज कुमार	201 बटा.	कांस्य (परिचालन)
146	961170518	हव./जीडी	अब्दुल हमीद	201 बटा.	कांस्य (परिचालन)
147	105183248	हव./जीडी	शैलेन्द्र कुमार सिंह	201 बटा.	कांस्य (परिचालन)
148	105040198	सि./जीडी	बी.बी. भोई	201बटा.	कांस्य (परिचालन)
149	110112337	सि./जीडी	रंजीत कुमार	201 बटा.	कांस्य (परिचालन)
150		लेप्रोस्कोपिक सर्जन	डॉ. नागुलन	जिला अस्पताल, बीजापुर (छ.ग.)	कास्य (प्रशा.)
151	1393248	हव./जीडी	रघुनन्दन सिंह	182 बटा.	रजत (परिचालन)
152	115343942	सि./जीडी	गुलशन सिंह	182 बटा.	रजत (परिचालन)
153	427 पीएल	सउनि/जीडी	साहा फैसल खान	एसओजी, जेकेपी, पुलवामा	कांस्य (परिचालन)
154	519	एसजीसीटी	अंकुश शर्मा	1आईआर बटा.	कांस्य (परिचालन)
155	172412747	सि./जीडी	अवलम लक्ष्मण	241 बटा.	कांस्य (परिचालन)
156	4233	कमाण्डेंट	एन. कुंजारानी देवी	सीएसजेडब्लुटी, बेलगाम	स्वर्ण (प्रशा.) 2 स्टार
157	7801	उप कमा.	प्रतिमा कुमारी	48 बटा.	रजत (प्रशा.)
158	8053	उप कमा.	सानाम चानु	126 बटा.	कांस्य (प्रशा.)
159	001374779	शहीद हव./जीडी	काले सुनील	182 बटा.	स्वर्ण (परिचालन) 1 स्टार
160	015193539	शहीद हव./जीडी	कुलदीप कुमार ओरांव	118 बटा.	कांस्य (परिचालन)
161	5285	द्वि.कमा.अधि.	मनीष कुमार भारती	214 बटा.	रजत (परिचालन)
162	913263914	सउनि/जीडी	नाडु बैठा	214 बटा.	कांस्य (परिचालन)
163	961291084	हव./जीडी	माधव सिंह यादव	214 बटा.	कांस्य (परिचालन)
164	105026964	सि./जीडी	ब्रिजेश यादव	214 बटा.	कांस्य (परिचालन)
165	5456	द्वि.कमा.अधि.	मुन्ना सिंह	190 बटा.	कांस्य (परिचालन)
166	085193143	उनि/जीडी	अभय कुमार	190 बटा.	कांस्य (परिचालन)
167	880979853	स.उ.नि./जीडी	जसबीर सिंह	190 बटा.	कांस्य (परिचालन)
168	175073743	सि./जीडी	साहिल पनसोत्रा	190 बटा.	कांस्य (परिचालन)
169	10120	सहा.कमा.	अमृत कुमार सिंह	231 बटा.	रजत (परिचालन)
170	005230797	हव./जीडी	सीताराम	231 बटा.	कांस्य (परिचालन)
171	8964	सहा.कमा.	नील कान्ता सिंह	230 बटा.	रजत (परिचालन)
172		एस.पी.	पटेल दिव्यांग कुमार लालजी भाई, भा.पु.से.	पुलिस अधीक्षक बीजापुर	कांस्य (परिचालन)
173			हल्ली (डॉग.)	203 कोबरा	कांस्य (परिचालन)
174	145081757	सि./जीडी	विकास कुमार	203 कोबरा	कांस्य (परिचालन)
175	115261856	हव./जीडी	प्रदीप कुमार	203 कोबरा	कांस्य (परिचालन)
176	115112486	सि./जीडी	सोनु कुमार	203 कोबरा	कांस्य (परिचालन)
177	8469	उप कमा.	ओम प्रकाश यादव	रेंज मुख्यालय पटना	रजत (परिचालन)
178	034040921	निरीक्षक/जीडी	बिजय कुमार ठाकुर	रेंज मुख्यालय पटना	प्रशस्ति रॉल
179	031444756	निरीक्षक/जीडी	बिनोद कुमार	159 बटा.	स्वर्ण (परिचालन) 1 स्टार
180	880981757	सउनि/जीडी	ब्रज प्रकाश	60 बटा.	कांस्य (परिचालन)
181	060871032	सि./जीडी	राजेश कुमार यादव	60 बटा.	कांस्य (परिचालन)
182	135152572	सि./जीडी	दिगन्ता प्रसाद रॉय	60 बटा.	कांस्य (परिचालन)
183	7580	उप कमा.	त्रिभुवन प्रताप सिंह	परिचालन महानिदेशालय	स्वर्ण (प्रशा.)1 स्टार
184	075280033	स.उ.नि./मंत्र.	जगदीश प्रसाद शर्मा	140 बटा. (परिचालन महानिदेशालय में संलग्न)	रजत (प्रशा.)
185	101520017	सउनि/मंत्र.	मनोज शर्मा	ग्रुपकेन्द्र-1अजमेर (परिचालन महानिदेशालय में संलग्न)	कांस्य (प्रशा.)
186	115111631	सि./जीडी	अनिल कुमार	परिचालन महानिदेशालय	रजत (प्रशा.)
187		निदेशक	सुभाष चन्दर	सेना सचिवालय	कांस्य (प्रशा.)
188	14849269एफ	हवलदार (क्लर्क)	राहुल अमीन मेहदी	525 एएससी बटा. (वर्तमान में नॉर्दन कमांड मुख्यालय, उधमपुर, जम्मू व कश्मीर में कार्यरत/तैनात)	कांस्य (प्रशा.)

स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर महानिदेशालय में ध्वजारोहन के दौरान
सलामी देते हुए बल के महानिदेशक, अधिकारी गण व जवान

बल के दिव्यांग शूरवीरों को कुशल बनाने के लिए 'एसओपी' का विमोचन करते
बल के महानिदेशक व अधिकारी गण

स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर वीरता पदक से अलंकृत शूरवीरों के साथ
बल के महानिदेशक डॉ ए.पी. माहेश्वरी एवं अन्य वरिष्ठ अधिकारी गण